इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

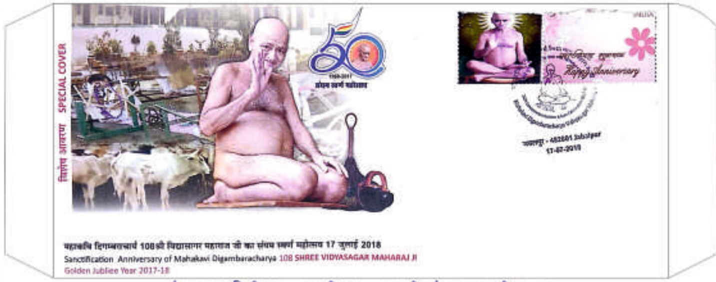

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		दिसम्बर 2024	
16	सोमवार	प्रतिपदा	आर्द्रा
17	मंगलवार	द्वितीया	पुनर्वसु
18	बुधवार	तृतीया	पुष्य
19	गुरुवार	चतुर्थी	आश्लेषा
20	शुक्रवार	पंचमी	मघा
21	शनिवार	षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी
22	रविवार	सप्तमी	उत्तराफाल्गुनी
23	सोमवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी
24	मंगलवार	नवमी	हस्त
25	बुधवार	दशमी	चित्रा
26	गुरुवार	एकादशी	स्वाती
27	शुक्रवार	द्वादशी	विशाखा
28	शनिवार	त्रयोदशी	अनुराधा
29	रविवार	चतुर्दशी	ज्येष्ठा
30	सोमवार	अमावस	मूल
31	मंगलवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ
		जनवरी 2025	
1	बुधवार	द्वितीया	उत्तराषाढ
2	गुरुवार	तृतीया	श्रवण
3	शुक्रवार	चतुर्थी	धनिष्ठा
4	शनिवार	पंचमी	शतभिषा
5	रविवार	षष्ठी	पूर्वाभाद्रपद
6	सोमवार	सप्तमी	उत्तराभाद्रपद
7	मंगलवार	अष्टमी	रेवती
8	बुधवार	नवमी	अश्विनी
9	गुरुवार	दशमी	भरणी
10	शुक्रवार	एकादशी/द्वादशी	कृत्तिका
11	शनिवार	त्रयोदशी	रोहिणी
12	रविवार	चतुर्दशी	मृगशिरा
13	सोमवार	पूर्णिमा	आर्द्रा
14	मंगलवार	प्रतिपदा	पुनर्वसु
15	बुधवार	द्वितीया	पुष्य

तीर्थंकर कल्याणक

17 दिसम्बर: भगवान मल्लिनाथ ज्ञान कल्याणक
26 दिसम्बर: भगवान चन्द्रप्रभ जन्म तप कल्याणक
26 दिसम्बर: भगवान पार्श्वनाथ जन्म तप कल्याणक
29 दिसम्बर: भगवान शीतलनाथ ज्ञान कल्याणक
09 जनवरी: भगवान शांतिनाथ ज्ञान कल्याणक
10 जनवरी: भगवान अजितनाथ ज्ञान कल्याणक
12 जनवरी: भगवान अभिनंदन ज्ञान कल्याणक
13 जनवरी: भगवान धर्मनाथ ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

11 जनवरी: रोहिणी व्रत
13 जनवरी: षोडशकारण व्रत प्रारंभ
14 जनवरी: देवदर्शन दिवस

सर्वार्थ सिद्धि

22 दिसम्बर: 06/54 बजे से 30/54 बजे तक ।
27 दिसम्बर: 20/28 बजे से 30/46 बजे तक ।
29 दिसम्बर: 23/22 बजे से 30/57 बजे तक ।
05 जनवरी: 20/18 बजे से 31/08 बजे तक ।
07 जनवरी: 17/50 बजे से 31/09 बजे तक ।
11 जनवरी: 07/09 बजे से 12/29 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: दिसम्बर-15,18,22,23,25 जनवरी-1,6
मशीनरी प्रारंभ: दिसम्बर-18,25 जनवरी- 15
वाहन खरीदने: दिसम्बर-18,26 जनवरी-15

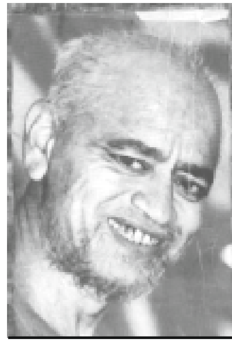

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 308 • दिसम्बर 2024
• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

• कलयुगी अजर अमर प्लास्टिक समझो उपयोग करो 08
• अष्टपाहुड ग्रंथ में दर्शन शब्द की मीमांसा 10
• आचार्य कुन्दकुन्द का काल निर्धारण एवं कृतियाँ 16
• प्राचीन ज्ञान परम्परा से हम बन सकते है विश्वगुरु 22
• आयुर्वेद से आरोग्य क्रांति 24
• बोतलबंदी पानी कितना अहिंसक 28
• राजगृह शिल्प में अष्ट मातृकाएँ 30
• कैसे क्या थे मूकमाटी रचयिता 33
• पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने वाले श्रावक सूची2024 46
• **वरिष्ठ नागरिक:** सुधारें अपना सामाजिक शिष्टाचार 56
• फेरम फास, स्वस्थ्य चलें हर सांस 58

बाल कहानी

• हत्यारा बेटा 62

कविता

• पुष्पदंत सुविधिनाथ स्तवन 14
• राम नाम प्यारा 21
• वामादेवी का दुलारा 29
• दुख पाते है 44
• तिमिर हर दृष्टि 55

कहानी

• मैं डर रहा हुँ 50

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 15
चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन :36 • माथा पच्ची : 37 • पुराण प्रेरणा : 38
• कैरियर गाइड : 39 • दुनिया भर की बातें : 40 • इसे भी जानिये: 44
•दिशा बोध : 45• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 56 • हास्य तरंग-पाककला : 60
• बाल संस्कार डेस्क : 61 • संस्कार गीत व बाल कविता : 62 • समाचार : 63

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर -9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✼ आंतरिक सज्जा ✼
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक -ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर में भक्ति तरंग के अंतर्गत **अमूल्य अवसर** शीर्षक वाला भजन पढ़ा। मनुष्य भव बहुत दुर्लभ है उसमें भी सत्संगति मिलना कठिन है और यदि सत्संगति मिल जाये, अरिहंत का भजन भी हो जाये तो यह बहुत बड़ी बात है। प्रस्तुत भजन में मन को वस्त्र की उपमा देते हुये भूधरदासजी कहते हैं कामादिक की मैल को उतारकर प्रभु प्रीति के फिटकरी से प्रभु स्मरण का रंग चोखा होता है। भक्ति कि महिमा बताते हुये भूधरदास जी कहते हैं यदि धन बढ़ा, परिग्रह भी बढ़ा, हाथी पर भी चढ़ गये और प्रभु का भजन ना किया तो धिक्कार है। संस्कार सागर में प्रतिमाह ऐसे भजनों का प्रकाशन होता है जो प्राचीन कविताओं के श्रेष्ठतम रचना का परिचय कराता है। एतदर्थ संपादक महोदय को धन्यवाद।

ब्र. राजेश टड़ा

• सम्पादक महोदय, विगत माह देश के प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा के निधन ने सबको यह सूचना दी कि मृत्यु पर कोई भी व्यक्ति धन के माध्यम से विजय प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन के साथ मृत्यु अटल सत्य है। रतन टाटा यद्यपि कई प्रकार के देश विदेश के सम्मानों को प्राप्त कर चुके थे और राष्ट्र के प्रति उनका और उनके परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है जिसे राष्ट्र सदैव उनके लिये याद करता रहेगा। परंतु अध्यात्मिक चिंतन रखने वाले लोग जीवन की क्षण भंगुरता को बखूबी समझेंगे तथा यह भी तय करेंगे कि मृत्यु के आगे सब असहाय हैं। अतः हमे अपना झूठा अहंकार कभी नहीं करना चाहिये।

अभिषेक जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर में प्रकाशित नई साड़ी कहानी को जब मैने पढ़ा तो मेरे जीवन में भी साड़ी का बोझ रहा है। परंतु मैं आज समझ पाई कि साड़ी परिग्रह है इन साड़ियों का व्यामोह प्रायः महिलायें छोड़ नहीं पाती हैं इसका कारण समझ पाना मुझे तो कठिन ही लगता है परंतु प्रस्तुत कहानी में यह बता दिया है कि यदि परिग्रह परिमाण कर दिया जाये तो साड़ी के मोह से छुटकारा मिल सकता है। कहानी की वस्तुस्थिति आकर्षक और गुंफित है। सुक्तियों का भी प्रयोग इस कहानी में किया गया है। कहानी के माध्यम से यह कहने का प्रयास किया गया है कि जीवन में आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ रखना धर्मविरोध ही है। सरल भाषा, सुबोध शैली और अलंकार की भरमार से मुक्त यह कहानी सबको अपनी ओर आकर्षित जरूर करेगी।

पुष्पा चौधरी, राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों अजरबेंजानी की राजधानी बाकू में कोप -29 का शिखर सम्मेलन में हर तरह से भारत की राजधानी दिल्ली की चर्चा हुई। हर प्रतिनिधि की जुबान पर दिल्ली का नाम था इसे भारत इज्जत नहीं बढ़ी बल्कि बदनामी हुई दिल्ली के दहशत नाक प्रदूषण का प्रभाव दिल्ली तक सीमित नहीं रहा इस प्रदूषण से दुनिया कांप उठी है। दिल्ली के प्रदूषण का स्तर सुनकर हर तरफ हाहाकार मच गई है।

69% परिवार सीधे-सीधे प्रदूषण की चपेट में आ गये इसका प्रभाव व्यापार और स्वास्थ्य दोनों पर विपरीत पड़ता है इस प्रदूषण रोकने के लिये शासन प्रशासन को तुष्टिकरण का रास्ता छोड़कर कठोर कदम उठाने होंगे अन्यथा यह सामान्य जनता के साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा।

अनीता जैन, अहमदाबाद

भक्ति तरंग
स्मरण कौन

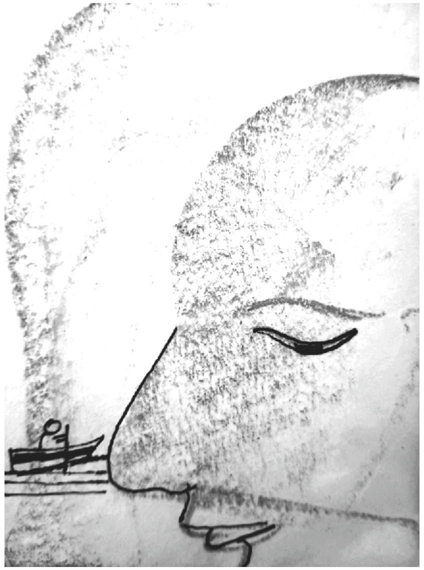

देखे री सखी ! खैर कहो नेमिकुमार ।।
नैननि प्यारे नाथ हमारे, प्रान जीवन के आधार
प्रिय वियोग विद्या वह पीरी, पीरी भई हल्दी उनहार ।
होउ हरी तबही जब भेटों, श्यामवरन सुन्दर भरतार ।।
विरह नदी असराल बहै उर, बूढ़त हों बामें निरधार ।
भूधर प्रभुपीय खेबटिया बिन, समरथ कौन उतारन हार ।।

राजुल अपनी सखी से अपने प्रिय नेमिकुमार के बारे में पुछती है- हे सखी ! क्या कहीं नेमिकुमार को देखा है ? नैनों को प्यारे लगने वाले वे हमारे स्वामी हमारे प्राण हैं, जीवन हैं, प्राणों के आधार हैं।

राजुल को प्रिय तम की वियोग-व्यथा अत्यंत पीड़ा दायक है, दुःखदायक है। उस वियोग में वह हल्दी के समान पीली पड़ गई है। श्याम वर्ण के सुन्दर प्रियतम से भेंट होने पर ही वह हरी हो सकती है अर्थात् तब ही वह प्रसन्नता पुनः लौट सकती है, प्राप्त हो सकती है।

विरह-विमोह की गहनता में, अथाह प्रवाह/ नदी में निराधार (यह आधारहीन) हृदय डूब रहा है, विकल हो रहा है। भूधरदास कहते हैं कि प्रभु प्रियतम के सिवा इस दुखसागर से पार उतारने मे अन्य कोई खेवटिया नहीं है, अन्य कोई समर्थ नहीं है।

संस्कार प्रवाह

इतिहास जबरदस्ती का

अंतरीक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति के संबंध में श्वेतांबरी विद्वान एक मत पर निश्चित नहीं आते हैं। वे अपने आपको इतिहास वेत्ता होने का दावा करते हैं। पर उनके मन स्वयं के द्वारा ही खंडित हो जाते हैं। श्वेतांबर साधुओं ने अंतरीक्ष पार्श्वनाथ के मूर्ति को खरदुषण द्वारा निर्मित बताया किंतु अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति को 11 लाख 80000 वर्ष प्राचीन बताने का प्रयास करते हैं। जबकि रामायण काल आज से करीब 9341 साल पूर्व आता है और खरदूषण रामायण काल का ही एक पात्र है। इससे यह सिद्ध होता है कि अंतरीक्ष पार्श्वनाथ भगवान 10000 वर्ष से प्राचीन नहीं हो सकते हैं। दूसरे इतिहास वेत्ता बनने का दावा करने वाले लोग अंतरिक्ष की मूर्ति को 84000 हजार वर्ष प्राचीन बताते हैं परंतु वे प्रमाणित इतिहास के तथ्य में बगलें झाकने लगते हैं। साथ ही अभी तक यह बात सिद्ध नहीं कर पाये कि मूर्ति का निर्माण कितने साल पहले हुआ परंतु आश्चर्य की बात यह है कि अपने आप को इतिहासवेत्ता होने का दावा करते हैं। इससे यह लगता है कि वे जबरदस्ती इतिहासवेत्ता बन रहे हैं।

श्वेतांबर लोग अंतरीक्ष पार्श्वनाथ मंदिर के निर्माण में और उनकी प्रतिष्ठा के काल में भी जबरदस्ती का तथ्य देने का प्रयास करते रहते हैं। वे कहते 1142 में आचार्य अभयदेव सूरी ने अंतरीक्ष पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा की थी। किंतु दिलचस्प बात ये है कि अभयदेव सूरी का स्वर्गवास गुजरात के खेडा जिला में कपलगंज नामक स्थान मे 1139 में हुआ था। इससे यह सिद्ध होता है कि वे मृत्यु के 3 वर्ष बाद भगवान अंतरीक्ष की प्रतिष्ठा करने कैसे आये। इसमें ऐसा लगता है कि जबरदस्ती के इतिहासकार बनकर लोग छलकपट करते हैं और समाज को गुमराह किया करते हैं। अंतरीक्ष पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति को तथाकथित श्वेतांबरी घोषित करके वे श्वेतांबर मत को प्राचीन सिद्ध करने में अपनी ताकत लगाते हैं किंतु वे भूल जाते है कि अभी तक किसी भी न्यायालय में अंतरीक्ष पार्श्वनाथ को श्वेतांबरी घोषित नहीं किया है। फिर भी जबरदस्ती के इतिहासकार बनकर श्वेतांबर मत को प्राचीन भगवान घोषित करने में अपनी ताकत झोक देते हैं। ऐसे बनावटी इतिहास से और इतिहासकारों से समाज को सावधान रखना चाहिये।

कलयुगी अजर अमर प्लास्टिक समझो उपयोग करो

❊ डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल ❊

विगत पचहत्तर वर्षों में प्लास्टिक ने हमारी जीवन शैली पर इतना अधिक प्रभाव डाला है कि हम जिसे उपयोगी समझते थे या हैं पर उनका अंत हमारे ईश्वरीय अवतार जैसा है जिसने जन्म लिया पर अमरत्व प्राप्त किया कभी न मरेगा। ऐसा नहीं है कि इसके उपयोग से कोई भी बचा है या रह सकता है क्योंकि यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है इसका उपयोग करना और इसके दुष्प्रभाव से सब परिचित हैं पर ऐसी क्या मजबूरी या कमजोरी जो इससे बच नहीं पा रहे हैं ?

गांव, कस्बा, शहर, महानगर और जल, नभ, थल भी इसके दुष्चक्र से निकल नही पा रहे हैं , इसका उपयोग नुकसानदायक नहीं होगा इसलिये हम आँख बंद कर उपयोग कर रहे हैं यह धीमा जहर है जैसे पहले विषकन्या तैयार की जाती थी वैसा ही हमारा समाज विषमय होकर विषाक्तता की ओर बढ़ रहा है जब तक अज्ञानी थे तब तक बहुत, जी भर उपयोग किया और कर रहे हैं, अब सब जगह से खतरे की घंटी बजने लगी तब अब चेतने का समय आ गया।

हमारी लाइफ में हर जगह प्लास्टिक की घुसपैठ है। सिर्फ किचन की बात करें तो नमक, घी, तेल, आटा, चीनी, ब्रेड, बटर, जैम, सॉस... सब कुछ प्लास्टिक में पैक होता है। तमाम चीजों को लोग रखते भी प्लास्टिक के कंटेनरों मे ही हैं। सस्ती, हल्की लाने ले जाने में आसान होने की वजह से लोग प्लास्टिक कंटेनर्स को पसंद करते हैं। ऐसे में खाने पीने से जुड़ी चीजों में यूज होने वाले प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में जानना बहुत जरूरी है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टॉक्सिकॉलजी रिसर्च लखनऊ के एक साइंटिस्ट के अनुसार पानी में न घुल पाने और बायोकेमिकली ऐक्टिव होने की वजह से प्योर प्लास्टिक बेहद कम जहरीला होता है। लेकिन जब इसमें दूसरी तरह के प्लास्टिक और कलर आदि मिला दिये जाते हैं तो यह अधिक नुकसानदेह साबित हो सकते हैं। ये केमिकल खिलौने या दूसरे प्रॉडक्ट्स में से गर्मी के कारण पिघलकर बाहर आ सकते हैं। इस खतरे को ध्यान में रखते हुये अमेरिका ने बच्चों के खिलौनों और चाइल्ड केयर प्रॉडक्ट्स में इस तरह की प्लास्टिक के इस्तेमाल को सीमित कर दिया है। यूरोप ने साल 2005 में ही इस पर बैन लगा दिया था तो जापान समेत 9 दूसरे देशों ने भी इस पर पाबंदी लगा दी है।

प्लास्टिक की थालियां और स्टोरेज कंटेनर्स खाने-पीने की चीजों में केमिकल छोड़ते हैं। इसका खतरा टाइप 3 और 7 या किसी हार्ड प्लास्टिक से बने कंटेनर्स में और भी ज्यादा होता है। इन प्लास्टिक्स में बायस्फेनॉल ए (बी.पी.ए) नामक केमिकल होता है। ये केमिकल हमारे शरीर के हॉर्मोन्स को प्रभावित करते हैं, इनसे ब्रेस्ट कैंसर का खतरा रहता है और पुरुषों में स्पर्म काउंट घटने का भी रिस्क होता है। प्रेग्नेंट महिलाओं और बच्चों के लिये ये ज्यादा नुकसानदेह है।

अमेरिका के फूड ऐंड ड्रग ऐडमिनिस्ट्रेशन ने इस बात को माना है कि सभी तरह की प्लास्टिक एक वक्त के बाद केमिकल छोड़ने लगते हैं, खासकर जिन्हें गर्म किया जाता है। आप ऐसे समझ सकते हैं कि बार-बार गर्म करने से इन कंटेनर्स के प्लास्टिक के केमिकल्स टूटने शुरु हो जाते हैं और फिर ये खाने-पीने की चीजों में मिक्स हो जाते हैं। नतीजन गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

आमतौर पर हम प्लास्टिक बोतल को तेज धूप में खड़ी कार में रखकर छोड़ देते हैं। गर्म होकर इन प्लास्टिक बोतलों से केमिकल निकलकर पानी के साथ रिऐक्ट कर सकता है। ऐसे पानी

या सॉफ्ट ड्रिंक्स को न पिएं। यहां तक कि घरों की छतों पर मौजूद पानी की टंकियों में तेज धूप में होने वाली रिएक्शन को लेकर भी खतरा जताया जा रहा है। इसे लेकर स्टडी की जा रही है लेकिन अभी पक्के तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। सावधानी के तौर पर टंकी के ऊपर शेड बनवा सकते हैं।

अक्सर देखा गया है कि छोटी पॉलिथीन थैलियों में लोग गर्म चाय ले जाते हैं। एक्सपर्टस के मुताबिक यह तरीका बेहद नुकसानदेह है। तुरंत तो कुछ पता नहीं चलता, लेकिन लंबे समय तक इस्तेमाल करने से यह कैंसर का कारण बन सकता है। दरअसल, बेहद गर्म चीजों के साथ प्लास्टिक का रिऐक्शन होता है तो कैंसर कारण तत्व पैदा होते हैं। इसी तरह खाने की दूसरी चीजों को भी गर्म-गर्म प्लास्टिक कंटेनर में न रखें।

प्लास्टिक शीशी में होम्योपैथिक दवाएं सेफ होती हैं, बशर्ते शीशी लूज प्लास्टिक की न बनी हों। वैसे कांच की शीशी में होम्योपैथिक मेडिसिंस रखी हों तो बेहतर रहेगा, क्योंकि इसमें किसी भी तरह का शक-सुबहा नहीं रह जाता। यह नियम एलोपैथिक दवाओं खासकर सिरप आदि पर भी लागू होता है। प्लास्टिक से बने इंजेक्शन, आईवी आदि के अनुमान के बारे में अभी कोई रिपोर्ट सामने नहीं आई है।

बच्चे को फीड करने के लिये प्लास्टिक बॉटल का इस्तेमाल न करें । इसकी जगह स्टील या कांच की बॉटल यूज करें। अगर प्लास्टिक की बॉटल यूज करना ही है तो अच्छी क्वालिटी की लें। बी.एफ.ए फ्री या बी.एफ.आर फ्री या लेड फ्री आदि लिखा हो तो बेहतर है।

प्लास्टिक बॉटल को माइक्रोवेव या गैस पर पानी में बिल्कुल न उबालें । बॉटल को गर्म पानी से साफ करना काफी है। इसके अलावा क्लोरीन सलूशन से साफ कर सकते हैं । इससे सारे किटाणु निकल जाते हैं।

सेंटर फॉर साइंस इन्वाइरनमेंट (सी.एस.सी) की एक स्टडी में कहा गया है कि बच्चों के दांत निकलते वक्त उसे जो खिलौने दिये जाते हैं उनमें बेहद खतरनाक केमिकल्स पाये गये हैं। बच्चों को प्लास्टिक के टीथर देने के बजाय खीरे या गाजर के चिल्ड बड़े टुकड़े या मुलहटी की बड़ी डंडी (छोटी डंडी गले में फंस सकती है) दे सकते हैं ।

प्लास्टिक कंटेनर को माइक्रोवेव में गर्म नहीं करना चाहिये यहां तक कि थोड़ी देर के लिये भी नहीं। कभी मजबूरी में करना ही हो तो वही कंटेनर यूज करें, जिन पर माइक्रोवेव सेफ का सिंबल हो। साथ ही इनमें ऐसी चीजें बेहद थोड़ी मात्रा में न गर्म करें। जिनमें फैया या शुगर की मात्रा बहुत ज्यादा हो। माइक्रोवेव में कांच, पाइरेक्स या चीनी मिट्टी के कंटेनर यूज करें।

आज कल हमेशा से सब सामग्री प्लास्टिक से कवर्ड मिलती हैं विशेष कर कपड़े आदि उनमें हवा का प्रवेश न होने से और तैयार होते समय कुछ नमी रहने से सूक्ष्म फंगस जैसे कीटाणु भी पैदा होते हैं जो उपयोग करने पर त्वचा रोग और किसी -किसी को एलर्जी पैदा कर देती हैं।

आज कल हर प्रकार की दवाईयां चाहे आयुर्वेद के असाव-अरिष्ट प्लास्टिक की शीशी में प्रदाय किया जाना घातक होता हैं कारण प्लास्टिक का अलकोहल से रिएक्शन होता है।

हम सब विवेकवान और शिक्षित हैं इसीलिये इस बात को आप स्वयं गंभीरता से लें और स्वयं आगन्तुक रोगों से बच सकते हैं यह निर्णय आपका स्वयं को अपने परिवार के हित में होगा, जानकारी से अब अवगत हैं पर लापरवाही के कारण दुष्प्रभाव से नहीं बच सकोगे, निर्णय आपका है वो अमर रहेगा और हमारा मरण करा देगा।

अष्टपाहुड ग्रन्थ में दर्शन शब्द की मीमांसा

❊ डॉ. आशीष कुमार जैन, दमोह ❊

तीर्थंकर महावीर और गौतम गणधर के बाद की उत्तरवर्ती जैन आचार्यों की विशाल परंपरा में अनेक महान् आचार्यों का नाम श्रद्धापूर्वक लिया जाता है। जिनके अनुपम व्यक्तित्त्व और कर्तत्त्व से भारतीय चिन्तन अनुप्राणित होकर चतुर्दिक् प्रकाश की किरणें फैलाता रहा है, किन्तु इन सबमें अब से दो हजार वर्ष पूर्व युगप्रधान आचार्य कुन्द कुन्द ऐसे प्रखर प्रभापुंज के समान महान् आचार्य हुये जिनके महान् आध्यात्मिक चिन्तन से सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति प्रभावित हुई है।

प्राकृत वाङ्मय के आचार्यों की परंपरा में कुन्द कुन्दाचार्य का स्थान महत्त्वपूर्ण। इनकी गणना ऐसे युगसंस्थापक आचार्य के रूप में की गयी है, जिनके नाम से उत्तरवर्ती परम्परा कुन्दकुन्द-आम्नाय के नाम से प्रसिद्ध हुई है। किसी भी कार्य के प्रारंभ में मंगलरूप में इनका स्तवन किया जाता है। मंगल स्तवन का प्रसिद्ध पद्य निम्न प्रकार है-

मंगलं भगवदो वीरो मंगल गोदमो गणी।
मंगलं कोण्कुंदाइ, जेण्ह धम्मोत्थु मंगलं॥
मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दाकुन्दार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्॥

इस मंगल पद्य के द्वारा भगवान् महावीर और उनके प्रधान गणधर गौतम के बाद कुन्दकुन्द स्वामी को मंगल कहा गया है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने बोधपाहुड के अंत में अपने गुरु के रूप मे भद्रबाहु का स्मरण करते हुये अपने आपको भद्रबाहु का शिष्य बतलाया है। बोधपाहुड की गाथाएँ इस प्रकार हैं-

सद्दविआरो हूओ भासासुत्तेसु जं जिणे कहियं।
सो तह कहियं णाणं सीसेण य भद्दबाहुस्स॥
बार अंगवियाणं चउस्स पुव्वगं विउलवित्थरण।
सुयणाणि भद्दबाहू गमयगुरु भयवओ जयओ॥

ये दोनों गाथाएँ परस्पर में सम्बद्ध हैं। पहली गाथा में अपने आपको जिन भद्रबाहु का शिष्य कहा है, दूसरी गाथा में इन्हीं का जयघोष किया है।

वि.सं. 16वीं शती षट् प्राभृत के टीकाकार श्रुतसागरसूरी ने उनके पाँच नामों का उल्लेख करते हुये उन्हें आकाश में गमन करने वाला (चारणरिद्धिधारी) विदेहक्षेत्र जाकर सीमंधर स्वामी की दिव्यध्वनि सुनने वाला तथा कलिकाल-सर्वज्ञ रूप विशेषताओं से युक्त बतलाया है।

अष्टपाहुड ग्रंथ का परिचयः इस ग्रंथ में कुल पाँच सौ तीन गाथायें हैं। इसमें ग्रंथकार ने आठ पाहुडों के माध्यम से जैन धर्म-दर्शन का हार्द रत्नत्रयधर्म, श्रमणाचार और सच्चे श्रामण्य आदि विषयों का स्पष्टता से विवेचन किया। प्रस्तुत ग्रंथ में दसंणपाहुड, चरित्तिपाहुड, सुत्तपाहुड, बोधपाहुड, भावपाहुड, मोक्खपाहुड, सीलपाहुड और लिंगपाहुड क्रमशः वर्णन है। यह ग्रंथ पं.

पन्नालाल साहित्याचार्य, सागर द्वारा सम्पादित आचार्य श्रुतसागर सूरि कृत संस्कृत टीका सहित गजेन्द्र ग्रंथमाला, एन.एन इन्टरप्राइजिस धर्मपुरा दरीबा कलां दिल्ली-6 से प्रकाशित है।

दंसणपाहुडः इस लघुकाय ग्रंथ में धर्म के सम्यग्दर्शन का 36 गाथाओं में विवेचन किया गया है। सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट व्यक्ति को निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता है।

चारित्त पाहुडः सम्यक् चारित्र का निरूपण 44 गाथाओं में किया गया है। सम्यक् चारित्र के दो भेद किये हैं- सम्यक्त्वचरण और संयमचरण। संयम-चरण के सागार और अनगार इन दो भेदों द्वारा श्रावक और मुनि-धर्म का संक्षेप में निर्देश किया है।

सुत्तपाहुडः 27 गाथाओं में आगम का महत्त्व बतलाते हुये उसके अनुसार चलने की शिक्षा दी गयी है।

बोधपाहुडः 62 गाथाएँ इनमें आयतन, चैत्यगृह, जिनप्रतिमा, दर्शन, जिनबिम्ब, जिनमुद्रा, आत्मज्ञान, देव, तीर्थ, अर्हन्त और प्रव्रज्या इन ग्यारह बातों का बोध दिया गया है।

भावपाहुडः 163 गाथाओं में चित्त-शुद्धि की महत्ता का वर्णन किया है कि परिणामशुद्धि के बिना संसार-परिभ्रमण नहीं रूक सकता है और बिन भाव के कोई पुरुषार्थ ही सिद्ध होता है। इसमें कर्म की अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का विवेचन आया है।

मोक्खपाहुडः इस ग्रंथ में 106 गाथाओं में मोक्ष के स्वरूप का निरूपण किया गया है। आत्मा के बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा-इन तीन भेदों का स्वरूप समझाया है। मोक्ष - परमात्म -पद की प्राप्ति है इसका निर्देश किया है।

लिंगपाहुडः इस लघुकाय ग्रन्थ में 22 गाथाएँ है। श्रमणलिंग को लक्ष्य कर मुनि-धर्म का निरूपण किया गया है।

सीलपाहुडः 40 गाथाएँ हैं। शील ही विषयासक्ति को दूर कर मोक्ष-प्राप्ति में सहायक होता है। जीव-दया, इन्द्रिय-दमन, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, परिग्रह परिमाण, सम्यग्ज्ञान और तप को शील के अंतर्गन परिगणित किया है।

दर्शन शब्द का अर्थः

दर्शन-दर्शन शब्द का प्रयोग कई अर्थो मे प्रचलित है। दर्शन के लिये प्राकृत-साहित्य में **दंसण** शब्द का प्रयोग होता है। संस्कृत में दर्शन शब्द की निष्पत्ति दृश धातु से ल्युट प्रत्यय लगने पर हुई है। दर्शन शब्द के सम्प्रति विभिन्न अर्थ प्रचलित है -

1. दृश धातु का अर्थ होता है- देखना (देखने की क्रिया करना) अतः ल्युट् प्रत्ययान्त दर्शन शब्द का सामान्य अर्थ है देखना (संज्ञा)। इस देखने के अंतर्गत नेत्र से देखना आदि सभी का समावेश हो जाता है।

2. दर्शन का एक अर्थ मान्यता या सिद्धान्त भी है। जैनदर्शन, बौद्धदर्शन, न्यायदर्शन आदि पदों में दर्शन का यही अर्थ अभीष्ट है। फिलासॉफी के अर्थ में जो दर्शन शब्द प्रचलित है वह भी विचार, मत या सिद्धांत के अर्थ में ही स्वीकृत है। इसका एक अर्थ दृष्टिकोण भी है जो फिलासॉफी को ही व्यक्त करता है।

3. जैन दर्शन में दर्शन एक पारिभाषिक शब्द है। इसके यहां दो अर्थ प्रचलित हैं। उनमें एक अर्थ है-सामान्य बोध। दर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जीव में जो दर्शनगुण प्रकट होता है वह सामान्यबोध अर्थ का परिचायक है। यह दर्शन के पूर्व होता है। दर्शनोपयोग एवं ज्ञानोपयोग के रूप में इनका क्रम निरन्तर चलता रहता है।

4. दर्शन का अन्य पारिभाषित प्रयोग सम्यक्दर्शन के अर्थ में हुआ है। सम्यग्दर्शन का अर्थ है तत्त्वार्थों के प्रति श्रद्धा। दर्शन का पारिभाषिक प्रयोग सम्यग्दर्शन के अर्थ में अष्टपाहुड ग्रंथ में अधिक हुआ है, जिसका वर्णन दर्शन पाहुड ग्रंथ में किया गया है।

दर्शन का अर्थ श्रद्धान- दर्शन दृश धातु से निष्पन्न है और दृश् धातु का अर्थ है आलोक अर्थात् देखना, धातु के अनेक अर्थ होते हैं अतः दृश् धातु का आलोक अर्थ न करके श्रद्धान अर्थ किया गया है।

यदि सम्यग्दर्शन का शब्दिक अर्थ करें तो अर्थ होगा-वह दृष्टि जो प्रशस्त हो।

दर्शन शब्द का अर्थ विचारधारा, मान्यता, देखना अथवा विश्वास आदि है। दर्शन के लिये आगमों में दिठ्ठी शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका प्रमुख अर्थ दृष्टि, देखना अर्थात् आत्मा से आत्मा को देखना या आत्मा की अनुभूति से सत्य का श्रद्धान करना है । उपर्युक्त अर्थों से सम्यग्दर्शन के पर्यायवाची शब्दों के रूप में सही यो सत्य मान्यता या विचार धारा आत्मदर्शन स्वरूप दर्शन सद्दर्शन शाश्वत सत्य आदि अनेक गुण सूचक नाम व अर्थ कहे जा सकते हैं।

आचार्य कुन्द कुन्ददेव ने मोक्षपाहुड में कहा है-

हिंसारहिदे धम्मे अट्ठारह-दोसवज्जिए देवे।
णिग्गंथे पवयणे सद्दहणं होदि सम्मतं॥ मोक्खपाहुड 10

अठारह दोष रहित देव, हिंसादि रहित धर्म, निर्ग्रन्थ प्रवचन अर्थात् मोक्षमार्ग व गुरु इनमें श्रद्धा होना सम्यग्दर्शन है।

एवं जिणपण्णत्तं दंसणरयणं धरेह भावेण।
सारं गुणरयणत्तयसोवाणं पढम मोक्खस्स॥ दंसणपाहुड गाथा 21

इस प्रकार जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहा हुआ सम्यग्दर्शन तीनों रत्नों में साररूप है और मोक्ष की पहली सीढ़ी है। इसलिये हे भव्यों! इसे अच्छे अभिप्राय से धारण करो।

जितना चारित्र धारण किया जा सके, उतना धारण करना चाहिये और जितना धारण नहीं किया जा सके तो उसका श्रद्धान तो करना ही चाहिये, क्योंकि श्रद्धान वाले के ही सम्यग्दर्शन होता है- ऐसा जिनेन्द्र देव ने कहा है। (दंसणपाहुड गाथा 22)

आत्महित की दृष्टि से सम्यग्दर्शन का महत्त्व सर्वविदित है। आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने दंसणमूलो धम्मो अर्थात् धर्म का मूल सम्यग्दर्शन कहा है। उनके अनुसार

दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो॥
दंसणभट्टा भट्टा दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्टा दंसणभट्टा ण सिज्झंति॥ दंसणपाहुड गाथा 23

अर्थात् श्री जिनेन्द्र भगवान् ने शिष्यों के लिये दर्शनमूल धर्म का उपदेश दिया है, इसलिये उसे अपनो कानों से सुनो। जो सम्यग्दर्शन से रहित है वह वन्दना करने योग्य नहीं है। जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट हैं वे ही वास्तव में भ्रष्ट हैं क्योंकि सम्यक्दर्शन से भ्रष्ट मनुष्य को मोक्ष नहीं होता। जो सम्यक्चारित्र से भ्रष्ट हैं वे सिद्ध हो जाते हैं।

जो मनुष्य समयग्दर्शन से रहित हैं वे भले ही हजारों-करोड़ों वर्षों तक उत्तमता पूर्वक कठिन तपश्चरण करें तो भी उन्हें रत्नत्रय प्राप्त नहीं होता है। दंसणपाहुड गाथा 5

सम्मद्दंसणुद्धं जाव लभदे हि ताव सुही।
सम्मद्दंसणसुद्धं जाव ण लभदे हि ताव दुही॥ बोधपाहुड गाथा 14

जीव जब तक शुद्ध सम्यग्दर्शन को प्राप्त करता है तब तक सुखी रहता है एवं जब तक वह शुद्ध सम्यग्दर्शन को प्राप्त नहीं करता है तब तक दुःखी रहता है

दंसणसुद्धो सुद्धो, दंसणसुद्धो लहेइ णिव्वाणं।
दंसणविहीण पुरिसो, ण लहइ तं इच्छिंय लाहं॥ मोक्षपाहुड गाथा 39

अर्थात् सम्यग्दर्शन से शुद्ध मनुष्य शुद्ध कहलाता है, सम्यग्दर्शन से शुद्ध मनुष्य निर्वाण को प्राप्त होता है। जो मनुष्य सम्यग्दर्शन से रहित है वह इष्ट लाभ को नहीं कर पाता है।

जीवविमुक्को सवओ दंसणमुक्को य होइ चलसवओ।
सवओ लोयअपुज्जो लोउत्तरयम्मि चलसवओ॥ भावपाहुड गाथा 143

इस लोक में जीव रहित शरीर शव कहलाता है और सम्यग्दर्शन से रहित जीव चलशव चलता-फिरता मुर्दा कहलाता है। इनमें से शव इस लोक में अपूज्य है और चलशव-मिथ्यादृष्टि परलोक में अपूज्य है।

जिस प्रकार समस्त ताराओं में चन्द्रमा और समस्त मृग समूह में सिंह प्रधान है उसी प्रकार मुनि और श्रावक सम्बन्धी दोनों प्रकार के धर्मों में सम्यग्दर्शन प्रधान है। (भावपाहुड गाथा 144)

जिस प्रकार निर्मल आकाश मण्डल में ताराओं के समूह से सहित चन्द्रमा शोभित होता है उसी प्रकार तप और व्रत से निर्मल तथा सम्यग्दर्शन से विशुद्ध जिनलिंग शोभित होता है। (भावपाहुड गाथा 14)

इस प्रकार गुण और दोष को जानकर हे भव्य जीवों! तुम उस सम्यग्दर्शन रूपी रत्न को शुद्ध भाव से धारण करो जो कि गुण रूपी रत्नो में श्रेष्ठ है तथा मोक्ष की पहली सीढ़ी है। (भावपाहुड गाथा 147)

जो मनुष्य स्वयं सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट होकर अपने चरणों में सम्यग्दृष्टियों को पड़ते हैं अर्थात् सम्यग्दृष्टियों से अपने चरणों में नमस्कार कराते हैं वे लूले और गूँगे होते हैं तथा उन्हें रत्नत्रय अत्यंत दुर्लभ रहता है। यहाँ लूले और गूँगे से तात्पर्य स्थावर जीवों से हैं क्योंकि यथार्थ में वे ही गतिरहित तथा शब्दहीन होते हैं। दंसणपाहुड गाथा 12

सम्यग्दर्शन के आठ अंग- जिस प्रकार मानव शरीर में दो पैर, दो हाथ, नितम्ब, पृष्ठ, उरूस्थल और मस्तक ये आठ अंग होते हैं। और इन आठ अंगों से परिपूर्ण रहने पर ही मनुष्य कार्य

करने में समर्थ होता है, इस प्रकार सम्यग्दर्शन के भी निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढदृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना ये आठ अंग हैं। इन अष्टांग युक्त सम्यग्दर्शन का पालन करने से ही संसार-संतति का उन्मूलन होता है। इन अंगों में प्रारम्भिक चार अंग वैयक्तिक और बाद वाले चार अंग सामाजिक उन्नति के लिये आवश्यक हैं।

णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्विदिगिंछा अमूढ़दिट्ठीय।
उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा य ते अट्ठ।। चारित्रपाहुड 7

सम्यग्दर्शन के आठ अंग है- निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़दृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना।

इस तरह हम देखे कि आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने अष्टपाहुड ग्रंथ में दर्शन शब्द की बहुत ही सुन्दर रूप से व्याख्या की है।

कविता

पुष्पदंत सुविधिनाथ स्तवन

निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर जी महाराज

श्री पुष्पदंत परमेश्वर को प्रणाम।
है दूसरा सुविधिनाथ अपूर्वनाम।।
ज्ञानेश्वरा विधिनाशक ज्ञान देते।
निर्लेप कर्म मल से परिशुद्ध होते।।

यों ग्रीष्म में शिखर पर्वत पे विराजे।
अम्भ्रावकाश में सरिता तट पे विराजे।।

वर्षाधनी तरू तजे ऋतु को बिताये।
यों काय क्लेश सहते समता जगाये।।

जो राग रंग जग से मन है विरक्त।
त्रैगुप्ति सुंदर विशाल गुफा विविक्त।।
ना है प्रवेश जिसमें अध कर्म का ही।
हे शान्ति शाश्वत निजात्म रसानुभूति।।

अध्यात्म मानसरोवर है पवित्र।
शुद्धोपयोग जल से परिपूर्ण पात्र।।
वैराग्य पंकज खिले मुनि हंस गाते।
सम्यक्त्व मोति चुगते शिव सौख्य पाते।।

श्री वीतराग प्रभु के दरबार जाये।
सम्यक्त्व रत अति दुर्लभ चीज पाये।।
सौभाग्यवान इसको अति शीघ्र पाये।
मिथ्यात्व के उदय में इसको न पाये।।

संयम स्वास्थ्य योग

दस्त का घरेलु उपचार

असाधारण रूप से पतला मल, बिना मरोड के बार-बार आना दस्त, प्रवाहिका, अतिसार रोग हैं। दस्त स्वयं कोई रोग नहीं है लेकिन अन्ध रोगों का लक्षण मात्र है। दस्त गर्मी और वर्षा में अधिक होते हैं।

दस्त के कारण- गरिष्ठ चीजें, भूख से अधिक खाना, गंदा विषाक्त भोजन, दस्तावर दवाईयों का प्रयोग, बर्फ अधिक खाना, कृमी, तेल मसाले, रात्री जागरण, कब्ज आदि के प्रभाव से दस्त लगते हैं। प्रकृति नहीं चाहती कोई विशेष पदार्थ पेट या आँतों में रहे, इसलिये दस्त लग जाते हैं। कच्चे या बहोत पके फल खाना, अचानक भय, दुःख या आतंक मानसिक तनाव मौसम बदलाव से भी दस्त लगते हैं।

दस्त के उपाय

1. गरम उबला पानी, ठंडा करके पीना, स्वच्छ पानी पीना।
2. पीने का पानी ढंक कर रखना।
3. भोजन की चीजे ठककर रखें, मक्खियों से बचाये।
4. बासी भोजन न करे।
5. भोजन से पहले स्वच्छ हाथ धो ले।
6. नींबू-दूध में नींबू निचोड कर पीने से दस्तों में लाभ होता है।
7. आंवला- सूखा आंवला, काला नमक समान मात्रा में पीसकर जल के साथ आधा चम्मच की फक्की लेने से दस्त बंद होते हैं।
8. पुदिना- दस्तों में आधा कप पुदीना का रस हर दो घंटों में पिलायें।

आचार्य कुन्दकुन्द का काल निर्धारण एवं कृतियाँ

❊ प्रस्तुति-पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर ❊

आचार्य कुन्द कुन्द दिगंबर जैन परम्परा में सर्वोपरि आचार्य हैं। द्वितीय श्रुत स्कन्ध के आद्य रचनाकार हैं। जिन अध्यात्म के जाज्वल्यमान रवि हैं, रवि तो उदित होने के पश्चात अस्त हो जाता है पर आप ऐसे रूचि हैं जो उदित हुये 2000 वर्षों से आज तक अपने ग्रंथ ज्ञानरूपी किरणों से प्रकाशित हो रहे हैं।

जैनाचार्य ग्रंथों का अध्ययन आरंभ करने के पूर्व आपको बड़ी श्रद्धा पूर्व स्मरण करते हैं।

मंगलम् भगवान वीरो मंगलम गौतमो गणी।
मंगलम् कुन्द कुन्दाद्यौ जैन धर्मोस्तु मंगलम्॥

भगवान महावीर और गौतम गणधर के बाद एक मात्र आचार्य कुन्दकुन्द का ही समस्त आचार्य परम्परा में नाम उल्लेख पूर्वक स्मरण किया जाता है। दिगम्बर जैन मंदिरों में विराजमान लगभग समस्त जैन प्रतिमाओं की प्रशस्ति पर कुन्दकुन्दान्वय उल्लेख पाया जाता है।

2000 वर्षों से आज तक लगातार दिगम्बर जैन साधु अपने आपको कुन्दकुन्दाचार्य की परम्परा का कहलाने में गौरव अनुभव करते हैं। आपके उपलब्ध ग्रंथों में समस्त जिनागम का सार समाहित हो गया है। कोई भी विषय ऐसा नहीं था जो आपकी लेखनी से अछूता रहा हो।

बोध पाहुड में कुन्द कुन्दाचार्य ने अपने गुरु का नाम भद्रबाहु बतलाया है अर्थात् आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने को श्रुतकेवली भद्रबाहु का शिष्य कहा है। आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों के दो आचार्य टीकाकार हैं - 1. आचार्य अमृतचन्द्र 2. आचार्य जयसेन

आचार्य अमृतचन्द्र ने अपने मूल ग्रंथ कर्ता के सम्बन्ध में कुछ भी निर्देश नहीं दिया है, पर आचार्य जयसेन ने लिखा है- पद्मनन्दि जयवन्त हो। जिन्होंने महातत्त्वों का कथन करने वाले समय प्राभृत रूपी पर्वत को बुद्धि उद्धार करके भव्य जीवों को अर्पित किया। पञ्चास्तिकाय की टीका आरंभ करते हुये भी आचार्य जयसेन ने कुन्दकुन्द का अपरनाम पद्मनन्दि बताया है इसके अनुसार कुन्दकुन्द कुमारनाम सिद्धान्तदेव के शिष्य थे।

कुन्दकुन्द के जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व के सम्बन्ध में ऐसी दो कथाऐं प्राप्त होती है। कुन्द कुन्द अध्यात्म शास्त्र के महान प्रणेता और युग संस्थापक थे।

आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन परिचय के सम्बन्ध में विद्वानों ने सर्वसम्मति से जो स्वीकार किया है, उसके आधार पर ये दक्षिण भारत के निवासी थे। इनके पिता का नाम करमण्डु और माता का नाम श्रीमती था। इनका जन्म कौण्ड कुन्दपुर नामक स्थान में हुआ था। इस ग्राम का दूसरा नाम कुरुमरहैह भी कहा जाता है। यह स्थान पेदथनाडु जिले में है। कहा जाता है कि करमण्डु दंपत्ति को बहुत दिनों तक कोई संतान नहीं हुई तब एक तपस्वी ऋषि को दान देने के प्रभाव से पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई और उसका नाम ग्राम के नाम पर कुन्दकुन्द प्रसिद्ध हुआ।

बाल्यावस्था से ही कुन्दकुन्द प्रतिभाशाली थे, कुशाग्र बुद्धि के कारण ग्रन्थाध्ययन में अधिक समय व्यतीत होता था। कुन्दकुन्द का वास्तविक नाम क्या था, क्या समय था, यह अभी तक शोध का विषय है। आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने जीवनकाल के सम्बन्ध में कोई उललेख नहीं किया है।

द्वादशानुप्रेक्षा की अंतिम गाथा में इसको रचियता का नाम कुन्दकुन्द किया है। जयसेनाचार्य ने समयसार की टीका में पद्मनन्दि का जयकार किया है। इन्द्रनन्दि ने भी अपने श्रुतावतार कौण्डकुन्दपुर के पद्मनन्दि का निर्देश किया है। श्रवणबेलगोला में प्राप्त अनेकों शिलालेखों में आपको पद्मनन्दि नाम सेअत्यधिक सम्मान पूर्वक स्मरण किया गया है। नदी संघ में दीक्षित होने से आपका नाम पद्मनन्दि रखा गया था। परंतु वे जन्म स्थान के नाम पर कुन्दकुन्द नाम से अधिक प्रसिद्ध हुये।

षट्प्राभृतों के टीकाकार श्रुतसागर जी ने प्रत्येक प्राभृत के अंत में जो पुष्पिका अंकित की है, उसमें उनके नाम पर पद्मनन्दि, कुन्दकुन्द, वकग्रीव, ऐलाचार्य और गृद्धपिच्छ नाम दिये हैं। कुन्दकुन्द और पद्मनन्दि ये दो नाम तो मिलते हैं शेष तीन नामों के सम्बन्ध में विवाद है। वक्रग्रीव का उल्लेख भी ईसवी सन् 1125 के 493 संख्यक अभिलेख में द्रविड संघ और अरुंगलान्वय के आचार्यों की नामावली में आता है।

आचार्य कुन्दकुन्द का काल निर्धारण-

काल पर विचार करने वालों में पण्डित श्री नाथूराम जी प्रेमी, पण्डित श्री जुगलकिशोर जी मुख्तार, डॉ. के.डी. पाठक, प्रोफेसर ए. चक्रवर्ती और डॉ. ए.एन. उपाध्ये के नाम उल्लेखनीय हैं।

पण्डित श्री नाथूराम जी प्रेमी ने आचार्य धरसेन की परम्परा में पुष्पदन्त और भूतबली ने षट्खण्डागम की रचना की, इन दोनों ग्रंथों को कुन्दकुन्दपुर में पद्मनन्दि मुनि ने गुरु परम्परा से प्राप्त किया षट्खण्डागम प्रथम तीन खण्डों में 12000 श्लोक प्रमाण परिकर्म नामक ग्रन्थ की रचना की। इस आधार पर वीर निर्वाण सम्वत् 683 के पश्चात कुन्दकुन्द हुये। धरसेन उच्चारणाचार्य आदि के समय को 50-50 वर्ष मान लेने पर कुन्दकुन्द का समय तीसरी शताब्दी का अंतिम चरण सिद्ध होता है।

डॉ. के.डी. पाठक को राष्ट्रकूट नरेश गोविन्दराज तृतीय के दो ताम्र पाप्त हुये। उनमें से एक शक सम्वत् 719 का है दूसरा शक सम्वत् 724 का है। इनमें कौण्डकोन्दान्वय के तोरणाचार्य शक सम्वत् 600 में हुये होंगे, कुन्द कुन्द को इनसे डेढ़ वर्ष पूर्व माना जा सकता है। अतः शक सम्वत् 450 ईसवरी सन् 528 के लगभग है।

पण्डित श्री जुगल किशोर मुख्यतार पट्टावली पर विश्वास नहीं करते हैं। पट्टावती में कुन्दकुन्द का समय विक्रम संवत 49 दिया है। षटखण्डागम के प्रथम तीन ग्रंथों पर 12000 श्लोक प्रमाण टीका को साकार मानते हुये कुन्दकुन्द और निर्वाण सम्वत् 670 के लगभग हुये।

प्रोफेसर ए. चक्रवर्ती के मत को भी मान्य नहीं ठहराया और वीर निर्वाण सम्वत् 608 से

692 के माध्य माना है। आचार्य कुन्दकुन्द के समय निर्धारण में विद्वान एकमत नहीं हैं, परन्तु नदी संघ की पट्टवलियों के आधार पर कुन्दकुन्द को प्रथम शताब्दी का आचार्य मानते हैं।

आधुनिक विचारक डॉ. ज्योतिप्रसाद ने विभिन्न मतों की समीक्षा करते हुये अपने निष्कर्ष में कहा है-आचार्य कुन्द कुन्द का समय ईसवी सन् की प्रथम शताब्दी मेरे मत के अनुसार प्रथम शताब्दी का अंतिम है।

कुन्दकुन्द की कृतियों का उल्लेख ग्रंथों में पाया जाता है: दिगम्बर साहित्य के महान् प्रणेताओं में कुन्दकुन्द का मूर्धन्य स्थान है। इनकी सभी रचनाएँ शौरसेनी प्राकृत में है। इन ग्रंथों में 1. प्रवचनसार 2. समयसार और 3. पञ्चास्तिकाय ये तीन ग्रंथ विश्रुत हैं और तत्त्वज्ञान को अवगत करने के लिये कुञ्जी हैं। शेष रचनाओं का भी आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है।

प्रवचनसार- यह ग्रंथ अमृतचन्द्रसूरि और जयसेनाचार्य की संस्कृत टीकाओं सहित रायचन्द्र शास्त्रमाला बम्बई द्वारा प्रकाशित है। इसमें तीन अधिकार हैं-ज्ञान, ज्ञेय और चारित्र। ज्ञानाधिकार में आत्मा और ज्ञान का एकत्व एवं अन्यत्व, सर्व की सिद्धि, इन्द्रिय और अतीन्द्रिय सुख, शुभ, अशुभ और शुद्धोपयोग तथा मोहक्षय आदि का प्ररूपण है। ज्ञेयाधिकार में द्रव्य, गुण, पर्याय का स्वरूप, सप्तभंगी, कर्म और कर्मफल का स्वरूप, मूर्त, और अमूर्त द्रव्यों के गुण, कालादिक के गुण और पर्याय, प्राण, शुभ और अशुभ उपयोग, जीव का लक्षण, जीव और पुद्गल का सम्बन्ध, निश्चय और व्यवहार का अविरोध एवं शुद्धात्मा आदि का प्रतिपादन है। चारित्र-अधिकार में श्रामण्य के चिहन, छेदोपस्थापक श्रमण, छेद का स्वरूप, युक्त आहार, उत्सर्ग और अपवाद मार्ग, आगमज्ञान का लक्षण और मोहतत्त्व आदि का कथन किया है।

आचार्य अमृतचन्द्र की टीका के अनुसार इसमें 275 गाथाएँ हैं और जयसेन की टीका के अनुसार 317 हैं। इन बढ़ी हुई गाथाओं का तीन वर्गों में विभाजन किया जा सकता है -

✲ नमस्कारात्मक

✲ व्याख्यानविस्तारविषयक

✲ अपरविषयविज्ञापनात्मक

2. समयसार- यह सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक ग्रन्थ है। यहाँ समय शब्द के दो अर्थ विवक्षित हैं- समस्त पदार्थ और आत्मा जिस ग्रंथ में समस्त पदार्थों अथवा आत्मा का सार वर्णित हो, वह समयसार है। यह भेदविज्ञान का निरूपण करता है। अनेक पदार्थों को स्व-स्व लक्षणों से पृथक-पृथक नियत कर देना और उनसे उपादेय पदार्थ को लक्षित तथा अन्य समस्त पदार्थों को उपेक्षित कर देने को भेदविज्ञान कहा जाता है। यह ग्रंथ दस अधिकारों में विभक्त है।

इस ग्रंथ में आचार्य अमृतचन्द्र की टीकानुसार 415 गाथाएँ और जयसेनाचार्य की टीका के अनुसार 439 गाथाएँ हैं। शुद्ध आत्मा का इतना सुन्दर और उपस्थित विवेचन अन्यत्र दुर्लभ हैं।

3. पंचास्तिकाय- इस ग्रन्थ में कालद्रव्य से भिन्न जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश इन पाँच अस्तिकायों का निरूपण किया गया है। बहुप्रदेशी द्रव्य को आचार्य ने

अस्तिकाय कहा है। द्रव्य लक्षण, द्रव्य के भेद, सप्तभंगी, गुण, पर्याय कालद्रव्य एवं सत्ता का प्रतिपादन किया है। यह ग्रंथ दो अधिकारों में विभक्त है। प्रथम अधिकार में द्रव्य, गुण और पर्यायों का कथन है और द्वितीय अधिकार में पुण्य, पाप, जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर निर्जरा एवं मोक्ष इन नव पदार्थों के साथ मोक्ष मार्ग का निरूपण किया है।

इस ग्रंथ में अमृतचन्द्राचार्य की टीका के अनुसार 173 गाथाएँ और जयसेनाचार्य के टीकानुसार 181 गाथाएँ हैं। द्रव्य के स्वरूप को अवगत करने के लिये यह ग्रंथ बहुत उपयोगी हैं।

4. नियमसार- आध्यात्मिक दृष्टि से यह ग्रंथ भी महत्वपूर्ण है। इसमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को नियम से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग कहा है। अतएव सम्यग्दर्शनादि का स्वरूप कथन करते हुये उसके अनुष्ठान करने एवं मिथ्यादर्शनादि के त्याग का विधान किया है। इस पर पद्मप्रभमलधारीदेव की संस्कृत टीका भी उपलब्ध है।

5. बारस-अणुवेक्खा (द्वादशानुप्रेक्षा)- इसमें अध्रुव अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व, संसार, लोक, अशुचित्व, आस्रव, संवर, निर्जरा, धर्म और बोधिदुर्लभ इन बारह भावनाओं का 91 गाथाओं में वर्णन है। संसार से विरक्ति प्राप्त करने के लिये यह रचना अत्यन्त उपादेय है।

6. दंसणपाहुड- इस लघुकाय ग्रंथ में सम्यग्दर्शन का 36 गाथाओं में विवेचन किया गया है। सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट व्यक्ति को निर्वाण प्राप्त नहीं हो सकता है।

7. चारितपाहुड- सम्यक्चारित्र का निरूपण 44 गाथाओं में किया गया है। सम्यक्चारित्र के दो भेद किये हैं- सम्यक्त्वाचरण और संयमचारण। संयमाचरण के सागार और अनगार इन दो भेदों द्वारा श्रावक और मुनि धर्म का संक्षेप में निर्देश किया है।

8. सुत्तपाहुड- 27 गाथाओं में आगम का महत्व बतलाते हुये उसके अनुसार, मोक्षमार्ग पर चलने की शिक्षा दी गयी है।

9. बोहपाहुड- 62 गाथाएँ हैं। इनमें आयतन, चैत्यगृह, जिनप्रतिमा, दर्शन, जिनबिम्ब, जिनमुद्रा, आत्मज्ञान, देव, तीर्थ, अर्हन्त और प्रवज्या इन ग्यारह बातों का बोध दिया गया है।

10. भावपाहुड- 163 गाथाओं में चित्त-शुद्धि की महत्ता का वर्णन किया है। बताया है कि परिणामशुद्धि के बिना संसार परिभ्रमण नहीं रूक सकता है और न बिना भाव के कोई पुरुषार्थ ही सिद्ध होता है। इसमें कर्म की अनेक महत्वपूर्ण बातों का विवेचन आया है।

11. मोक्खपाहुड- इस ग्रंथ में 106 गाथाओं में मोक्ष स्वरूप का निरूपण किया गया है। आत्मा के बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा इन तीन भेदों का स्वरूप समझाया है। मोक्ष परमात्म पद की प्राप्ति किस प्रकार होती है। इसका निर्देश किया है।

12. लिंगपाहुड- इस लघुकाय ग्रंथ में 22 गाथाएँ हैं। श्रमणलिंग को लक्ष्य कर मुनि धर्म का निरूपण किया गया है।

13. शीलपाहुड- इस शीलपाहुड ग्रंथ में 40 गाथाएँ हैं। शील ही विषयासक्ति को दूर कर मोक्षप्राप्ति सहायक होता है। जीवदया इन्द्रिय-दमन, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, सन्तोष, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और तप को शील के अन्तर्गत परिगणित किया है।

14. रयणसार- इस ग्रंथ में 167 पद्य हैं जिसमें रत्नत्रय का विवेचन है। और किसी-किसी प्रति में 155 पद्य भी मिलते हैं। गृहस्थ और मुनियों को रत्नत्रय का पालन किस प्रकार करना चाहिये, यह इसमें वर्णित है। डॉ. ए.एन. उपाध्ये इस ग्रंथ को गाथा विभेदविचार, पुनरावृत्ति, अपभ्रंश पद्यों की उपलब्धि एवं गणगच्छादि के उल्लेख मिलने से कुन्दकुन्द की होने में आशंका प्रकट करते हैं। वस्तुतः शैली की भिन्नता और विषयों के सम्मिश्रण से यह ग्रंथ कुन्दकुन्द रचित प्रतीत नहीं होता। परम्परा से यह कुन्दकुन्द द्वारा प्रणीत माना जाता है।

15. सिद्धभत्ति- यह स्तुति परक ग्रंथ है। 12 गाथाओं में सिद्ध के गुण-भेद, सुख, स्थान, आकृति और सिद्धि-मार्ग का निरूपण किया गया है। इस पर प्रभाचन्द्राचार्य की एक संस्कृत टीका है। इस टीका के अंत में लिखा है कि संस्कृत की सब भक्तियाँ पूज्यपाद स्वामी द्वारा विरचित हैं और प्राकृत की भक्तियाँ कुन्दकुन्द आचार्य द्वारा निर्मित हैं।

16. सुदभत्ति- इस भक्तिपाठ में 11 गाथाएँ हैं। इसमें आचारांग, सूत्रकृतांग आदि द्वादश अंगों का भेद-प्रभेद सहित उल्लेख करते हुये उन्हें नमस्कार किया गया है। 14 पूर्वों में से प्रत्येक की वस्तु संख्या और प्रत्येक वस्तु के प्राभृतों की संख्या भी दी है।

17. चारितभत्ति- चारितभत्ति में 10 अनुष्टुप गाथाछन्द है। सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात नाम के चारित्रों, अहिंसादि 28 मूलगुणों, दस धर्मों, त्रिगुप्तियों, सकलशीलों, परिषहों के जय और उत्तरगुणों का उल्लेख करते हुये मुक्तिसुख देने वाले चारित्र की भावना की गयी है।

18. जोइभत्ति- इसमें 23 गाथाओं में योगियों की अनेक अवस्थाओं, ऋद्धियों, एवं गुणों के साथ उन्हें नमस्कार किया गया है।

19. आइरियभत्ति- इसमें 10 गाथाएँ हैं। इनमें आचार्यों के उत्तम गुणों का उल्लेख करते हुये उन्हें नमस्कार किया है।

20. णिव्वाणभत्ति- इसमें 27 गाथाएँ हैं। इनमें निर्वाण का स्वरूप एवं निर्वाण प्राप्त तीर्थंकरों की स्तुति की गयी है।

21. पंचगुरुभत्ति- इस भक्तिपाठ में सात पद्य हैं। प्रारम्भिक पाँच पद्यों में क्रमशः अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पाँच परमेष्ठियों का स्तवन है। छठे पद्य में स्तवन का फल अंकित है। सप्तम पद्य में इन पाँच परमेष्ठियों का अभिधान पंच नमस्कार में किया है।

22. थोस्सामि थुदि (तिथयरभत्ति)- थोस्सामि पद से आरम्भ होने वाली अष्टगाथात्मक स्तुति है। इसे तीर्थंकर भक्ति भी कहा गया है। इस स्तुति पाठ में वृषभादि वर्धमान पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरों की उनके नामोल्लेखपूर्वक वन्दना की गई है और तीर्थंकरों के लिये

जिन, जिनवर, जिनेन्द्र, केवली, अनन्तर्जिन, लोकमहित, धर्मतीर्थंकर, विधूतरजोमल, लोकोद्योतकर आदि विशेषण का प्रयोग किया गया है। अंत में समाधि, बोधि और सिद्धि की प्रार्थना की गयी है।

इस प्रकार आचार्य कुन्द कुन्द अपूर्व प्रतिभा के धनी और शास्त्र पारंगत विद्वान हैं। इन्होंने पञ्चास्तिकाय और प्रवचनसार में आध्यात्मिक दृष्टि के साथ शास्त्रीय दृष्टि को भी प्रश्रय दिया है। अतएव इन दोनों ग्रंथों में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयों का वर्णन प्राप्त होता है। सम्यग्दर्शन के विषयभूत जीवादि पदार्थों का विवेचन करने के लिये शास्त्रीय दृष्टि को अंगीकृत किये बिना कार्य नहीं चल सकता।

आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार और नियमसार में आध्यात्मिक दृष्टि से आत्म स्वरूप का विवेचन किया है। इसके साथ-साथ इन ग्रंथों में शौरसेनी प्राकृत के प्राचीन स्वरूप प्राप्त होते हैं। इस दृष्टि में गुणस्थान और मार्गणाओं के भेदों का अस्तित्व स्वीकृत नहीं रहता। यह दृष्टि पर-निरपेक्ष आत्मस्वभाव को और उसके प्रतिपादक निश्चयनय को ही भूतार्थ तथा व्यवहार को हेय मानती है। यहाँ एक निश्चय ही मोक्षमार्ग है, व्यवहार नहीं इस प्रकार आचार्य कुन्द कुन्द ने आध्यात्मिक और शास्त्रीय दृष्टियों का विश्लेषण एवं विवेचन कर आत्मतत्त्व का निरूपण किया है।

अतएव संक्षेप में कुन्द कुन्द का अपूर्व पाण्डित्य, उनकी शास्त्रग्रन्थन प्रतिभा एवं सिद्धान्त ग्रंथों के सार-भाग को आध्यात्मिक और द्रव्यानुयोग के रूप में प्रस्तुतिकरण आदि उनकी विशेषतायें हैं।

कविता

राम नाम प्यारा

✻ संस्कार फीचर्स ✻

राम का नाम है कितना सुन्दर इसमें है
आनंद का समन्दर, हारे का सहारा
राम नाम प्यारा, दो अक्षर का नाम
बनाये बिगड़े सारे काम
चाहे कोई भजे नारी
कितना भी हो पापी भारी
गहरे समन्दर में अपने अन्दर में
राम का नाम सुमर लेता है
पापों के बंधन से मुक्त होता है
राम का नाम दुखहारी सुखकारी है
हम बैठे भवन में दुख सुख में
सुमरे राम का नाम पाये शिव सुख धाम

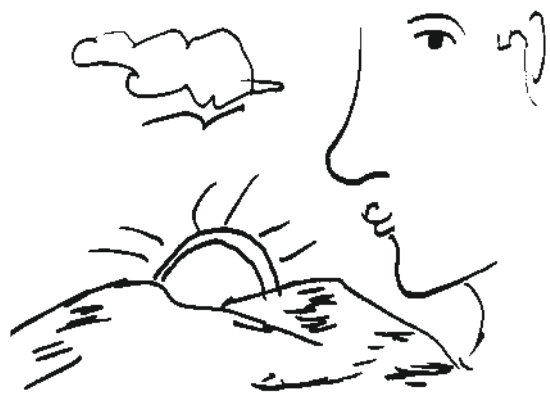

प्राचीन ज्ञान परम्परा से हम बन सकते हैं विश्वगुरु

✻ प्रो. रेणु जैन ✻

म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग तथा देवी अहित्या विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा 22-23 जुलाई को आयोजित द्वि दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं गणित** के शुभारंभ अवसर पर बोलते हुये देवी अहित्या विश्व विद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु जैन ने कहा कि हमारे ऋषि मुनियों ने प्राचीन ग्रंथों में महत्त्वपूर्ण ज्ञान संरक्षित किया है हमारे ज्योतिषयों द्वारा चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय तथा अन्य जानकारी देने वाले पंचाग का निर्माण प्राचीन गणना पद्धति से किया गया है जो वर्तमान अंतरिक्ष विज्ञान के नवीनतम साधनों का उपयोग करना आदि अंतराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा की जाने वाले गणनाओं के अनुरूप ही है। बिना सूक्ष्म यंत्रों के उस समय हमारे पूर्वजों द्वारा की गई गणनायें इतनी सही हैं यह देखकर गौरव होता है। यदि हम प्राचीन ज्ञान को आधुनिक ज्ञान से जोड़कर चलें तो पुनः विश्व गुरु बन सकते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पुणे से पधारे **प्रो. श्री राम चौथाई वाले** पुणे ने विद्यार्थियों को भारत की गणितीय परम्परा का ज्ञान देने पर जोर दिया। म.प्र. शासन के सहयोग से आयोजित यह कार्यशाला हमारे लिये मार्गदर्शक सिद्ध होगी। आपने आगे कहा कि पढ़ाई कभी खत्म नहीं होती है। माँ सरस्वती के हाथ में जो पुस्तिका है वह आज भी बता रही है कि माँ सरस्वती आज भी अनवरत सीखने कार्य कर रही हैं। उसी प्रकार हमें भी अपने ज्ञान को परिष्कृत करते रहने चाहिये।

सारस्वत अतिथि प्रो. वी.पी. सक्सेना, ग्वालियर ने कहा कि जब मैं अपने किये गये अध्ययन को देखता हूँ तो मुझे लगता है कि मैंने प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा से बहुत कुछ प्राप्त किया है मुझे भारतीय ज्ञान की प्रेरणा गीता से मिली। हमें केवल इतिहास ही नहीं अपितु वर्तमान समस्याओं के निदान में गणित की भूमिका तथा नवीन गणितीय शोधों पर भी जोर देना पड़ेगा।

कार्यक्रम का प्रस्ताविका वक्तव्य देते हुये **डॉ. अनुपम जैन (केन्द्र निदेशक**) ने ऋग्वेद के काल से शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ जी तक गणित की अविरल परम्परा का महत्त्व एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावनाओं से सदन को अवगत कराते हुये इस कार्यशाला के उद्देश्यों को स्पष्ट किया। आपने कहा कि गणित के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परम्परा 7000 वर्ष प्राचीन है अतः केवल 100 साल के गणित की ही चर्चा करना समीचीन नहीं है क्योंकि विगत सहस्रब्दियों में **वैदिक एवं श्रमण परम्पराओं का योगदान अप्रतिम है।**

प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. श्री राम चौथाई वाले पुणे, डॉ. राकेश भाटिया-रोहतक एवं डॉ. मीनाक्षी राठी-दिल्ली के विशेष व्याख्यान हुये एवं कार्यक्रम में विभिन्न सत्रों में 11 शोध पत्रों का वाचन किया गया।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 2 तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता म.प्र. लोक सेवा आयोग के परीक्षा नियंत्रक प्रो. वी.के. गुप्ता एवं म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग के ओ.एस.डी. प्रो. अनिल

राजपूत ने की। संचालन डॉ. शिशिर शाडिल्य एवं प्रो. रजनीश जैन ने किया। इन सत्रों में डॉ. अंगद ओझा, डॉ. प्रगति जैन, डॉ. संजय जैन, डॉ. आर.के. शर्मा, डॉ. तृप्ति दीक्षित आदि ने म.प्र. शासन के स्नातकस्तरीय गणित के पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रथम वर्ष में समाहित की जाने वाले विषयों विशेषतः, प्राचीन भारतीय गणित एवं वैदिक गणित की सामग्री पर सुझाव दिये। भोजनोपरान्त सम्पन्न हुई राउंड टेबल मीटिंग में विस्तृत उहापोह के बाद प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रस्तावित किया गया। सायं काल 4 बजे सम्पन्न समापन समारोह की अध्यक्षता वि. वि. की कुलगुरु प्रो. रेणु जैन ने की। आनलाइन रूप से प्रो. जी.एस. मूर्ति, राष्ट्रीय समन्वय का (आई.के.एस)जुड़े। उन्होंने कहा कि हमारे इन्दौर केन्द्र द्वारा मातृभाषा में जो कार्य हो रहा है वह अनूठा है। हमारा इन्दौर सेन्टर अद्भुत है क्योंकि जैन गणित की विस्तृत एवं समृद्ध परम्परा है। इन्दौर में प्रो. अनुपम जैन अपने विषय के प्रकाण्ड विद्वान हैं उनके माध्यम से जो सिलेबस बनेगा उसका सभी उयोग करेंगे। समापन सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करने के साथ शासकीय महाविद्यालय प्रोलायकलां से पधारी डॉ. सुरेशा मिश्रा ने विस्तृत आख्या प्रस्तुत की। प्रो. मूर्ति ने कार्यक्रम की सफलता पर वि.वि. को बधाई दी। माननीय कुलगुरु महोदया ने कार्यशाला में व्यापक सहभगिता हेतु (आई.के.एस सेन्टर) के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुये भविष्य में इस प्रकोष्ट को क्रियाशील रखने की भावना व्यक्त की।

मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, पश्चिम बंगाल आदि प्रांतों से85 से अधिक प्रतिभागी सम्मिलित हुये। विभागाध्यक्ष प्रो. व्ही.बी. गुप्ता ने सभी का आभार माना।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

आयुर्वेद से आरोग्य क्रांति

❊ मुनि श्री अक्षयसागरजी महाराज ❊

भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों ने एक ओर जहाँ अध्यात्मा की साधना के लिये ज्ञान और योग का उपदेश दिया वहीं दूसरी ओर हमारे खान-पान और आहार शुद्धि पर जोर दिया है। आहार, शुद्धि सत्व शुद्धि होने से चित्त शुद्धि होती है। इस निर्मल चित्त से ही धर्म का प्रकाश होता है। धर्म साधना के लिये शरीर श्रेष्ठ एवं प्रथम साधन है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य के लिये मुख्य साधनरूप शरीर को निरोगी रखने की आवश्यकता है। क्योंकि रोगी शरीर से कोई भी पुरुषार्थ सिद्ध नहीं हो सकता।

दिनचर्या और ऋतुचर्याः शरीर में वात, पित्त और कफ ये तीन दोष रहते हैं। ये दोष जब समान स्थिति में हो तब शरीर को निरोगी रखते हैं। और जब विषम स्थिति में होते हैं तब शरीर को रोगी बनाकर अंत में उसका नाश कर देते हैं। इसके लिये दिनचर्या और ऋतुचर्या मुख्य है। प्रत्येक ऋतु दो माह का होता है। 2 माह में ऋतु बदलने से त्रिदोष न्यूनाधिक होते हैं। छह ऋतु हेमंत, शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद हैं।

हेमंत-मार्गशीर्ष, पौष, शिशिर-माघ, फागुण, वसंत-चैत्र, वैशाख, ग्रीष्म-ज्येष्ठ, आषाढ़, वर्षा-श्रावण, भाद्रपद, शरद-आश्विन, कार्तिक उपरोक्त ऋतू में यह माह आते हैं। उसमें दक्षिणायन शिशिर, वसंत, ग्रीष्म और उत्तरायण-वर्षा, शरद, हेमंत के दौरान होते हैं। उत्तरायण के समय पर तीक्ष्ण तथा रूक्ष वायु चलती है। इसी से इन तीनों ऋतुओं में रस भी रूक्ष, कडवा और तीखा होने के कारण मनुष्य शरीर निर्बल और हीन वीर्य वाला होता हैं। दक्षिणायन में रस खट्टा खारा और मीठा होने से मनुष्य सबल और वीर्यवान होते हैं। ऋतु के अनुसार आहार-विहार और प्रतिकूल का त्याग करने से ऋतुजन्य रोग उत्पन्न नहीं होते हैं।

दिनचर्याः ब्राह्मे मुहूर्त उतिष्ठेत्, स्वस्थों रक्षार्थमायुषः
अर्थात् स्वस्थ पुरुष आयु की रक्षा के लिये ब्रह्म मुहूर्त में उठे।
समदोष समाग्निश्च समधातू मलक्रियाः।
प्रसन्नात्मोन्द्रियदमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।

शरीर के सब धातु समान रहकर धातु क्रिया व मल क्रिया सम रहना मन, इंद्रिय सम रहकर बुद्धि प्रकर्षक उत्कृष्ट कार से रहना इसे स्वास्थ्य कहते हैं। स्वस्थ पुरुष आयु की रक्षा के लिये ब्रह्म मुहूर्त में उठें। सूर्य उदय के डेढ़ घंट पूर्व उठना शरीर को स्वस्थ रखने हेतू उपयुक्त समय माना गया है। प्रातः शरीर, मन, बुद्धी सब ताजे हो जाते हैं। रात्रि में समय पर सोना जरूरी है। निसर्ग से विपरीत पचनसंस्था, बुद्धी, दृष्टी, मानसिक संतुलन, यकृत में

विकृती, जलोदरादी रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

अव्यवस्थित जीवनशैली से शरीर रोगों का घरः भोपाल (मध्यप्रदेश) 2016 में आचार्य प्रवर श्री विद्यासागरजी महाराज जी ने अपने प्रवचन में कहा था अव्यवस्थित जीवन शैली से शरीर रोगों का घर बनता है। जो आयु हम बांध कर लायें हैं वह किसी भी प्रकार से बढ़ा नहीं सकते। अर्थात् उसमें उत्कर्षण नहीं हो सकता, अपकर्षण हो सकता है, उसका कारण अपने खान-पान रहन-सहन और अव्यवस्थित जीवन शैली से आयु कम कर रहे हैं।

जैनाचार्यों के मत से द्वादशांग शास्त्रों में जो दृष्टिवाद नाम का जो बारहवां अंग है उसमें पांच भेदों में एक भेद में से एक भेद पूर्व (पूर्वगत) है। उसके भी चौदह भेद हैं। इन भेदों में जो प्राणावाद पूर्वशास्त्र है उसमें विस्तार के साथ अष्टांगार्युवेद का कथन किया है। यही आयुर्वेद शास्त्र का मूलशास्त्र अथवा मूलवेद है। उसी वेद अनुसार ही सभी आचार्यों ने आयुर्वेद का निर्माण किया है।

क्षुल्लक ज्ञानभूषण महाराज ने पवित्र मानव जीवन में सर्वथा निरोगता का साधन बताते हुये कहा है-

मनोनियंत्रण सात्विक भोजन यथाविधि व्यायाम करें।
वह प्रकृति देवी के मुख से सहजतया आरोग्य वरें ।।
इस अनुभूत योग की सम्प्रति मुग्ध, बुद्धि क्यों याद करें।
इधर उधर की औषधियों में तनु धन वृष बर्बाद करें ।।

बीमारी का मूल कारण-अति भोजन, अभक्ष्य खाना, प्रकृति विरूद्ध और अनियमित भोजन करना, इससे त्रिदोष से रोग होते हैं। वातविकार में शरीर में अत्यधिक पीड़ा, पित्तविकार से दाह, तृषा आदि होती है। कफ विकार से स्थूल, धन, स्थिर व खुजली होती है।

सर्वोषामेव रोगाणां निदाणं कुपिता मलाः सर्व रोग का निदान कुपित मल के द्वारा ही किया जाता है।

उपचारः एलोपैथी, नेचरोपैथी, पाश्चात्य चिकित्सा, आयुर्वेद और युनानी आदि के द्वारा करते हैं।

एलोपैथी- शरीर चिकित्सा में दवाईयाँ लेने से उसे रोग निदान तो हो जाता है लेकिन उसी दवाइयों के द्वारा शरीर के अन्य पुजे खराब होने की आशंका होती है। इससे साईड इफेक्ट होते हैं लेकिन आयुर्वेद के द्वारा दी जाने वाली दवाईयाँ शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाती है।

आयुर्वेद

हिताहितम् सुखम् दुःखम्। आयुतस्य हिताहितम्।

मानंस तच्च यात्रोक्तं आयर्वेदः स उच्चयते ।। (च.सु. 1/49)

आयुष्य के लिये क्या हितकर-अहितकर, सुखकर-दुखकर है। इनका वर्णन अथवा परिमाण जिसमें मिलता वह आयुर्वेद है।

आयुर्वेद का ध्येयः स्वस्थ्य स्वास्थ्य रक्षणम् आतूरस्य व्याधी प्रशनम्

स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगियों को रोग मुक्त करना यही आयुर्वेद है। वैद्य अ. 7 में लिखा है- वैद्य निस्पृह होकर चिकित्सा करें, चिकित्सा रोगों का नाश करने वाली है। चिकित्सा से धर्म की वृद्धि होती है। चिकित्सा एकतप है। इसलिये चिकित्सा का कोई काम मोह और लोभवश होकर न करें, चिकित्सक के अपने मन में किसी भी प्रकार का विकार नहीं रहना चाहिये। किंतु वह रोगियों के प्रति करूणा बुद्धि से व अपने कर्मों के क्षय के लिये चिकित्सा करें। इस पकार निस्पृह व समीचीन विचारों से की चिकित्सा व्यर्थ नहीं होती। इस वैद्य को अवश्य सफलता मिलती है-जैसे किसान परिश्रिमपूर्वक खेती करता है, फल अवश्य उसी प्रकार मिलता है , परिश्रमपूर्वक किये हुये उद्योगों में भी वैद्य को अवश्य फल मिलते हैं। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है।

आयुर्वेद-दोष धातू मल मूलहि शरीरम्

वात, पित्त, कफ- त्रिदोष सप्तधातू और तीन मल इनका संतुलन होना ही स्वास्थ्य रक्षा मानी जाती है। शरीर में रोग विजातीय द्रव्य या विष का परिणाम होता है। रोग के समूल नाश के लिये आवश्यक है कि उस विष को बाहर निकालकर शरीर की शुद्धि की जायें और इसका सबसे उत्तम उपाय उपवास ही है। उपवास द्वारा प्राण शक्ति को अवकाश मिलता है, तो वह शीघ्र शरीर के सुधार और निर्माण में जुट जाती है।

अच्छी सेहत और मानसिक शांति के लिये एक बार ही आहार लेके संतुष्ट होना चाहिये। पहले लोग सौ, एक सौ दस उम्र तक स्वस्थ और सशक्त रहते थे। रोगों का नाम भी उनको पता नहीं था। इसलिये नीतिकार भी कहते हैं-

आधा भोजन कीजिये दुगुना पानी पिवे।
तिगुना श्रम, चौगुनी हँसीं वर्ष सवासो जीवे ।।

पथ्य-अपथ्य का रखें ध्यानः आज तो औषधी पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन पथ्य और अपथ्य के बारे में नहीं बताया जा रहा है। कहीं कहीं उसके हानिकारक तत्वों को न जानकर अंडे को भी खाने के लिये डॉक्टर लोग बता रहे हैं । लेकिन उसमें आठ प्रकार के विष होते हैं , जिससे कई प्रकार के रोगों के शिकार बन जाते हैं ।

पथ्य सेवन का सही तरह से पालन करेंगे तो औषधी का प्रयोजन कम हो जाता है और अपथ्य सेवन करें तो चिकित्सा का प्रयोजन ही नहीं रहता। पथ्यापथ्य सेवन का विवेक

रखना महत्त्वपूर्ण है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी ने हमें मूलाचार पढ़ाते समय आहार के बारे में बताते हुये कहा था, आहार ही हमारी औषधी है और जब भी हम बीमार पड़ते हैं तब हमें निसर्गोपचार करना चाहिये, तुरंत औषधी की ओर नहीं जाना चाहिये।

शुद्ध जल, शुद्ध आहार, शुद्ध हवा इसी से मन को शांति मिल सकती हैं।

अस्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्।

शुद्ध जल ही अमृत, औषध है और उमें आरोग्यदायी गुण हैं, लेकिन बिस्लेरी, आर.ओ पानी और जल शुद्धिकरण के पानी से हार्ट अटैक, शरीर में कमजोरी, सिरदर्द की परेशानियाँ होती रहती हैं। यूरोपीयन देशों में इसकी बंदी है।

औषधी की शुद्धता महत्त्वपूर्ण है। अगर औषधी के नाम पर सुखी होने के लिये अनेक जीवों को संहार करके जो दवा बनायी जाती है वो हमारे लिये बहुत हानिकारक रहती है। इसलिये जैनाचार्यों ने कल्याणकारक आदि जैन आयुर्वेदिक ग्रंथों में मद्य, मांस, मधु का प्रयोग नहीं बताया केवल वनस्पति, खनिज क्षार रत्नादिक पदार्थों का ही औषधि में उपयोग बताया गया है। एक की हिंसा दूसरे की रक्षा धर्म के लिये सम्मत नहीं है। शरीर स्वास्थ्य आत्म स्वास्थ्य के लिये है, इंद्रिय भोग के लिये नहीं है। आहार के समान औषधि का भी परिणाम मन के त्रिगुण (सत्व-रज-तमो) पर होता है।

आयुर्वेद संस्कृति की ओर लौटेंः आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी ने भारतीय प्राचीन आयुर्वेद के बारे में बोलते हुये कहा था-आयुर्वेद ग्रंथों में हजारों वर्ष पूर्व भी शरीर की शल्य चिकित्सा होती थी। यह जो प्लास्टिक सर्जरी है वह आज की नहीं है प्राचीन भारत में भी होती थी।

अविष्कार भारत का ही है, विदेश का नहीं। इसलिये आयुर्वेद संस्कृति की और लौटना चाहिये और एलोपैथी की परतंत्रता एवं आर्थिक हानि से बचना चाहिये।

आयुर्वेद भारत का प्राचीन शास्त्र है। आयुर्वेद जीवन विज्ञान है। आयुर्वेद में निरोगी होकर जीवन व्यतीत करना ही धर्म माना है। दुनिया में आयुर्वेद ही एकमात्र शास्त्र या चिकित्सा पद्धती है जो मनुष्य को निरोगी जीवन देने की गारंटी देता है। विश्व में आयुर्वेद से ही आरोग्य क्रांति हो सकती है।

सर्वेभवन्तु सुखिनाः संतु सर्वे संतु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु कश्चिद् दुःखमापनुयोत् ।।

हे करुणामय भगवान विश्व के सभी जीव सुखी रहे। निरोगी रहें, जीव सचरित्रमय, सज्जनमय, दृष्टिगोचर होवे कोई कभी दुःख को प्राप्त न होवे।

बोतलबंदी पानी कितना अहिंसक

❊ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ❊

रात्रि भोजन त्याग, प्रतिदिन देवदर्शन और पानी छानकर पीना ये जैनी के चिह्न माने गये हैं। इस लेख में हम पानी छानकर पीने की अपनी आदर्श कुलाचार परंपरा के बारे में चर्चा करने जा रहे हैं। बुंदेलखंड में एक पुरानी कहावत है- **गड़ई-डोर-छन्ना, कनक कलेऊ भन्ना ये जैनी के चिह्न यानि हमारी पहचान छने पानी का उपयोग करने वालों में जगजाहिर थी।**

हम अहिंसा धर्म को मानने वाले हैं। जैन धर्म के अनुसार पानी छानने की जो भावना है वह जीव-दया की भावना है। जैन धर्म के अनुसार जल में त्रस जीव भी होते हैं। विज्ञान के अनुसार एक बूंद पानी में 36450 जीव होते हैं, जल से बाहर उन त्रस जीवों जीवित की संख्या बहुत ज्यादा है। हमें पानी पीना ही है, पानी के बिना रहना संभव नहीं है तो एक व्यवथा बताई गयी कि जीवदया का पालन करने की भावना से आप जल के स्रोत से जल को निकालो। उसे गाढ़े छन्ने से छानो और बड़े इत्मिनान के साथ आप पानी की जीवाणी करो यानि वो पानी के छन्ने को छने पानी से धोकर वापस जलाशय से ले जाओ और उसे उडेल दो और इसके पीछे की जो भावना है वह है- जीव दया का अनुपालन ! इस दृष्टि से सच्चे अर्थो में पानी छानने का लाभ उनको मिलता है जो कुआँ, नदी या ऐसे जलाशयों से जल लाते हैं, जहाँ ध्यानपूर्वक जीवाणी पहुँचाई जा सके। **जीवाणी को बुंदेलखंड में बिलछानी भी कहते हैं।**

छने जल की मर्यादा एक मुहूर्त अर्थात् 48 मिनट है। इसके बाद उसमें पुनः त्रस जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। अतः पुनः छानना चाहिये। छने जल को लौंग, सौंफ आदि से प्रासुक किया जाता है तो उसकी मर्यादा छः घंटे हों जाती है, किन्तु छः घंटे के बाद वह अमर्यादित हो जाता है। अर्थात् उसमें त्रस जीवों की उत्पत्ति प्रारंभ हो जाती है। उबले जल की मर्यादा 24 घंटे होती है। पानी छानने की विधि का पालन करना पाइप लाइन, ट्यूब वेल, हेंडपम्प के साथ सम्भव नहीं है इसीलिये बिलछानी के नियम का कठोरता से पालन करने वाले जैन साधु और व्रती कूप के जल का ही उपयोग करते हैं।

आज डॉक्टर स्वास्थ्य की दृष्टि से छने पानी के पीने के लिये जोर देते हैं , जबकि जैन दर्शन स्वास्थ्य के साथ जीवदया का भी पालन करने का निर्देश करता है। कहा भी गया है कि **पानी पिओ छानकर गुरु मानो जानकर।** पानी छानकर पीने की आदर्श परंपरा आज हमारी जैन समाज से विलुप्त सी होती जा रही है जलगालन विधि के बारे में तो आज की ज्यादातर हमारे धार्मिक आयोजनों में भी बिना छने पानी का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है और यह सब उस आयोजन में सान्निध्य प्रदान कर रहे संतों और विद्वानों को भी पता होता है। निश्चित रूप से यह बहुत ही चिंतनीय है। आज धार्मिक आयोजनों में बोतलबंद पानी का प्रचलन खूब हो गया है, यहां तक देखा गया है कि एक तरफ छना पानी रखा हो दूसरी तरफ बोतल बंद/आर.ओ का पानी

तो लोग बोतल बंद/आर.ओ का पानी पीना शान समझते हैं ? ऐसे लगता है जैन समाज ने बोतल बंद पानी को शुद्ध मान लिया हो ! बहुत से पंचकल्याणक, गजरथ, विधानों आदि में भी इनके पात्र यह पानी खूब धड़ल्ले से पीते हैं ? इस प्रवृत्ति से पानी छानकर पीने की हमारी कुलाचार परम्परा पर आघात पहुँच रहा है। **मैंने स्वयं देखा इधर गजरथ फेरी चल रही है और उधर उस फेरी में चल रहे महोत्सव के पात्र एवं अन्य लोगों का आयोजन समिति द्वारा बोतलबंद पानी की बोतलों पीने के लिये बांटी जा रही हैं। फेरी में चलते हुये ही खूब धड़ल्ले से बोतलबंद पानी पिया जा रहा है सब देख ही नहीं बल्कि बोतलबंद पानी पाने के लिये होड़ भी लगी है, सबकी नजर में है पर बोल कोई नही रहा है।** ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। धार्मिक आयोजनों की सभा, सेमिनार, रैली, जुलूस शोभायात्रा आदि में बोतल बंद पानी का चलन आम हो चुका हैं। आपने भी ऐस धार्मिक आयोजन देख होगें जिसमें नगर में शोभायात्रा निकलने पर बोतलबंद पानी की खाली बोतलें शहर में इधर-उधर पड़ी आपकी शोभायात्रा, जुलूस की निशानी बता रहे होंगे। जैन समाज की विभिन्न धार्मिक बैठकों में भी अब बोतल बंद पानी/आर.ओ का पानी का प्रयोग फैशन सा बन गया प्रतीत होता है। धार्मिक आयोजन में जो भोजन होता है उसमें भी इसी पानी के प्रयोग का प्रचलन बढ़ रहा है। बड़े-बड़े धार्मिक महोत्सवों में तो अब यह बोतल बंद पानी सस्ते दामों में भी बांटकर पुर्ण्याजन किया जाने लगा है।

पानी छानकर पीने व जलगालन विधि में आई इस विकृति पर हमें गंभीरता पूर्वक चिंतन करना होगा। कम से कम धार्मिक आयोजनों में तो अनछने जल का प्रयोग बंद होना चाहिये। इसके लिये हमारे आराध्य सभी पूज्य मुनिराजों, माताजी, विद्वानों को अवश्य ध्यान देना होगा अन्यथा आने वाली पीढ़ी तो इससे अनजान ही हो जायेगी।

गीत

वामादेवी का दुलारा

संस्कार फीचर्स

पारस नाम बड़ा प्यारा, दुखियों का सहारा है
जिसने प्रभु का ध्याया, सच्चा सुख पाया
प्रभु संकट निवारा है
अतिशयकारी स्वामी प्रभु अंतरयामी
अंतरिक्ष पारसनाथ त्रिभुवन के नाथ
दुख हरण प्रभु का नारा है।
शरण है त्राता सुख शांति दाता
वामादेवी का दुलारा है।

राजगृह शिल्प में अष्ट मातृकाएँ

❊ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन मनुज, इंदौर ❊

जैन शिल्पशास्त्रों में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चार दिशाओं और ईशान, आग्नेय, नैऋत्य वायव्य, चार विदिशाओं की आठ देवियों का वर्णन मिलता है। जिनकी अष्टमातृकाओं के नाम से प्रख्याति है। इनके नाम-इन्द्राणी, वैष्णवी, कौमारी, बाराही, ब्रह्माणी, महालक्ष्मी, चामुण्डी और भवानी हैं। इनमें से आदि की चार, चार दिशाओं की ओर शेष चार विदिशाओं की देवियां हैं।

राजगृह (बिहार) में प्रचुर मात्रा में और प्राचीनतम जैन शिल्प प्राप्त हुआ है। यहाँ के विपुलाचल पर्वक से शक सम्वत् 1572 का शिल्पित शिलाफलक प्राप्त हुआ है, जिसमें अष्ट मातृकाओं का अंकन बड़ी कुशलता एवं सूक्ष्मता से किया गया है। यह शिलाफलक 24 इंच 8 से.मी. चौड़ा और 6 इंच 8 सेमी. ऊँचा है। वर्तमान में यह दिगम्बर जैन लाल मंदिर, राजगीर के संग्रहालय में प्रदर्शित है।

भवानी-माहेश्वरी-वृषभवाहना देवी, (ईशान दिशा-पूर्वोत्तर कोण)- यह पूर्वोत्तर कोण की देवी है। शिलाफलक पर दर्शन (दर्शनार्थी) के बायें ओर अन्य देवियों के सबसे दाहिने किनारे पर यह देवी अंकित है। यह वृषभ (बैल) पर सुख-मुद्रा में आसीन है। मुखमंडल बहुत खंडित होने के कारण त्रिनेत्र और मस्तक पर चन्द्रमा नहीं दिखता है जो कि (प्रतिष्कातिलक, पृष्ठ 366 के अनुसार) इस देवी के होना चाहिये। कानों में कर्णाभरण, केश-सज्जा और कानों के नीचे से स्कंन्धों पर आगे की ओर दो-दो लटें लटकती हुई स्पष्ट अंकित हैं। इस देवी के गले में मोतियों का गलहार जिसमें बीच में रत्न जड़ित टिकुली का अंकन है। ऐसा ही गलहार राक्षस वाहनी चामुंडा के अतिरिक्त सभी देवियों के गले में उत्कीर्णित है। इसकी दो भुजाएँ हैं, दोनों में सरस्वती के समान वीणा सँभाले हुये हैं। भुजाओं के बाजूबन्द कलात्मक हैं। धोती कमर से पैरों में एक एक पैजणियाँ शिल्पित है। मेखला तीन लड़ी की पहने हुये दिखायी गयी है। किन्तु शेषनाग की मेखला नहीं है, जो कि माहेश्वरी के होना चाहिये। बाएँ स्कन्ध पर से दो सूत्र का एक यज्ञोपवीत जैसा आभरण लटकता हुआ बाएँ स्तन पर से बाई जंघा पर और वहाँ से दाहिनी जंघा पर होते हुये दाहिने कूल्हे पर छिप गया अंकित है। ऐसा ही चामुंडा के अतिरिक्त सभी मातृकाओं के लिये उत्कीर्णित है। यह देवी वृषभ पर आसीन है। बायाँ पैर मुड़ा हुआ है और दायां वृषभ पर लटका हुआ है। बैल बैठा हुआ उत्कीर्णित है।

ब्रह्माणी देवी हंसवाहना, आग्नेय दिशा (पूर्व-दक्षिण कोण)- यह पूर्व दक्षिण कोण आग्नेय दिशा की देवी है। शिलाफलक पर दर्शक के बायें से द्वितीय और भवानी के देवी के बायीं तरफ शिल्पित है। यह देवी एक पक्षी पर आरूढ है पक्षी सम्भवतः हंस है। अन्य देवियों की तरह सभी अलंकरणों का अंकन है। दोनों स्कन्धों पर आगे की ओर एक-एक लट भी लटक रही है। यह चतुरानना देवी है, पीछे का मुँह शिला में विलीन हैं। सामने और बायीं ओर का मुंह खंडित है। दाहिनी तरफ का मुँह स्पष्ट है। केश शिखाएँ ऊपर को उड़ती सी अंकित हैं जो कुछ रूढ़ हो गयी है।

इस देवी की भुजाएँ दो ही हैं। बायीं भुजा बाएँ घुटने पर रखी है, जो खंडित हैं और दाहिनी वक्ष की ओर गयी हैं। यह भी खंडित है। जिससे ज्ञात नहीं हो पाता कि हाथ में क्या लिये हुये है।

महालक्ष्मी- त्रिपुरा देवी (नैऋत्य दिशा-दक्षिण पचिम कोण)- यह देवी के बाएँ से तृतीय ब्रह्माणी देवी के बायें किसी पशु पर आसन उत्कीर्णित है। इसके वाहन बैल जैसा कोई पशु है, इससे सुगमता से मेरे द्वारा पहचाना नहीं जा सका। प्रतिष्ठा तिलक के अनुसार इसका वाहन उल्लूक और मुख्य आयुध गदा है। यहाँ इस देवी का दाहिना हाथ खाली है और बाएँ हाथ में त्रिशूल आयुध धारण किये हुये दर्शाया गया है। गले में कंठी पहने अंकित है। पूंछ भी नंदी जैसी पतली और लम्बी है, किन्तु स्कन्ध गाय या भैसे की तरह छोटा है, जबकि भवानी के वाहन वृषभ का स्कन्ध बड़ा है। इस पशु की बैठक बैल की तरह है। इस मातृका के सभी अलंकरण अन्य देवियों जैसे ही शिल्पित हैं। दाहिनी हथेली में रेखाओं का अंकन स्पष्ट है।

वैष्णवी गरुड़वाहना (दक्षिण दिशा)- यह दक्षिण दिशा की देवी है, प्रारंभ से चतुर्थ और त्रिपुरा के बाएँ एक पक्षी पर सुखासन में आरूढ़ वैष्णवी मातृका का शिल्पन है। यह एकानना और चतुर्भुजा देवी है। अन्य देवियों के समान सभी अलंकरणों से अलंकृत है। इसके भी कानों के नीचे केशों की लटें लटक रही हैं। इस देवी की दाहिनी एक भुजा दाहिनें घुटने पर खुली हुई हथेली की स्थिति में और दूसरे हाथ में शूल या अंकुशनुमा कोई आयुध लिये हुए उत्कीर्णित है। बायीं तरफ का एक हाथ बाएँ घुटने पर रखे हुये, हथेली में शंख धारण किये हुये अंकित है और बायीं तरफ के ही दूसरे हाथ में गदानुमा कोई मोटा आयुध लिये हुये हैं, जो खंडित है। वैष्णवी मातृका एक विचित्र पक्षी पर आरूद अंकित है। इस पक्षी का मुंह, हाथ और पेट मनुष्य के समान है पैर पक्षियों जैसे हैं, व्यवस्थित केशविन्यास, कानों में बाली, भुजाओं में साधारण भुजबंद और पेट में नाभि का भी कुशलता से अंकन है। यह वाहन दोनों हाथों में अंजलि बांधे हुये पक्षी जैसे पैरों के बल बैठा हुआ दर्शाया गया है। इसके दोनों तरफ दो पंख भी अंकित है।

इन्द्राणी-गजवाहना (पूर्व दिशा)- इन्द्राणी को पूर्व दिशा में स्थापित किया जाता है। यह देवी प्रारंभ से पंचम और वैष्णवी से बाएँ ऐरावत गज पर सुखासन मुद्रा में अंकित है। इसका मुखमंडल बहुत खंडित है। ऊपर कुछ केश दृष्टिगत होते हैं जो सज्जित हैं। सभी अलंकरण लगभग अन्य देवियों के समान ही हैं। इस देवी के केशों की लटें लटकती हुई नहीं दिखायी देती हैं। बायां हाथ मुड़े हुये बायें पैर पर रखे हुए हैं, दाहिने हाथ से एक बालक को वक्ष से लगाये हुये उकरित है। इसका गज भी कलात्मक है। गज के सभी अंग स्पष्ट है। यह बैठा हुआ है तथा इसके मस्तक पर एक लम्बा त्रिपुंड दर्शाया गया है। देवी का बायां पैर मुड़ा हुआ और दाहिना पैर गज के ऊपर से लम्बित है।

कौमारी-मयूरवाहना (प्रतीची दिशा)- इस मातृका की स्थापना प्रतीची दिशा में की जाती है। शिला फलक पर इसका शिल्पन इन्द्राणी के बायीं ओर और (दर्शक के) बाएँ से छठवें स्थान पर किया गया है। इस देवी का मुखमंडल पूरी तरह खंडित है, लेकिन शिलाखंड पर बने निशान से प्रतीत होता है कि यह एकाधिकानना देवी है। जैन शिल्पशास्त्र आचार दिनकर (बालचन्द्र जैन, जैन प्रतिमा विज्ञान, पृष्ठ 115) में इसका षण्मुख कहा गया है। इसके कान, गले, भुजा, हाथ, पैर और आदि के अलंकरण अन्य देवियाँ जैसे ही हैं। यह द्विभुजा देवी है।

इसका बायां हाथ शूल जैसा कोई आयुध धारण किये तथा दाहिना हाथ दाहिने पैर के घुटने पर रखे, हथेली खोले हुये दर्शाया गया है। इसके वाहन मयूर को उसकी कलगी मोरपंखों के अंकन से पहाना जा सकता है।

बाराही वारहवाहना (उत्तर दिशा)- उत्तर दिशा की देवी वाराही को कौमारी मातृका के बाएँ और दर्शक के दाहिने से द्वितीय जंगली बारह पर आरूढ़ शिल्पित किया गया है। इस देवी का मुख वाराह के मुख जैसा अंकित है। इसके कर्णोत्पल नहीं है शेष अलंकरण अन्य देवियों के समान ही हैं। यह द्विहस्ता देवी दाहिना हाथ सामने को उठाये हुये शायद वरद मुद्रा में किये हैं, हस्त खंडित है और बाएँ हाथ में कोई बड़ी सी वस्तु लिये, मुंह के पास किये हुये जैसे खा रही हो, शिल्पित है। शूकर बैल जैसा ही बैठा हुआ है, उसकी छोटी सी पूंछ बगल में मुडी हुयी अंकित है।

चामुंडा-राक्षसवाहना, (वायव्य-उत्तरपश्चिम कोण)- चामुंडा देवी का उत्कीर्णन अन्य देवियों से बाएँ अन्तिम कोने पर किया गया है। यह लेटे हुये, राक्षस के ऊपर सुखासन में आरूढ है। इस देवी का अंग-विन्यास अन्य मातृकाओं की तरह ललित व सुडोल न होकर नामानुरूप कुछ वीभत्स है। इसके मात्र कर्णाभरण, हाथों -पैरों में एक-एक कड़ा, पैजनियों, कटिमेखला और धोती सामान्य अंकित है। इसके शरीर से ज्वालाएँ सी निकल रही हैं। आधा पेट अंदर को धंसा हुआ है। इसकी भुजाएँ दो ही हैं या चार है यह स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। बाएँ हाथ में दंड या अन्य कोई आयुध को (सम्भवतः) सर्प से लपेटकर अपने मुंह के नीचे किये हुये है। दाहिने हाथ में खड्ग धारण किये हुये अंकित है। इस देवी के शरीर में सर्प जैसी कुछ वस्तु लपेटी हुई अंकित है। इस देवी के वाहन राक्षस को जमीन पर दाहिना हाथ और बायीं कुहनी टेककर तथा बायीं हथेली का सिर को सहारा दिये औंधे मुँह लेटे अंकित किया गया है। राक्षस की जटाएँ ऊपर को उड़ रही विकराल हैं, इसके भी हाथों में दो-दो कड़े, कमर में कमरबंद और कमर से जाँघों तक वस्त्र पहने साधारण ढंग से शिल्पित किया गया है।

अष्टमातृका शिलालेख- उक्त शिलाफलक पर देवियों के ऊपर दो पंक्तियों में तथा नीचे तीन पक्तियों में एक लेख उत्कीर्णित हैं। इसका मुझसे जो पाठ हो पाया, वह इस प्रकार है- संवत् 1707 शाके 1572 प्रवृत्त माने। आश्विन शुक्लपक्षे। त्रयोदश्यायां। शुक्रवासरे। श्री विहारवास्तव्येन। महती याः माः जातीय। वोप गोत्रेण स. तुलसीदास तत्भार्यां वण नि.ऽतत्रनयेनस सयामेण गोवर्धनेनसहत्री राजगृहविपुलगिरौ साद ता संघवासयामाणा पं. कल्याणकीत्युपदेशेन श्रीभवतुः 1 लीखत रतन सीस.. पा.. त.. स.. ग्राम मुकाम राजगृही।

उक्त शिलालेख से ज्ञात होता है कि विक्रम संवत् 1707 शक संवत् 1575 में इन अष्टमातृकाओं की प्रतिष्ठा करवाकर राजगृह के विपुलाचल पर्वत पर स्थापित किया गया था और शिल्पकार भी राजगृह का ही था। प्रस्तुत अष्टमातृकाओं के शिल्पन में मातृका क्रम का ध्यान नहीं रखा गया है। आदि की तीन भवानी ब्रह्माणी और महालक्ष्मी तीन विदिशाओं की उनके बाद की चार वैष्णवी, इन्द्राणी, कौमारी और वाराही क्रमशः उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की देवियाँ हैं तथा अंत की चामुण्डा नैऋत्य कोण विदिशा की देवी है। उक्त शिल्पाकृति की रजि. संख्या एमएल/बी.एच. 25 है।

कैसे क्या थे मूकमाटी रचयिता

❋ निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागरजी महाराज ❋

विश्व को भारत ने ही गुरु शिष्य परम्परा से अवगत कराया है और आचारात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्त्रधारा प्रवाहित की है। उसी परम्परा का निर्वाह मूकमाटी रचयिता बाल ब्रह्मचारी आचार्य श्री ने किया। उनकी शिष्य परम्परा समुदाय में 350 पिच्छीधारी साधु साध्वी 500 ब्रह्मचारी भाई व लगभग 800 ब्रह्मचारी बहिनें व हजारों प्रतिमाधारी श्रावक श्राविका रहे हैं। भारतीय संस्कृति के अंतर्गत श्रमण संस्कृति के प्रज्ञासम्पन्न मूकमाटी रचयिता दुनिया के संत समाज के शीष पर रहे हैं। तीर्थंकर महावीर के संदेश **जिओ और जीने दो** को भारत के कोने कोने में फैलाने हेतु भागीरथी प्रयास करने वाले तपस्वी सम्राट का नाम रहा है मूकमाटी रचयिता आचार्य श्री।

ध्यान योगी महामनीषी, आध्यात्मिक व राष्ट्रहित चिंतक सर्वोदयी संत, स्वाबलंबी जीवन जीने वाले युगपुरुष विराट व्यक्तित्व के धनी महामनस्वी, साहित्य शिल्पी रहे मूकमाटी रचयिता। उन्होंने अपनी चिंतन साधना से प्रसूत यह महाकाव्य लिखकर अपने भाव चेतना को अंतर का हृदय का स्पंदन बनाकर जगत को उसका परिचय करा दिया। उन्होंने अपनी कथनी व करनी में एक्य स्थापित कर समूची मानव समाज को अपने आंतरिक विचारों से परिमार्जित किया। **मूकमाटी रचयिता** शब्दों के ऐसे जादूगर रहे जो शब्द अभिव्यक्ति और संपेक्षण के मनमोहक परिधान से नये अर्थ प्रदान करते रहे।

अनुशासन व अनुकम्पा की जीवंत मूर्ति रहे मूकमाटी रचयिता जिन्होंने हिन्दी व संस्कृत भाषा साहित्य के अनेक शतक/कविता संग्रह/प्राचीन आचार्य प्रणीत ग्रंथ अनुवाद एवं 675 हाइकू (जापानी छन्द) की रचना की एवं प्राकृत अपभ्रंश आदि बहुभाषाओं के संरक्षण की वैचारिक क्रांति पैदा करने का माहौल व वातावरण निर्मित किया मूकमाटी रचयिता ने।

जिनके आशीष से जानलेवा बीमारियों से ग्रसित सैकड़ों लोगों का रोगमुक्त होना, हजारों लोगों की परेशानी से छुटकारा पाना, सैकड़ों साधकों द्वारा मार्गदर्शन दिशा निर्देश प्राप्त कर समाधि सल्लेखना धारण करना यह सब मूकमाटी रचयिता की कृपा का प्रतिफल रहा है। हजारों शिष्य, लाखों अनुयायी, करोड़ों श्रद्धालु उस महान आत्मा को, सिद्धत्व पाने के लिये श्रीराम, श्री हनुमान, श्री महावीर, श्री कुंदकुंद जैसे सुबह शाम भजते रहे हैं जिनकी कालजयी रचना मूकमाटी पर 283 समालोचना सहित 4 डीलिट् 50 पी.एच.डी. व अनेक प्रकार के शोध प्रबंध हो चुके हैं।

पूज्य गुरुदेव के दर्शनार्थ अनेक व्यक्तित्त्व महामहिम राष्ट्रति महोदय, माननीय प्रधानमंत्री महोदय, राज्यपाल महोदय, राजदूत, कानूनविद, शिक्षाविद, धर्माचार्य, कुलपति, जिलाधीश, आई.जी, न्यायाधीश, साहित्यकार, चिकित्सक व प्रशासनिक अधिकारी आदि श्री चरणों में आकर, उनसे देश समाज व विश्वशांति के उन्नयन में दिशा निर्देश प्राप्त करते रहे हैं। प्राचीन भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रति जनता में जागरुकता, स्वाभिमान जागृत करने एवं भारतीय शिक्षा के मूल तत्त्व को पुर्नस्थापित हेतु कन्या आवासीय विद्यालय प्रतिभास्थली ज्ञानोदय

विद्यापीठ, महाविद्यातीन प्रतिभा प्रतीक्षा की स्थापना, राष्ट्रभाषा हिन्दी, शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी (इंग्लिश) नहीं मातृभाषा हो, इंडिया नहीं भारत बोलो एवं राष्ट्र सहित सही योग्य व्यक्ति के चुनाव हो शत प्रतिशत मतदान हो जैसे विचारों को अवगत व क्रियान्वन किया मूकमाटी रचयिता ने।

पीड़ित मानव सेवा के लिये तथा चिकित्सा व शिक्षा क्षेत्र व्यवसाय से मुक्त कराने के लिये भाग्योदय तीर्थ अस्पताल सागर, शांतिनाथ विद्यासागर आरोग्य केन्द्र बहोरीबंद एवं पूर्णायु आयुर्वेद अस्पताल व महाविद्यालय जबलपुर की स्थाना हुई मूकमाटी रचयिता के आशीर्वाद से। उन्होंने प्राचीन शिल्प कला, स्थापत्य कला व मूर्तीकला को जीवित रखने के लिये नए पाषाणयुक्त मंदिर निर्माण जैसे कुंडलपुर, अमरकटंक, बीनाबारहा, नेमावर, डोंगरगढ़, आदि एवं प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धार के लिये प्रेरणा दी। तीर्थ हमारे प्राण हैं, पूर्वजों की धरोहर हैं जिन्हें अक्षुण्ण बनाऐ रखना हमारा कर्त्तव्य है इसके उदाहरण पटनागंज, पनागर, बहोरीबंद, रामटेक, नैनागिर, देवगढ़ आदि है।

स्वावलंबन स्वरोजगार हेतु श्रमिक व कैदियों जेल वाले के शोषण रोकने हेतु देश में सैकड़ों हथकरघा व भारतीय हस्तशिल्प केन्द खुलवाकर अहिंसा का प्रचार प्रसार का बीड़ा उठाया मूकमाटी रचयिता ने। गोधन राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी है गौशालाऐं जीवित कारखाने हैं, का संदेश देकर जीवदया क्षेत्र में 140 गौशालाओं में एक लाख से ज्यादा पशुधन संरक्षण व शरण प्राप्त करवाकर **भारत में माँस निर्यात बंद हो** का आव्हान किया। फलस्वरूप मध्यप्रदेश सरकार ने आचार्य श्री के नाम पर अनेक जीवदया योजनाऐं चालू कर दीं व लाखों रूपये के गौ सेवक पुरस्कार प्रतिवर्ष वितरित करने प्रारंभ कर दिए।

मूकमाटी रचयिता की प्रेरणा से, लगभग 500 जैन पाठशालाओं द्वारा जैन बालक बालिकाओं को ज्ञान व धार्मिक संस्कार (वर्तमान आधुनिक पद्धतियों भी सम्मलित) प्राप्त कराके प्रभु पूजा भक्ति आराधना आदि की विधि सिखाई जा रही है, विनय आदि मानवीय गुणों का विकास करने हेतु। शासकीय क्षेत्र के प्रशासन क्षेत्र में, सेवाओं में जैस (आई.ए.एस), (आई.पी.एस), (पी.एस.सी) आदि में स्वच्छ छवि वाले अधिकारियों को तैयार करवाने में पूज्य गुरुदेव का विशेष मार्गदर्शन, प्रेरणा रही है।

हानिकारक अशुद्ध हिंसक, खान पान, पैक बंद, फास्टफूड खाद्य सामग्री से दूर रहने के लिये व व्यस्थित जीवन शैली शाकाहार को अपनायें जाने के लिये प्रवचनों में समाहित अनेक गूढ़ रहस्यों को बताकर भारतीय संस्कृति का महत्व बताया। उन्होंने जीवन को संयमित रखने, जीवन की सत्यता को पहचानने हेतु पंक ये पंकज बनने की शक्ति अर्जित करने को प्रोत्साहित किया व उच्च स्तरीय समाधि सल्लेखना के प्रयोग से जग को हतप्रभ कर दिया अंतिम क्षणों में।

ऐसे तपो दीप्त मूकमाटी रचयिता, सिंह के समान निस्संग, पर्वत के समान अचल, जल के समान निर्मल, चन्द्रमा के समान सौम्य तथा पृथ्वी के समान क्षमावान रहे हैं। उन्होंने अपनी वाणी सद्कार्य त्याग व तपस्या से लाखों लोगों के मन, जीवन तथा परिवार में शील, सदाचार, श्रद्धा, समरसता की प्रतिष्ठा की। ऐसे परम आदर्श संत शिरोमणी के व्यक्तित्व को नमन नमन नमन।

चलो देखें यात्रा

जयपुर (मध्यवर्ती शहर)

जयपुर गुलाबी शहर के नाम से विख्यात महाराजा जयसिंह द्वारा सन् 1728 में बसाया गया सुनियोजित शहर है। चार दिवारी के बाहर का आधुनिक जयपुर पारम्परिक शिल्पकला तथा वैज्ञानिक युग के आधुनिक वास्तुकला दोनों का समन्वय है।

राज जयसिंह स्वयं एक ज्योतिषी थे, उन्होनें सिटी पैलेस के पास जंतर-मंतर बनवाया था। यहाँ पर ही सात मंजिला चंद्र महल एवं गोविंद देवजी का मंदिर भी दर्शनीय एवं मनमोहक है।

अन्य दर्शनीय स्थानों में जयगढ़ किला, नाहर गढ़ किला, आमेर किला, गेटोर, गलता, राजगढ़, जयपुर के पास प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। लाईट एण्ड साउंड शो शाम को केसर क्यारी अमर पैलेस में दिखाया जाता है। सम्पर्क 0141-2530844 सिटी टूर के लिये सम्पर्क 2375466

प्रमुख जैन मंदिर

संघीजी का जैन मंदिर सांगानेर (अतिशय क्षेत्र एवं धर्मशाला)

चूलगिरि अतिशय क्षेत्र (धर्मशाला एवं भोजनालय भी)

खजांची की नसिया, चांदपोल गेटबाहर, संसार चंद रोड

आवासः राजस्थान सरकार के होटलों में गणगौर, स्वागतम सीज प्रमुख है। फोन 2202586 आर.टी.डी.सी जयपुर भ्रमण की सारी व्यवस्था करती है।

समीपवर्ती स्थलः सांगानेर 11, पदमपुरा 35, चंद्रगिरि वैनाड 15, चुलगिरि 12, जग्गा की बावडी 10, झाझी रामपुरा 77, महावीर जी 140 किमी।

मार्गदर्शनः कीर्ति स्तंभ जाने के लिये आमेर स्थित पार्श्वनाथ धाम के सामने गली से छीला बावड़ी होकर 2 किमी. पर जिनालय में मूलनायक भगवान विमलनाथ की प्रतिमा स्थापित है।

आगम दर्शन

जीवस्थान खंड में मार्गणायें

वेद मार्गणा- इस मार्गणा के प्रसंग में स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी और अवगतवेदी जीवों के अस्तित्व को प्रकट करते हुये यह कहा गया है कि इनमें स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी असंज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक तथा नपुंसकवेदी एकेन्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक होते हैं। इसके आगे सब जीव अवगतवेद (वेद से रहित) होते हैं।

कषाय मार्गणा- कषाय मार्गणा में क्रोध कषाय, मान कषाय, लोभ कषाय और अकषायी जीवों के अस्तित्व को दिखाकर उनमें कौन किस गुणस्थान तक होते हैं इसे स्पष्ट करते हुये कहा गया है कि क्रोध कषायी, मानकषायी और मायाकषायी ये एकेन्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक लोभकषायी एकेन्द्रिय से लेकर सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान तक तथा अकषायी जीव उपशांत कषाय, क्षीणकषाय, संयोग केवली और अयोग केवली इन चार गुणस्थान में होते हैं।

ज्ञान मार्गणा- ज्ञान मार्गणा की प्ररूपणा में मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी, और विभंगज्ञानी इन तीन अज्ञानियों के साथ अभि निबोधिक ज्ञानी आदि पाँच सम्यग्ज्ञानियों के अस्तित्व को दिखलाकर उनमें यथा सम्भव गुणस्थानों के सद्भाव को प्रकट किया गया है। सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में अभि निबोधिक आदि तीन सम्यग्ज्ञानों को मतिअज्ञान आदि तीन अज्ञानों में मिश्रित कहा गया है।

संयम मार्गणा- इस मार्गणा के प्रसंग में सामायिक-शुद्धि संयत, छेदोपस्थापना-शुद्धि संयत, परिहारविशुद्धिसंयत, सुक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयत व यथाख्यात विहार-शुद्धिसंयत इन पाँच संयतों के साथ संयतासंयत और असंयत जीवों के अस्तित्व को प्रकट करके उनमें कहाँ कितने गुणस्थान सम्भव है, इसे स्पष्ट किया गया है।

दर्शन मार्गणा- इस मार्गणा के प्रसंग में चक्षु दर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधि दर्शनी और केवल दर्शनी जीवों के अस्तित्व को प्रकट करके उनमें सम्भव गुणस्थानों का उल्लेख है।

लेश्या मार्गणा- इस मार्गणा की प्ररूपणा करते हुये कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, पीतलेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ललेश्या इन लेश्या वाले जीवों साथ उस लेश्या से रहित हुये अलेश्या जीवों के भी अस्तित्व को व्यक्त करके उसने किसके कितने गुणस्थान संभव है, इसका विचार किया गया है।

भव्यत्व मार्गणा- यहाँ भव्यसिद्धि और अभव्यसिद्धि जीवों के अस्तित्व को दिखाकर आगे इनका गुणस्थान विषय विचार करते हुये कहा गया है कि भव्यसिद्धिक जीव एकेन्द्रिय से लेकर अयोगिकेवली तक और अभव्यसिद्धिक एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी मिथ्यादृष्टि तक होते हैं।

सम्यक्त्व मार्गणा- इस मार्गणा के प्रसंग में सम्यग्दृष्टि, क्षायिक सम्यग्दृष्टि, वेदक सम्यग्दृष्टि, उपशमसम्यग्दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि इनके अस्तित्व को दिखाकर उनमें कौन किस गुणस्थान तक संभव है, इसे स्पष्ट किया गया हैं।

संज्ञी मार्गणा- इस मार्गणा में संज्ञी और असंज्ञी जीवों के अस्तित्व को दिखाकर आगे यह स्पष्ट कर दिया है कि संज्ञी जीव मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं। असंज्ञी जीव एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक होते हैं।

आहार मार्गणा- इस मार्गणा के प्रसंग में आहारक-अनाहारक जीवों के अस्तित्व को यह प्रकट करते हुये आहारक जीवों का सद्भाव एकेन्द्रिय से लेकर सयोगकेवली तक बतलाया गया है। अनाहारक जीव विग्रहगति में वर्तमान जीव, समुद्घातकेवली, अयोगीकेवली और सिद्ध इन चार स्थानों में संभव हैं।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
नवम्बर 2024

पूजन कर लो पुण्य कमा लो

प्रथम-

भक्ति की धारा मे बहकर का
उपसर्गों के कष्ट निभाकर
कुछ संयम का धर्म निभा लो
पुजा कर लो पुण्य कमा लो ॥1॥

अर्चना जैन, वरायठा

द्वितीय-

भव सागर में हम रहते हैं
क्यों मगर से वैर रखते हैं
गर अरिहंत की भक्ति ना की
तो भव अपना व्यर्थ खोते हैं
भव का मूल्य सत्य समझ लो
पूजन कर लो पुण्य कमा लो ॥

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

भवसागर में भक्ति नौका
पार उतर लो अच्छा मौका
भक्ति में यह भव तो संभालो
पूजन कर लो पुण्य कमालो।

संभव जैन, सागर

वर्ग पहेली क्र. 300
अक्टूबर 2024 के विजेता

प्रथम : श्रीमती अनीता जैन, इंदौर
द्वितीय : श्रीमती इन्द्रा जैन, दिल्ली
तृतीय : राजकिंग जैन, भोपाल

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द अ ढ्ण् आ अ ल् अ र् ष् द्द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

विद्यादाता गुरु

आलोके जिनभानुना विरचिते ध्वान्तरस्य वा क्व स्थितिः ।।

बुद्धिमान मनुष्य सब समय सर्वत्र व्याप्त रहने वाले जिनेन्द्र भगवान के वचन रूपी उत्तम दीपकों की सामर्थ्य से सूर्य और चन्द्रमा के अगोचर अधोलोक के अंधकार को नष्ट कर वस्तु के यथार्थ स्वरूप को देखते हुये प्रभुत्व को प्राप्त होते हैं इसमें क्या आश्चर्य है ? क्योंकि तीन लोक में जिनेन्द्र रूपी सूर्य के द्वारा प्रकाश के उत्पन्न होने पर अंधकार का सद्भाव कहाँ रह सकता है ?

मौनं सर्वार्थसाधनम् ।।

उसी समय जिसका आसन कम्पायमान हुआ था ऐसा धरणेन्द्र अवधि ज्ञान से यह समाचार जान जिनेन्द्र की भक्तिपूर्वक वहाँ आया, सो ठीक ही है क्योंकि मौन सब कार्यों को सिद्ध करने वाला है।

किं न स्याद्गुरुसेवया ।।

और जो विद्याधरों का निवासभूत विजयार्ध नाम का पर्वत है वह भी उन दोनों ने धरणेन्द्र से प्राप्त किया सो ठीक ही है क्योंकि गुरुसेवाओं क्या नहीं होता है ?

विध्या लाभो गुरोर्वशात् ।।

दिव्य रूप को धारण करने वाले उस धरणेन्द्र ने इन दोनों भाइयों को अपने भाइयों के समान विश्वास दिलाकर महाविध्या प्रदान की सो ठीक ही है क्योंकि विद्या की प्राप्ति गुरु से होती है।

केरियर

ललित कला एवं व्यावसायिक कला

कला एक अमूर्त अवधारणा है । लेकिन आप इसे कैरीयर और अजीविका बना सकते हैं । ज्यादा से ज्यादा युवा कला की अवधारणा की ओर आकृष्ट हो रहे हैं क्योंकि वह महसूस करते हैं कि, यह विषय सीधे हृदय से जुड़ा है। इसमें चित्रकारी, पेंटिग, रेखांकन एवं मूर्ती कला शामिल है।

न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता: निस्संदेह स्वाभाविक अभियोग्यता तथा गुण इसके लिये महत्त्वपूर्ण है । लेकिन किसी संस्थान से प्रशिक्षण अथवा किसी विशेषज्ञ का निर्देशन कला के गुणों का परित्त्करण कर सकता है । व्यावसायिक कलाकार के पास अवसरों की बहुलता होती है । वह आर्ट स्टूडियो, विज्ञापन एजेंसी, प्रकाशन समुह, व्यवसायिक संस्थान विभाग इत्यादि में कार्य कर सकता है।

बहुत से व्यावसायिक कलाकार स्वतंत्र रूप से भी कार्य करते हैं।

परिश्रमिक: व्यवसायिक कलाकारों का पारिश्रमिक भिन्न-भिन्न होता है। वह उनके काम पर निर्भर होता है।

रोजगार संभावनायें: इस क्षेत्र के विशेषज्ञ टी.वी अथवा फिल्म स्टूडियों में अथवा अपना स्वतंत्र कार्य कर सकते हैं। ये लोग स्कूल एवं कॉलेज में प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं।

आर्ट स्टूडियों, विज्ञापन एजेंसिया, प्रकाशन समुहों इत्यादि में रोजगार के अवसर उपलब्ध है।

कोर्स: बी.एफ.ए., एम.एफ.ए (चित्रकारी पेंटिंग)

फॅशन डिजाईजिंग कोर्स, एक्टिंग कोर्स

दुनिया भर की बातें

अक्टूबर 2024

■ 1 अक्टूबर

- फिल्मी अभिनेता गोविंदा को रिवाल्वर से गोली लगी।

- कोलकाताः जूनियर डॉक्टर पुनः हड़ताल पर गये ममता सरकार पर वादा खिलाफी का आरोप लगाया।

- आरती सरीन सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा की पहली डी.जी. बनी।

■ 2 अक्टूबर

- पुणेः हैलीकॉप्टर क्रैश हुआ दो पायलट और 1 इंजीनियर की मौत हुई।

- नागपुर : जिले के मेवाड़ एक ही परिवार 4 सदस्यों ने आत्महत्या की।

- लेबनान इजरायल की जमीनी लड़ाई शुरु हुई इजरायल के 14 सैनिक मारे गये।

■ 3 अक्टूबर

- दिल्लीः अशोक नागर ने पाला बदला वे काँग्रेस में आये।

- मणिपुर के उखरूल कस्बे में हिंसा भड़की और भीड़ ने पुलिस थाने हथियार लूटे।

- दिल्लीः कामदी के नर्सिंग होम में घुसकर युवकों ने एक डॉक्टर की हत्या कर दी।

■ 4 अक्टूबर

- नारायणपुर (छत्तीसगढ़) सुरक्षाबलो ने 36 नक्सलियों को मार गिराया।

- हरदा (म.प्र.) 21 वर्षीय महिला ने जिला पंचायत सदस्य लक्ष्मीनारायण ठाकुर पर दुष्कर्म का आरोप लगाया।

- मुम्बईः मंत्रीमंडल ने जैनों, बारी और तेली के लिये आर्थिक महामंडल बनाने का फैसला किया।

■ 5 अक्टूबर

- विधानसभा चुनाव में हरियाणा में 62% मतदान हुआ।

- देहरादूनः जवानों से भरी बस पलटने से 7 जवान घायल हुये बस जम्मू कश्मीर से चुनाव ड्यूटी कर लौट रही थी।

- 5 राज्यों के 22 स्थानों पर एन.आई.ए के छापे पड़े महाराष्ट्र से 4 लोग गिरफ्तार हुये।

■ 6 अक्टूबर

- इजरायल ने गाजा की मस्जिद पर बम बरसाये 26 की मौत।

- भोपालः बागरोदा क्षेत्र की एक फैक्ट्री में गुजरात की ए.टी.एस ने 1814 करोड़ की ड्रग्स पकड़ी और अमित चतुर्वेदी तथा सान्याल प्रकाश को गिरफ्तार किया।

- महिला टी-20 वर्ल्ड कप में भारत ने पाकिस्तान को 6 विकेट से हराया।

■ 7 अक्टूबर

- लालू प्रसाद यादव को परिवार को लैण्ड फॉर जॉब केस सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिली।

- इस्लामाबादः 5वीं पंजाब में पुलिस ने 7 आतंकी मारे।

- मालदीव के राष्ट्रपति मो. मुइज्जू भारत की 5 दिवसीय यात्रा पर आये।

■ 8 अक्टूबर

- सांगलीः दिगम्बर जैन समाज का मोर्चा निकला जिसमें 2000 समाज बन्धू शामिल हुये । यह मोर्चा श्वेताम्बरीय अत्याचार के विरोध में निकला।

- हरियाणा में भाजपा ने 48 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुम प्राप्त किया । जम्मू कश्मीर में नेशनल कांफ्रेस ने 42 सीटें 90 में से जीती किसी को भी बहुमत नहीं मिला।

- बेंगलुरुः केक खाने से 5 वर्षीय धीरज की मौत हुई माता पिता एडमिट हुये।

■ 9 अक्टूबर

- श्रीनगरः छुट्टी से लौट रहे जवान को आतंकियों ने अगवा किया हिलाल मुहम्मद भट्ट का छलनी शव मिला।

-कर्नाटक के काँग्रेसी विधायक विनय कुलकर्णी के खिलाफ अपहरण बलात्कार का केस दर्ज हुआ।

- प्रसिद्ध उद्योगपति रतन टाटा (86) गंभीर रूप से बीमार हुये।

■ 10 अक्टूबर

- प्रसिद्ध उद्योगपति भारत रतन टाटा का निधनोपरान्त अंतिम संस्कार किया गया।

- मुजफ्फरनगरः तांत्रिक के बहकावे में आकर 1 माह की बच्ची की बलि के आरोप में दम्पत्ति गोपाल कश्यप को गिरफ्तार किया।

- केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने हिज्बउत-तहरीर पर प्रतिबंध लगाया।

■ 11 अक्टूबर

- प्रतापगढ़ः पटाखों के जखीरे में विस्फोट हुआ एक तीन मंजिल इमारत ढही। 1 व्यक्ति की मौत हुई शबनम और शबनम बानों गंभीर घायल।

- अमेरिका के फ्लोरिडा में चक्रवात आने 16 लोग मरे 120 घर तबाह हुये।

- टाटा ट्रस्ट के अध्यक्ष नोएल बने उन्होंने रतन टाटा का स्थान लिया।

■ 12 अक्टूबर

- महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री वर्तमान विधायक बाबा सिद्धकी की हत्या हुई हत्या की जिम्मेदारी लारेंस गैंग ने ली।

- ब्राजील की एक लड़की गिस्ले ने सिल्वीडी देउस पुलिस अधिकारी बनी और 25 साल बाद पिता के हत्यारे को पकड़ा।

- कुल्लू (हिमाचल) भगवान रघुनाथ की रथयात्रा के साथ सप्त दिवसीय दशहरा उत्सव शुरु हुआ।

■ 13 अक्टूबर

- न्यूयार्क : इलान मस्क की कम्पनी ने स्टार शिप रॉकेट का सफल परीक्षण किया 121 मीटर ऊँचा रॉकेट 96 किमी. ऊपर जाकर सुरक्षित लौटा।

- आर.एस.एस के प्रमुख मोहन भागवत से प्रवीण भाई तोगडिया (अध्यक्ष अ. हिन्दू परिषद) के साथ बंद द्वार चर्चा हुई।

- दिल्ली-गुजरात पुलिस ने 5000 करोड़ की कोकेन अंकलेश्वर में ड्रग्स कम्पनी से 518 किलोग्राम बरामद की।

■ 14 अक्टूबर

- अम्बिकापुर (छत्तीसगढ़) फरार आरोपी कुलदीप साहू ने हेड कांस्टेबल की पत्नी बेटी की हत्या करा दी।

- युद्ध अभ्यास के दौरान चीनी सेना ने ताइवान को चारों ओर से घेरा।

- दिल्ली सरकार ने 1 जनवरी 2025 तक पटाखों पर प्रतिबंध लगाया।

■ 15 अक्टूबर

- विदेश मंत्री एस जयशकर पाकिस्तान यात्रा पर गये।

- भारी वर्षा के कारण स्कूल कॉलेज कोर्ट

सब चेन्नई में बंद हुये।

- दिल्लीः मणिपुर के मैतई कुकी और नगा विधायकों की बैठक 18 माह में पहली बार हुई।

■ 16 अक्टूबर

- श्रीनगरः जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री पद की शपथ उमर अब्दुलला ने ली। उपमुख्यमंत्री सुरेन्द्र चौधरी बने।

- इस्लामाबादः भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाक हुकमरानों को खरी खरी सुनाई कहा व्यापार और आतंकवाद साथ साथ नहीं चल सकते हैं।

- कर्नाटक हाईकोर्ट ने अपने अहं फैसले में कहा कि मस्जिद में जय श्री राम के नारे लगाना कोई अपराध नहीं है।

■17 अक्टूबर

- बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय न्याय प्राधिकरण ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया।

- जहरीली शराब से बिहार के 16 गांवों मे 36 लोग मरे।

- उज्जैन की निकिता पोरवाल बनी मिस इंडिया।

■18 अक्टूबर

- श्रीनगरः बिहार के श्रमिक अशोक चौहान की हत्या आतंकियों ने गोली मारकर की।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा बाल विवाह रोकने के कानून में खामी है ये कानून बच्चों की आजादी छीनते हैं।

- आप नेता सत्येन्द्र जैन को 18 माह बाद जमानत मिली।

■ 19 अक्टूबर

- विजया किशोर राहटकर राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष होगी।

- रांचीः चुनाव आयोग ने झारखंड के डीजीपी अनुराग गुप्ता को तत्काल प्रभाव से हटाने के आदेश दिये।

- जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव को उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंजूरी दी।

■ 20 अक्टूबर

- श्रीनगरः आतंकियों ने 3 मजदूरों की हत्या की 5 लोग घायल।

- मणिपुर में जिरीवाम जिले के दो फार्म हाऊस उग्रवादियों ने जलाये।

- दिल्लीः सी.आर.पी.एफ स्कूल के पास विस्फोट हुआ।

■ 21 अक्टूबर

- गढ़ चिरौली महाराष्ट्र सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में 5 नक्सली ढेर हुये।

- एल.ए.सी पर भारत-चीन 4 साल पहले की स्थिति बहाल करने पर राजी हुये।

- बेरुतः लेबनान के इंटरनेशल हवाई अड्डे पर इजरायल ने हमले किये।

■ 22 अक्टूबर

- ऑर्डिनेंस फैक्ट्री में विस्फोट हुआ खमरिया जबलपुर में हुये धमाके में 2 की मौत हुई 12 घायल हुये।

- वक्फ (जे.पी.सी) बैठक में सांसद आपस में भिड़े (टी.एम.सी) के कल्याण बनर्जी ने काँच की बोतल अध्यक्ष पर फेंकी।

- विशाखा पट्टनमः में अरिहंत की चौथी परमाणु पनडुब्बी लांच हुई।

■ 23 अक्टूबर

- कजान (रूस) प्रधान नरेन्द्र मोदी और शी जिनपिंग की मुलाकात 5 साल बाद हुई।

- प्रियंका गाँधी ने बायनाड से लोकसभा का फार्म भरा।

- नाई जीरियाः पेट्रोल टेंकर विस्फोट में 181 मरने वालों की संख्या हुई।

■24 अक्टूबर

- अयोध्या के ए.डी.एम सुरजीत सिंह की रक्त रंजित लाश उनके सरकारी आवास पर मिली।

- श्रीनगरः एल ओ सी के पास सेना के वाहन पर हमला हुआ। दो जवान शहीद हुये दो मजदूरों की मौत हुई।

- नलियाः ट्रेन से मनीता सिंह के सूट केस से 750 कारजूस पुलिस बरामद किये।

■ 25 अक्टूबर

- पूणेः सहकार नगर से पुलिस ने 138 करोड़ का सोना बरामद किया।

- शेयर बाजार में गिरावट आने से 10 लाख करोड़ स्वाहा हुये।

- कर्नाटक में एक सत्र न्यायालय ने 98 लोगों को उम्रकैद की सजा सुनाई।

■ 26 अक्टूबर

- इजराइल ने ईरान पर एयर स्ट्राइक कर 20 ठिकाने नष्ट किये।

- कुलगामः सेना का वाहन पलटा जीत लाल नामक जवान शहीद हुआ।

- राँचीः पूर्व सांसद रवीन्द्र कुमार राय झारखंड के भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष बने।

■ 27 अक्टूबर

- मुम्बईः बांद्रा स्टेशन पर भगदड़ मचने से 10 यात्री घायल हुये।

- रूस के जंगल में हेलीकाप्टर एयर एम्बूलंस गिरा पायलट एवं 3 डॉक्टरों की मौत हुई।

- मऊः एक राजकीय बाल सुधार गृह से 8 कैदी फरार हुये।

■ 28 अक्टूबर

- अखनूर (जे.के.) आर्मी एम्बूलेंस पर गोली बारी के बाद मुठभेड में 3 आतंकी मारे गये।

- मंदसौर (म.प्र.) जिले के योगाधर्मन थाना के मुल्तानपुर गाँव में दो गुटों में हुई झड़प में 10 व्यक्ति की मौत हुई 7 लोग घायल हुये।

- मिस इंडिया की विजेता निकिता पोरवाल महाकाल मंदिर ताज लगाकर पहुँचने पर विवाद हुआ।

■ 29 अक्टूबर

- केसर गोड़ (केरल): के अंजुमाम्बलम वीरार काबू मंदिर में आतिश वाजी के दौरान हुये विस्फोट 150 लोग झुलसे।

- वाशिंगटनः दो राज्यों में बैलेट वाक्स के कुछ मतपत्र जले।

- अमेरिकी राष्ट्रपति जो वाईडन ने वाइहट हाउस में दीपावली मनाई।

■ 30 अक्टूबर

- श्रीनगरः बाँदीपोरा जिले तुलाईल में विधायक गरेज नाजिर अहमद खान की रैली पर हमला हुआ 12 लोग घायल हुये।

- पुलवामाः ग्रेनेड हमले की ताक बैठा आतंकी दानिश बशीर उर्फ मौलवी पकड़ा गया उसके पास से 10 ग्रेनेड 5 बैटरिया बरामद हुई।

- बीजापुर (छत्तीसगढ़) 5 लाख की इनामी महिला 5 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया।

■ 31 अक्टूबर

- प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने कच्छ की पाक सीमा पर सैनिकों के साथ दीपावली मनाई।

- भारत-चीन बार्डर पर सैनिकों ने आपस में मिठाई बाँटी।

- ईराक में हवाई हमले में आई एस के 8 आतंकी मारे गये।

इसे भी जानिये

प्रमुख वित्तीय संस्थाएँ

क्र.	प्रमुख वित्तीय संस्थाएँ	स्थापना वर्ष
01	इमीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921ई.
02	भारतीय रिजर्व बैंक	1 अप्रैल 1935 ई.
03	भारतीय औद्योगिक निगम	1948 ई.
04	भारतीय औद्योगिक ऋण व निवेश निगम	जनवरी 1955 ई.
05	भारतीय स्टेट बैंक	1 जुलाई 1955 ई.
06	भारतीय युनियन ट्रस्ट	1 फवरी 1904 ई.
07	कृषि एवं ग्रामीण विकास हेतू राष्ट्रीय बैंक	12 जुलाई 1982 ई.
08	भारतीय औद्योगिक पुननिर्माण बैंक	20 मार्च 1986 ई.
09	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक	अप्रेल 1990 ई.
10	भारतीय निर्यात आयात बैंक	1 जनवरी 1982 ई.
11	राष्ट्रीय आवास बैंक	जुलाई 1988 ई.
12	क्षेत्रिय ग्रामीण बैंक	2 अक्टुबर 1975 ई.
13	भारतीय जीवन बीमा निगम	1 सितंबर 1950 ई.
14	भारतीय साधारण बीमा निगम	1 नवंबर 1972 ई.
15	राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास बैंक (नाबाई)	12 जुलाई 1982 ई.

कविता

दुख पाते है

संस्कार फीचर्स

धर्म का मर्म समझने वाले कम होते हैं
दया को अपनाने वाले कम ही होते हैं
ढोंग को रच प्रदर्शन करने वाले
कहाँ कम होते हैं खोते हैं धैर्य
खाते हैं निर्माल्य नाम के धर्मधारी
भ्रष्टाचारी स्वांग रचते हैं भूल जाते हैं
प्रभु का नाम अपना काम
प्रभु राम धन वैभव के लालच में
अपनाते हैं अधर्म बंधते हैं कर्म
नरक में जाते हैं वहाँ दुख पाते हैं।

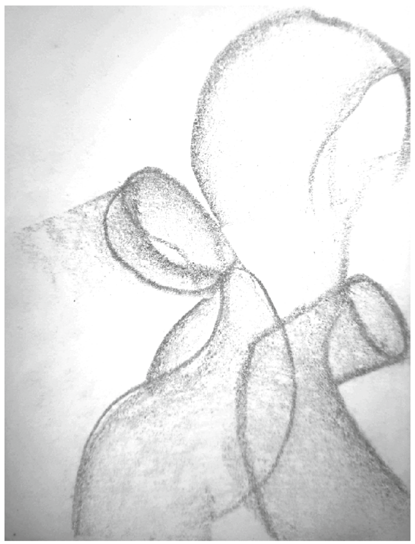

दिशा बोध

न्यायशीलता

1. न्यायनिष्ठा का सार यही है कि मनुष्य निष्पक्ष होकर, धर्मशीलता के साथ दूसरे के देय-अंश को देवे, फिर चाहे लेने वाला शत्रु हो या मित्र।
2. न्यायनिष्ठा की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती; वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है। जबकि अन्याय-अनीति से अर्जित सम्पत्ति जल्द ही नष्ट हो जाती है।
3. सन्मार्ग को छोड़कर जो धन मिलता है, उसे कभी हाथ न लगाओ, भले ही उससे लाभ के अतिरिक्त और किसी बात की सम्भावना न हो।
4. भले और बुरे का पता उसकी सन्तान से चलता है।
5. भलाई और बुराई का प्रसंग तो सभी को आता है, पर एक न्यायनिष्ठ मन बुद्धिमानों के लिए गर्व की वस्तु है।
6. जब तुम्हारा मन सत्य से विमुख होकर असत्य की ओर झुकने लगे, तो समझ लो कि तुम्हारा सर्वनाश निकट ही है। संकट तुम्हें घेरने ही वाले हैं।
7. संसार धर्मात्मा और न्याय-परायण पुरुष की निर्धनता को हेय-दृष्टि से नहीं देखता।
8. उस तराजू की डंडी को देखो, जो सीधी है और दोनों ओर एक-सी है। बुद्धिमान का गौरव इसी में हैं कि वे इसके समान ही बनें, न इधर झुकें, न उधर झुके।
9. जो मनुष्य अपने मन में भी नीति से नहीं डिगता, उसके न्यायमार्गी होठों से निकली हुई बात सर्वदा सत्य होती है।और संसार में सम्मान प्राप्त करती है।
10. उस सद्व्यवहारी पुरुष को देखो, जो दूसरे के कामों को भी अपने विशेष कार्यों के समान ही देखता-भालता है। उसके उद्योग-धंधे अवश्य उन्नति करेंगे।

पुरानी पिच्छिका प्राप्त करने वाले श्रावक सूची 2024

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
01	आचार्य श्री समयसागरजी महाराज	इंजी रमेश अल्पना जैन, कटनी
02	नि. मुनि श्री योगसागरजी महाराज	श्री गुलाबंचद रीको जैन, छिरारी वाले रहली
03	मुनि श्री नीरोगसागरजी महाराज	श्री जिनेन्द्र सुमन जैन, बरौदा वाले रहली
04	मुनि श्री निर्मोहसागरजी महाराज	श्री सौरभ शुभि लहरी, दमोह
05	मुनि श्री निरामयसागरजी महाराज	श्री जयकुमार सविता जैन, गुजराती बाजार सागर
06	मुनि श्री निर्भीकसागरजी महाराज	श्री सुरेन्द्र स्मिता आजाद, रहली
07	एलक श्री सुधारसागरजी महाराज	श्री ताराचंद मीना जैन, रहली
08	एलक श्री चैत्यसागरजी महाराज	श्री राकेश रजनी जैन, चांदपुर वाले रहली
09	एलक श्री अपारसागरजी महाराज	श्री आनंद आराधना जैन, तालमपुर वाले रहली
10	एलक श्री तन्मयसागरजी महाराज	श्री जयकुमार अंजु जैन, बहेरिया वाले रहली
11	एलक श्री स्वागतसागरजी महाराज	श्री मुन्नालाल अंजना मोदी, पटना वाले रहली
12	एलक श्री आगतसागरजी महाराज	श्री ऐश्वर्य शैफाली सिंघई, रहली
13	एलक श्री भरतसागरजी महाराज	श्री विमलकुमार मंजू जैन, जूना वाले रहली
14	नि. श्रमण मुनिश्री नियमसागरजी महाराज	श्रीमति कांति पी.सी. जैन, विदिशा
15	नि. श्रमण मुनिश्री नियमसागरजी महाराज	श्रीमति शीला एन.आर जैन, सेठ परिवार विदिशा
16	नि. श्रमण मुनिश्री नियमसागरजी महाराज	श्रीमति इन्द्रा अशोक जैन, विदिशा
17	नि. श्रमण मुनिश्री नियमसागरजी महाराज	श्रीमति सविता डॉ. अशोक जैन, विदिशा
18	मुनि श्री पवित्रसागरजी महाराज	श्रीमति अर्चना अनिलकुमार मोदी, खुरई
19	मुनि श्री निरंजनसागरजी महाराज	श्रीमति प्रभावती हुकुमचंद जी सांवला, इंदौर
20	मुनि श्री आदिसागरजी महाराज	श्रीमति पुष्पा राजेन्द्र कुमार मोदी, खिमलासा
21	मुनि श्री आदिसागरजी महाराज	श्रीमति बिनी अमित जैन वकील, विदिशा
22	क्षुल्लक श्री संयमसागरजी महाराज	श्रीमति वंदना संजू जैन, विदिशा
23	मुनि श्री अजितसागरजी महाराज	श्री अनिल नीता जैन, तलवाड़ा
24	मुनि श्री निरागसागरजी महाराज	श्री प्रत्येष मेघा मोडा, तलवाड़ा
25	एलक श्री विवेकानंदसागरजी महाराज	श्री अमित रानी दोषी, तलवाड़ा
26	मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज	श्री अषित अर्चना बैनाडा, कोलकाता
27	मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज	श्री विशाल श्वेता जैन, क्लर्क कॉलोनी इंदौर
28	मुनि श्री संधानसागरजी महाराज	श्री विशाल काजल पांडया, इंदौर
29	मुनि श्री गुप्तिसागरजी महाराज	श्रीमति मंजू कमल बड़जात्या, कोलकाता
30	मुनि श्री निश्चिंतसागरजी महाराज	श्रीमति सविता राजू जैन, बंडा
31	मुनि श्री विनम्रसागरजी महाराज	श्री सतीश साक्षी डबडेरा, छत्रपतिनगर इंदौर
32	मुनि श्री निस्वार्थसागरजी महाराज	श्री शैलेन्द्र पिंकी जैन, छत्रपतिनगर इंदौर
33	मुनि श्री निसर्गसागरजी महाराज	श्री सचिन स्वीटी जैन, अजंलीनगर इंदौर
34	नि.श्रमण मुनि समतासागर जी महाराज	श्रीमति शोभा डॉ. राजेन्द्र जैन, विदिशा
35	एलक श्री निश्चयसागरजी महाराज	श्रीमति रिया अंकित जैन, पिंडरई
36	एलक श्री निजानंदसागरजी महाराज	श्रीमति मोनिका विवेक जैन, पिंडरई

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
37	मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज	श्री भूपेन्द्र जैन पिडावा
38	मुनि श्री उत्तमसागरजी महाराज	ब्र. सुशीला, ब्र. साधना दीदी कुण्डलपुर
39	मुनि श्री पावनसागरजी महाराज	श्रीमति डॉ. वंदना कलमचंद जैन जयपुर
40	मुनि श्री सुखसागरजी महाराज	बाल ब्र. सन्मति पारिस कुसकुंडे कुडची कर्नाटक
41	मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज	श्रीमति शकुन महेन्द्र कुमार जैन, गेरतगंज
42	मुनि श्री पुण्यसागरजी महाराज	श्री संतोष पाटिल, हुबली
43	मुनि श्री पुराणसागरजी महाराज	श्री पंकज जैन, बैंगलोर
44	मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज	ब्र. धर्मचंद जी जैन
45	मुनि श्री प्रबोधसागरजी महाराज	विद्या समय सेवा समूह
46	मुनि श्री शैलसागरजी महाराज	श्रीमति रचना दिलीप जैन, पथरिया
47	मुनि श्री अचलसागरजी महाराज	श्रीमति उषा पद्म मलैया, पथरिया
48	मुनि श्री सुपार्श्वसागरजी महाराज	श्री भारत शोभा धामरे, धाराशिव
49	मुनि श्री श्रेयांससागरजी महाराज	श्रीमति बीना नवीन जैन, बरेली
50	मुनि श्री अक्षयसागरजी महाराज	सुरेश जैन, रामगंजमण्डी
51	मुनि श्री अभयसागरजी महाराज	श्रीमति रेखा अजित जैन लम्हेटा परिवार शहपुरा
52	मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज	श्रीमति प्रिया प्रकाश जैन पावला वाले शहपुरा
53	मुनि श्री चंद्रसागर जी महाराज	पवन पेन्टर नंदा नरसिंहपुर
54	मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज	श्रीमति सुरभि सौरभ जैन शहपुरा
55	मुनि श्री निर्दोषसागरजी महाराज	श्रीमति मीना कैलाशचंद जैन, तारादेही
56	मुनि श्री निर्लोभसागरजी महाराज	श्रीमति मालती डॉ. सुगनचंद जैन, जामनेर वाले गुना
57	मुनि श्री निरूपमसागरजी महाराज	श्रीमति साक्षी सुधीर जैन, मुरारिया वाले गुना
58	एलक श्री उपशमसागरजी महाराज	श्रीमति अल्पना अरूण सेठ मंडावरा
59	क्षुल्लक श्री निजात्मसागरजी महाराज	श्रीमति ज्योति अशोक जैन, बरेली
60	मुनि श्री वृषभसागरजी महाराज	श्री मंगल अहाडे, पुशद
61	मुनिश्री आगमसागरजी महाराज	श्री सूर्यकांत डोली जैन परिवार राजनांदगांव
62	मुनि श्री पुनीतसागर जी महाराज	रज्जो काकी, श्री प्रसन्न वंदना जैन परिवार राजनांदगांव
63	मुनि श्री धैर्यसागरजी महाराज	श्री नितिन नम्रता जैन, शुभम, नव्या जैन राजनांदगांव
64	मुनि श्री नीरजसागरजी महाराज	श्री दिनेश अनिता गंगवाल, सवाईमाधोपुर
65	मुनि श्री निर्मदसागरजी महाराज	श्री भागचंद कासलीवाल, सवाईमाधोपुर
66	मुनि श्री पूज्यसागरजी महाराज	डॉ. एस.के. मधुबाला जैन, बुढ़ार
67	मुनि श्री अतुलसागरजी महाराज	श्रीमति कुमोद अमित पाईया, बुढ़ार
68	मुनि श्री विषदसागरजी महाराज	श्रीमति टिंकल नितिन जैन, गंजबासौदा
69	नि. श्रमण वीरसागरजी महाराज	श्रीमति स्वीटी आलोक बडजात्या, हरदा
70	मुनि श्री निष्पक्षसागरजी महाराज	श्रीमति चेतना राजेश जैन, आष्टा
71	मुनि श्री निष्पृहसागरजी महाराज	श्रीमति संजना संजय जैन, आष्टा
72	मुनि श्री निष्कंपसागरजी महाराज	श्रीमति रेखा लाभमल जैन, आष्टा
73	मुनि श्री निष्कामसागरजी महाराज	श्रीमति बरखा अनुराग जैन, आष्टा
74	एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज	श्रीमति सुनीता रवि बज, वाशिम

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
75	आर्यिका श्री गुरुमति माताजी	ग्रस्त जीवनके भैया भाभी बंडा परिवार
76	आर्यिका श्री दृढ़मति माताजी	श्री भरत सुनीता जैन, आशीष रूबी जैन परिवार चौक मंदिर
77	आर्यिका श्री पावनमति माताजी	श्री सतीश कीर्ति जैन, रिदावर वाले सागर
78	आर्यिका श्री निकलंकमति माताजी	श्री राजकुमार संगीता जैन, सोहित जैन, एस.आर पेपर वाले
79	आर्यिका श्री सकलमति माताजी	श्री भविष्य आभा जैन, पुत्र देवर्ष जैन हनुमानगंज
80	आर्यिका श्री समुन्नतमति माताजी	श्री राकेश जया जैन, कौशल आजाद मार्केट
81	आर्यिका श्री शास्त्रमति माताजी	श्री देवेन्द्र विनीता जैन, पंचशीलनगर
82	आर्यिका श्री तथ्यमति माताजी	श्री राजेश सीमा जैन, इतवारा चौक मंदिर
83	आर्यिका श्री संस्कारमति माताजी	श्री राजीव निमित्य जैन, शांतिधारा चौक मंदिर
84	आर्यिका श्री आप्तमति माताजी	श्री संजीव राखी जैन, कौछल चौक मंदिर
85	आर्यिका श्री समितिमति माताजी	श्री राजीव मंजू जैन, माणक चौक वाले भाग्योदय सागर
86	आर्यिका श्री मननमति माताजी	श्री आलोक मिनी जैन, हेप्पी मेडिकल चौक
87	क्षुल्लिका श्री उचितमति माताजी	श्री राजेश अनीता जैन, मंगलवारा
88	आर्यिका श्री भावनामति माताजी	श्रीमति पिंकी मोनू जैन, कटनी
89	आर्यिका श्री सदयमति माताजी	श्रीमति विद्या विमल जैन, कटनी
90	आर्यिका श्री भक्तिमति माताजी	श्री पवन जैन एडव्होकेट पुजारी परिवार, कटनी
91	आर्यिका श्री तपोमति माताजी	श्रीमति सुनीता रमेश बाजना वाले, बड़ामलहरा
92	आर्यिका श्री नम्रमति माताजी	श्रीमति सविता राजेश जैन, अहमदाबाद
93	आर्यिका श्री विनम्रमति माताजी	श्रीमति संगीता अभय जैन, बड़ामलहरा
94	आर्यिका श्री अतुलमति माताजी	श्रीमति इन्द्रा महेन्द्र जैन, बड़ामलहरा
95	आर्यिका श्री अनुगममति माताजी	श्रीमति साक्षी सुनील जैन, बड़ामलहरा
96	आर्यिका श्री लक्ष्यमति माताजी	श्रीमति सविता जयकुमार जैन, बड़ामलहरा
97	आर्यिका श्री चिंतनमति माताजी	श्रीमति अभिलाषा मनोज जैन, करेली
98	आर्यिका श्री सारमति माताजी	श्रीमति निधि प्रवीण जैन, करेली
99	आर्यिका श्री अक्षयमति माताजी	श्रीमति सुधा नरेन्द्र जैन, सिमरिया वाले गढ़ाकोटा
100	आर्यिका श्री निर्मदमति माताजी	श्रीमति राखी सचिन वैशाखिया, गढ़ाकोटा
101	आर्यिका श्री प्रसन्नमति माताजी	श्रीमति पिंकी राजू जैन, खरगापुर
102	आर्यिका श्री कीर्तिमति माताजी	श्रीमति स्वर्णा ब्रजेश जैन, खरगापुर
103	आर्यिका श्री मृदुमति माताजी	श्रीमति कमलादेवी सुरेश कुमार जैन, झलौन जबलपुर
104	आर्यिका श्री निर्णयमति माताजी	श्रीमति अंजना कोमलचंद जैन, सातपुर वाले हटा
105	आर्यिका श्री स्वाध्यायमतिमाताजी	श्रीमति रश्मि विनोद सिंघई, शाहपुर
106	आर्यिका श्री विलक्षणमति माताजी	श्रीमति लक्ष्मी सुनील चौधरी, टडा
107	आर्यिका श्री वात्सल्य मति माताजी	श्रीमति किरण प्रमोद जैन, टडा
108	आर्यिका श्री अनंतमति माताजी	श्रीमति लाला, सौरभ डबल्या, नरसिंहपुर
109	आर्यिका श्री शुक्लमति माताजी	श्रीमति संजना अमित डबल्या, नरसिंहपुर
110	आर्यिका श्री संवेगमतिमाताजी	श्रीमति रेखा संजय जैन जबलपुर
111	आर्यिका श्री शोधमति माताजी	श्रीमति रंजना विनोद नायक, नरसिंहपुर
112	आर्यिका श्री सुशीलमति माताजी	श्रीमति माया अनिल नायक, पाटन जबलपुर
113	आर्यिका श्री सुसिद्धमति माताजी	श्रीमति आरती अंकुश जैन, नरसिंहपुर

क्र.	पिच्छीधारी का नाम	पिच्छी प्राप्तकर्ता
114	आर्यिका श्री उदारमति माताजी	श्रीमति सिंधु संतोष सिंघई, नरसिंहपुर
115	आर्यिका श्री संतुष्टमति माताजी	श्रीमति अर्चना रजनीश जैन, जबलपुर
116	आर्यिका श्री अपूर्वमति माताजी	श्रीमति शैलजा अभिलाष व्या, केसली
117	आर्यिका श्री अनुत्तरमति माताजी	श्रीमति गीता बालचंद्र जैन, राजाबलहरा
118	आर्यिका श्री विनतमति माताजी	श्रीमति राजुल राजेश कुमार मलैया, जैतपुर वाले केसली
119	आर्यिका श्री संवरमति माताजी	श्रीमति निधि नितिन कुमार चौधरी, केसली
120	आर्यिका श्री अगाधमति माताजी	श्रीमति किरण माखनलाल जैन, मेढकी वाले, केसली
121	आर्यिका श्री धारणामति माताजी	श्रीमति अंजली अरविन्द मिठया महरौनी
122	आर्यिका श्री मुदितमति माताजी	श्रीमति समन मुकेश कुमार सराफ महरौनी
123	आर्यिका श्री संयतमति माताजी	श्रीमति ममता विनोद कुमार विलौआ महरौनी
124	आर्यिका श्री गुणमति माताजी	श्री विपिन फुसकेले नेहानगर, सागर
125	आर्यिका श्री आगमतिमाताजी	श्री नरेन्द्र जैन दीनदयाल नगर, सगर
126	आर्यिका श्री पथ्यमति माताजी	श्रीमति रेखा विनोद बजाज, पटेरा
127	आर्यिका श्री ध्येयमति माताजी	श्रीमति महेन्द्र जी जैन दीनदयालनगर, सागर
128	आर्यिका श्री आप्तश्री माताजी	श्री ज्ञानचंद जैन नायक दीनदयालनगर, सागर
129	आर्यिका श्री अखंडमति माताजी	ब्र. अंकित भैया, सहज धनेटा
130	आर्यिका श्री अभेदमति माताजी	श्रीमति संध्या सुरेन्द्र जैन, लकलका
131	आर्यिका श्री संयमश्री माताजी	श्रीमति अंजना राजेश जैन, झलौन
132	आर्यिका श्री स्वभावमति माताजी	श्रीमति सुषमा सुनील जैन, झलौन
133	आर्यिका श्री कुशलमति माताजी	श्रीमति रंजना अमित जैन, बेगमगंज
134	आर्यिका श्री अंतरमति माताजी	श्रीमति मोनिका शरद जैन, बेगमगंज
135	आर्यिका श्रीअनुग्रहमति माताजी	श्रीमति ज्योति मुकेश जैन, बेगमगंज
136	आर्यिका श्री अमंदमति माताजी	श्रीमति सरिता शिखरचंद जैन, बेगमगंज
137	आर्यिका श्री शैलमति माताजी	श्रीमति संगीता नवीन जैन, बेगमगंज
138	आर्यिका श्री गन्तव्यमति माताजी	श्रीमति पूजा अभिषेक जैन, बेगमगंज
139	आर्यिका श्री मेरुमति माताजी	श्रीमति सुनीता कैलाश जैन, बेगमगंज
140	आर्यिका श्री आराध्यमति माताजी	श्रीमति प्रियंका अंकित बजाज, सिलवानी
141	आर्यिका श्री अचिन्त्यमति माताजी	श्रीमति पिंकी सजल कुमार भाईजी, सिलवानी
142	आर्यिका श्री उचितमति माताजी	श्रीमति रचना नवीन कुमार जैन, सिलवानी
143	आर्यिका श्री विजितमति माताजी	श्रीमति रजनी संजय कुमार जैन, सिलवानी
144	आर्यिका श्री अकलंकमति माताजी	श्रीमति ज्योति मनीष जैन, मुंगावली
145	आर्यिका श्री सिद्धमति माताजी	श्रीमति अंजली विवेक जैन, श्रीमति टीना सचिन जैन
146	आर्यिका श्री विमलमति माताजी	श्री अनिल सिंघई, तारादेही
147	आर्यिका श्री निर्मलमति माताजी	श्री विनीत कुमार व्या, तारादेही
148	आर्यिका श्री निर्वेगमतिमाताजी	श्री मनोज सिंघई, तारादेही
149	आर्यिकाश्री सविनयमति माताजी	श्री विपिन कुमार बड़कुल, तारादेही
150	आर्यिका श्री शाश्वतमति माताजी	श्री रवि कुमार व्या, तारादेही
151	आर्यिका श्री निकटमति माताजी	श्री अखिलेश कुमार देवडिया, तारादेही
152	आर्यिका श्री अमितमति माताजी	श्री सुरेन्द्र कुमार बड़कुल, तारादेही

कहानी

मै डर रहा हुँ

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

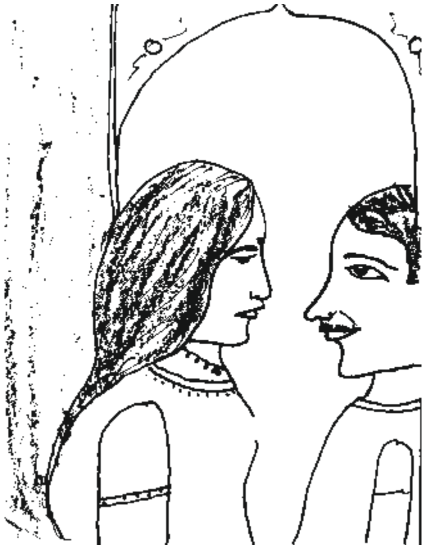

रात ढल रही थी करवाचौथ का चांद बादलों से ढक रहा था छतों पर धुमधाम मची थी । दम्पत्तिजन अपनी अपनी पत्नियों के व्रत तुडवाने में लगे थे। पत्नियों में से दो चाँद देख रही थी गौरव गरिमा भी छत पर टहलकर त्यौहार की बनती बिगडती छबियों को देख रहे थे। गौरव ने कभी भी इस तरह के व्रतों का समर्थन नहीं किया । भावुक हृदय गरिमा कभी कभी अपने सहेलियों जैसे व्रत उपवास करने में अपना मन बना लेती थी। गौरव के तर्क बहुत तीखे होते थे। उन तर्कों के सामने गरिमा को घुटने टेकने पड़ते थे। गौरव गरिमा दोनों छत पर झुले पर बैठकर उत्सव का आनंद ले रहे थे। गरिमा शिक्षित महिला होने के साथ-साथ बहाव में बहने वाली भी थी। गरिमा ने अपने कॉलेज लाइफ में कुछ ऐसी सहेलियाँ बनाई थी जो प्रायः अंधविश्वास में ही भटकती रहती थी । गरिमा भी उनके पिछलग्गु बनकर बाबा पंडा के चक्कर लगाया करती थी । शादी के बाद गरिमा में एक बदलाव आया पहली बात तो गरिमा ने मंदिर जाना शुरु किया शादी के पहले गरिमा कभी मंदिर नही जाती थी परंतु वे नास्तिक भी नहीं थी । गरिमा की दिनचर्या कुछ ऐसी थी अपनी पढ़ाई के साथ साथ वह मनोरंजन में भी अपना समय गुजारा करती थी। गरिमा यद्यपि विज्ञान की छात्रा रही है परंतु वह चमत्कार में ज्यादा विश्वास किया करती थी। एक बार उज्जैन के पंडित विनय शास्त्री ने गरिमा को एक नारियल दिया और कहा इसे घर ले जाओ जो इस नारियल में निकले वह तुम्हारा होगा । गरिमा घर ले गई और अपने पिताजी सुहास और माँ शकुन को बुलाकर गरिमा ने कहा पापाजी ये नारियल विनय शास्त्री जी ने मुझे दिया है। और उन्होंने कहाँ है कि यह नारियल फोड़ लेना और जो कुछ निकले वह तुम्हारा होगा। तब सुहास ने कहा तो फोडो उस नारियल को गरिमा बोली पापाजी आप भी

कैसे बातें करते हो कही कोई लडकियां भी नारियल फोड़ती हैं क्या ? सुहास ने कहा नारियल फोड़ दो कोई पाप नहीं होगा यह सड़ी गली परंपरा न जाने कब से चली आ रही है।

सुहास ने कहा अच्छा ये बताओं गरिमा मेरी तीन बेटियाँ हैं और बेटा एक भी नहीं तो मेरा अंतिम संस्कार कौन करेगा ? गरिमा ने तपाक से उत्तर दिया की पापा मैं हूँ ना मैं आपका अंतिम संस्कार करूंगी । तब सुहास ने कहा कि हिंदु परंपरा में यह मान्यता है कि बेटियाँ कभी अंतिम संस्कार नहीं करती हैं फिर भी तुमने कहा पापाजी मैं आपका अंतिम संसकार करूंगी । जब तुम परंपरा मान्यता के अनुसार अंतिम संस्कार कर सकती हो तो परंपरा के विरूद्ध नारियल को क्यों नहीं तोड़ सकती हो। गरिमा की बात समझ में आयी और गरिमा ने एक झटके में नारियल को फोड़ दिया जैसे ही नारियल फोडा उमें चमचमाती सोने की चेन निकली। गरिमा सोने की चेन देखकर चिल्ला पड़ी पापा देखो इस नारियल में ये सोने की चेन निकली तब सुहास ने पुरा नारियल अपने हाथ में लेते हुये उसका सर्वांग निरीक्षण किया। निरीक्षण करने के बाद उसमें एक होल दिखा और गरिमा से कहा जाओ एक नारियल और लेके आओ गरिमा तुरंत दुसरा नारियल लेकर सुहास के सामने खड़ी हो गयी।

सुहास ने जटाओं को अलग करके तीन नारियल के छिद्रों पर दृष्टी डाली और एक बड़ी कील लेकर एक आँख में से छेद कर दिया और उसी चेन को नारियल में डाल दिया फिर जटाओं को ज्यों का त्यों चिपका दिया और गरिमा को फिर बुलाया और कहा इस नारियल को तुम फोड़ो तब गरिमा ने उस नारियल को फोडो तो वही सोने की चेन निकली तब गरिमा को विनय पंडित का पूरा खेल समझ में आ गया। गरिमा तुरंत विनय शास्त्री के पा गई और कहाँ ये सोने की चेन मुझे नहीं चाहिये आप इसे अपने पास ही रखो। आपको यह चेन किसी दूसरे नारियल में डालने के काम आयेगी। विनय शास्त्री ने गरिमा से कहाँ क्यों क्या हुआ। यह सोने की चेन आपको पसंद नहीं आई, तब गरिमा ने कहा शास्त्री जी मेरे पास सोने की चेन है मैं किसी का दिया हुआ फोकट का धन नहीं लेना चाहती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ इस फोकट के धन की कीमत मुझे अवश्य चुकाना पड़ेगी अतः ये चेन आपके लिये ही मुबारक हो। गरिमा ने विनय शात्री की इस हाथ की कला को अच्छी तरह से समझ लिया था और वह विनय शास्त्री के फेके हुये जाल में फँसने से बच गई । और वह बाबाओं के करिश्मों से और काली करतूतों से भी सदा सदा के लिये दूर हो गई।

गरिमा ने गौरव के झुले पर बैठते हुये कहा कल पंचमी का दिन है तुम्हें पता है मेरा क्या है ? गौरव ने कहा तेरा क्या है मुझे मालूम नहीं तेरा तुझे मालूम होगा। मेरा प्रथम देवदर्शन दिवस है। गौरव ने कहा तो और देवदर्शन कर लेना गरिमा ने कहा मै देवदर्शन करूंगी ही पर मेरा मन है कि कल आप और हम दोनों मिलकर भाग्योदय में विराजमान

मुनिश्री के प्रवचन सुने और उनको आहार भी दें। गरिमा के प्रस्ताव पर गौरव ने मौन धारण कर लिया गरिमा बोली क्यों आप तो मेरी बात पर बिलकुल सांस रोककर बैठ गये। गौरव ने कहां आपका प्रस्ताव बहुत अच्छा है, चार दिन पहले तक मैं तुम्हारी बात से बिलकुल सहमत हो जाता लेकिन चार दिन पहले की घटना तुम्हें मालूम है क्या ? मुनिश्री के आहार से बाहर निकलते ही चौके में क्या हुआ। गरिमा ने कहा मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। गौरव ने कहां कि गरिमा एक काम करो तुम नीचे चले जाओ। गरिमा ने कहा अच्छा तो नीचे जाकर, क्या करूं तुम्हें एक कप चाय लेकर आ जाऊँ। गौरव ने कहां चाय ले आओ ये तो अच्छी बात हुई परंतु मेरे टेबल के ऊपर 16 अक्टूबर का अखकार रखा है उसे उठाकर ले आओ। गरिमा ने ठीक इसी प्रकार नीचे जाकर चाय के साथ अखबार भी लेके आई। गौरव ने अखबार का मुखपृष्ठ गरिमा के सामने रख दिया और कहा पढ़ो। गरिमा ने एक साथ पूरा अखबार पढ़ लिया। अखकार पढ़ने के बाद गहरी सांस लेते हुये कहा इस घटना के लिये आप दोषी किसे मानते हैं। घटना तो बिलकुल गलत हुई है। क्या किसी ब्रह्मचारी पर किसी का भी हाथ उठाना कभी भी उचित माना जायेगा मैं मानती हूँ नहीं। परंतु इस घटना के पीछे कोई और बात भी होगी ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती है।

गौरव ने गरिमा के हाथ में मोबाइल के महालक्ष्मी का झरोखा नामक शीर्षक निकाला और हाथ में दे दिया। गरिमा ने महालक्ष्मी की पूरी रिर्पोट सुनी और ब्र. आरती दीदी के रोते हुये फोटो को भी देखा। और गरिमा ने कहा कई लोग साधु के पीछे लग जाते हैं और वे लोग अपनी मनमानी कर लेते इसमें साधु का क्या लेना देना वे तो अपनी साधना करते हैं। ना उन्हें उपद्रव का लेना होता है ना माधव को देना होता है। फिर भी लोग साधु को लपेटते हैं। गौरव ने कहां मैं तुम्हारी बात ये सहमत हो सकता हुँ, लेकिन गरिमा भले ही मैं साधु लोगों का कोई भी उनको प्रोत्साहन ना हो परंतु ऐसे लोग झगड़ा करने के लिये कैसे तैयार हो जाते हैं यह भी तो सोचो। आहार देने और ना देने की व्यवस्था इनके हाथ में आखिर दी किसने। वर्षायोग समिति ने या महाराज जी ने ये अमरवेल तो हैं नहीं कि जो बिना किसी बुनियाद के फलने फुलने लगे। इनके लिये आखिर कोई ना कोई तो संरक्षण देने वाला होगा। गरिमा गौरव की बात सुनकर चिंता में डूब जाती है गरिमा सोचने लगी इनका तर्क तो सही है पर इनका जबाब क्या दिया जाये। गरिमा ने कहा आचार्य श्री के चौके में भी ऐसे कई स्वयंभू स्वयंसेवक बनके आ जाते थे और वे श्रावकों के साथ अभद्रता करते नजर आते थे। परंतु आचार्य श्री या व्यवस्था समिती का उनके कितना संबंध था ये मैं नहीं कह सकती एक बार व्यवस्था समिती की बात में स्वीकार कर सकती हूँ। वीतरागी संत इन सब पचड़ों में नही पड़ते हैं मेरा ऐसा मानना दृढ़ता के साथ है। जब गरिमा

मोबाईल में सर्च कर रही थी तभी उसी महालक्ष्मी चैनल के झरोखे में वह ही चलने लगा जिसमें मुनि श्री ने बत्ततमीजी करने वाले विशाल को चार दंड देते हुये दिखाया।

मुनि श्री ने अपने उद्बोधन में कहा, गल्ती सबसे होती है विशाल ने और उनके साथ महिलाओं ने जो भी मारपीट का कृत्य किया है वह मात्र निंदनीय नहीं अपितु महानिंदनीय है। त्यागी, वती संयमीजन माता पिता के समान होते हैं। क्या पिताजी अपने बेटे को मार नहीं सकते हैं ? परंतु क्या बेटा अपने माता पिता के ऊपर हाथ उठाने लगे तो क्या अनुचित नहीं होगा। यदि बाप के ऊपर बेटा हाथ उठा दे यह तो बहुत बड़ी ना इंसाफी हो जायेगी गरिमा ने गौरव की तरफ मोबाईल बढ़ाते हुये कहा लो देखों अब फैसला आपको करना है कि महाराज जी इस विशाल को कैसे हतोत्साहित कर रहे हैं कि किसी स्वयंसेवक की हिम्मत मारने पीटने की ना हो। सबसे पहले तो दीदी तो दीदी के पैर पड़कर विशाल ने क्षमा मांगी है, इसके बाद मुनिश्री ने विशाल को आदेश दिया है कि देखो तुम खुद देखो कि विशाल को 21 बार कान पकड़कर उठक बैठक लगानी पड़ रही है देखो देखो। गौरव बड़ी उत्सुकता से देखने लगा और कि विशाल इतनी बड़ी समाज के बीच में विशाल उठक बैठक 21 बार गिनकर के लगा रहा है। शादीशुदा युवक मुनि श्री के आदेश को बिना किसी संकोच के उठक बैठक लगाता चला जा रहा है। इसे देखकर गौरव की आँखे फटी की फटी रह गई। गौरव की श्रद्धा मुनिमहाराज के प्रति फिर बढ़ गयी। दूसरे आगे के सीन को भी गौरव देखते चला गया और वो देखता है कि मुनि श्री ने अगला आदेश दिया है कि चातुर्मास समिति से भी विशाल माफी मांगेगा। और विशाल ने चातुर्मास समिति के भी सदस्यों से तहे दिल के साथ माफी मांगी। आगे अगला आदेश दिया कि विशाल दीपावली तक किसी व्यवस्था में शामिल नहीं होगा। मुनिश्री ने कहा कि इतना अवश्य है कि विशाल को दर्शन से कोई रोक नहीं सकता क्योंकि दर्शन करना उसका अधिकार है। मुनि श्री अपने प्रवचन में कहा कि चैनल वालों ने इस झगडे को तो खूब प्रसारित करके अपनी निष्पक्षता सिद्ध करनी चाहिये। यह सब घटना गौरव ने अपने मोबाईल पर देखने के उपरांत गरिमा से कहाँ कि मुनि श्री ने डैमेज कंट्रोल बहुत बखूबी कर लिया है। दिगंबर जैन साधु इतने ही महान होते हैं क्योंकि वे अपनी समता को मात्र सिद्धांतों में बखान नहीं करते है किंतु वे अपनी समता को कार्यरूप परिणीत भी करते हैं।

गौरव गरिमा से बोला अब तो बहुत देर हो गयी चलो हम विश्राम करें जो होगा कल देखेंगे। गरिमा बोली जो देखेंगे नहीं मैं तो कल चाहे कुछ भी हो जाये भाग्योदय तो जाऊंगी तब गौरव ने कहा मुझे मालूम है कि एक नारी के जिद् किस तरह और कहां तक जा सकती है। गरिमा तुम भी नारी हो कोमल हृदया हो मेरे में तुम्हें रोकने की कोई ताकत

नहीं क्योंकि सात वचनों में यह एक वचन यह कि धर्म कार्य के लिये हम रोकेंगे नहीं। गरिमा ने कहाँ क्या मैं अकेली ही जाऊंगी ? तब गौरव ने कहाँ गरिमा तुम मुझे छोड़कर जिसको चाहो उसको साथ में ले जाओ मुझे कोई आपत्ती नहीं है। मै तेरे जाने के स्वतंत्रता में बाधक नहीं बनूंगा और मेरा गरिमा तुमसे भी कहना है कि मेरे न जाने की स्वतंत्रता में प्लीज तुम भी बाधक मत बनो। गरिमा ने गौरव की बात सुनकर तपाक से कहा। श्रीमान जी मैंने और आपने जन्म जन्म तक साथ निभाने का वचन दिया है। उस वचन को अगर मैं या आप कोई भी भंग करते हैं तो यह गलत ही होगा। छोटी छोटी बातों में शादी का समय याद कराना लड़ाई बढाने के सिवा कुछ नहीं। गरिमा ने कहा लड़ाई करने से प्यार भी बढ़ता है। गौरव ने कहा ना ऐसे प्यार बढ़ाने का हमारा कोई विचार है और ऐसे प्यार बढ़ाने को मुझे माफ करें तो अच्छा है। गरिमा ने कहा प्यार और झगडे की दोनों की बात भी छोड़ो। धर्म की बातें करो जिससे फायदा है। संतों के संगति में बैठेंगे तो मन के गिला शिकवे अपने आप दूर हो जायेगें। गरिमा तुम सब बोल रही हो, धर्म में बहुत शक्ति है और जिस अहिंसा धर्म की तुम बात कर रही हो उस अहिंसा धर्म में तो बैर क्रोध, लडाई झगड़े की बात ही नहीं है। दो दिन की जिंदगी में तकरार कैसी ? आँख बंद हुई तो बहार कैसी ? क्षमा करो आगे बढ़ो यही सच्चा धर्म है और इसी आधार पर मुनि श्री ने दोनों पक्षों को क्षमा की प्रेरणा देकर सागर की इतिहास का अनुठा प्रंसग बना दिया है।

गरिमा ने गौरव से कहा अगर सचमुच में मुनि श्री की पहल से तुम इतने प्रभावित हो तो कल फिर भाग्योदय चलने का वायदा करो। गौरन ने कहा देखो ऐसा है मैं फटे में टाँग फसाना मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम आहार देने जाओगी और किसी ने तुम्हें रोका तो तुम रूकोगी नहीं तो रोकने वाले अपनी नाक का सवाल बना लेंगे और जब ये नाक का सवाल बन जाता है तो आदमी कुछ भी करने को तैयार हो जाता है आगे पीछे कुछ नहीं सोचता है। बिना चाहे ही झगड़ा बढ़ जाता है। दोनों पक्षों में से कोई भी जीते कोई भी हारे यह बात महत्व की नहीं होती। पर झगड़ा करने से दोनों पक्षों की इज्जत जरूर खराब होती है। संतो का समागम करना आज के जमाने में सबसे बड़ी बात है। पर जहाँ झगड़े टंटे की बात हो वहाँ से दूर रहना ही मैं अच्छा समझता हूँ। अब तो ऐसे लगता है संतों की अच्छी अच्छी बात सुनी जायें और आगे बढ़ा जाये। गरिमा ने कहा मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ। साधु संतों को आहारदान देना भी दान शासन को आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा साधन है, इससे धर्म संस्कृति की रक्षा संभव है। गरिमा तेरी हर बात मेरे समझ में आ गयी पर मैं क्या करूँ मुझे साधु संतों की भीड़ पर भरोसा कम ही रह गया है और भीतर ही भीतर आहार देने जैसी बातों से डर रहा हूँ। गरिमा ने कहाँ आप डरो नहीं अपने साथ सब अच्छा होगा। गौरव ने कहा चलेंगे जो होगा वो देखेंगे।

हमारे गौरव

अमर शहीद अण्णा पत्रावले

अध्यापको नौकरियाँ छोड़ दो और देश को कराने के लिये क्रांति कार्यो में शामिल हो जाओ। अंग्रेजों यहाँ से भागो ऐसी घोषणा कर अंग्रेजों को भगा दो। अपनी तिमाही परीक्षा की कॉपी में यह लिखकर 1942 के आंदोलन में कुद पड़ने वाले 17 वर्षीय नौजवान अमर शहीद अण्णा पत्रावले या अण्णासाहेब पत्रावले को आज हम भले ही भूल गये हों, पर भारतीय स्वातंत्र्य समर के इतिहास में उनका नाम सदा अमर रहेगा।

1942 का भारत छोडो आंदोलन में लाखों लोग सम्मिलित हुये। इसी आंदोलन में भारत माँ पर अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले। अण्णा साहब भी शहीद हो गये थे।

अण्णा पत्रावले का जन्म 22 नवम्बर 1525 को हतकणगले जिला सांगली महाराष्ट्र में एक जैन परिवार में हुआ। इनकी माँ का नाम इंदिरा तथा बाबा का नाम एगमंद्राप्पा चंकाप था। वे गांधी जी के विचारों से प्रभावित थे।

1942 में सांगली स्टेशन चौक की सभा पर सरकार ने गोलीबारी की। अनेक लोग घायल हुये उनकी सुश्रुषा की जिम्मेदारी अण्णा ने ली इसलिये पुलिस ने उन्हें और उनके परिवार को बहुत परेशान किया इसी दौरान क्रांतिकारियों के संपर्क में आये सांगली बुरुड गल्लों में क्रांतिकारियों की मीटिंग में वह उपस्थित थे तब पुलिस ने सबको पकड़ लिया। वहाँ सबको बहुत कष्ट दिया गया।

सोलह क्रांतिकारियो के साथ वह वहाँ से भाग गये पर पुलिस की गोली लगने से वह शहीद हो गये। ऐसे महान आत्मा को शत् शत् नमन।

कविता

तिमिर हर दृष्टि

संस्कार फीचर्स

तिमिर हर हो जिसकी दृष्टि, स्वतः उसे दिखती है सृष्टि
पर प्रकाश नहीं उसे चाहिये, इन्द्रिय का नहीं योग चाहिये
अतीन्द्रिय है ज्ञान जिन्हें भी, प्रत्यक्ष ज्ञान का योग जिन्हें भी
वे सर्वज्ञ जिनेश्वर होते, ज्ञानावरण करम को खोते
कर्म घातिया दोष मेंटकर, आवरणों का जाल नष्टकर
केवलज्ञानी बन जाते हैं, अतीन्द्रिय सुख वे पाते हैं
मोक्षमार्ग के नेता बनते, परमातम पद अनुपम धरते

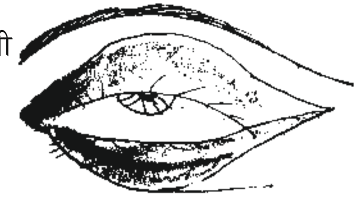

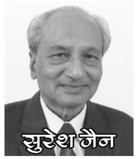

क्रमांक-45 वरिष्ठ नागरिक

सुधारें अपना सामाजिक शिष्टाचार

किसी सामाजिक बैठक में किसी से भी बातचीत करते समय धैर्य रखें तथा स्वयं का परिचय देने के बाद ही बातचीत शुरु करें ! अपना परिचय पूर्ण विश्वास से दें ! कुछ मामलों में परिचय में शारीरिक संपर्क भी होता है, जैसे हाथ मिलाना या फिर गले मिलना ! ध्यान रहे ! परिचय चंद शब्दों में ही हो, अपने परिचय को लम्बा न खीचें, नही परिचय देते समय कोई स्पीच करनी शुरु कर दें।

सकारात्मक रहें-

- बातचीत की शुरुआत सकारात्मक होनी चाहिये। सामने वाले व्यक्ति के बारे में सच्ची प्रशंसा शुरुआत का अच्छा ढंग हो सकती है।
- बातचीत की सच्ची कला इस बात में होती है कि इसे कैसे कायम रखा जायें
- ऐसी बातचीत के लिये सबसे बढ़िया विषय है, मौसम, खबरें, खेल, किताबें, थिएटर, फिल्में भोजन आदि।
- बातचीत में सैक्स व धर्म का जिक्र न करें।
- आप बातचीत खत्म करने वाले हैं, इस बात का संकेत देने का सबसे विनम्र तरीका है आंखे फेरकर दूसरी दिशा में देखने लगें।

फोन पर बात करना

- सामाजिक बैठक के दौरान फोन कॉल करने या सुनने के लिये एकांत का सहारा लें ।
- फोन पर बात करते समय अपना लहजा सम्मानपूर्ण रखें। भोजन करते समय बात न करें। कॉलर से कहें कि कुछ देर बाद बात करें या कहें कि आप खुद उसे कुछ देर बाद कॉल करेंगे।

यदि सामाजिक बैठकों के बाद जलपान अथवा भोजन परोसा जाये

- खाते समय आवाज न करें
- टेबल पर कोहनियां न रखें।
- मुंह बंद रखकर भोजन चबायें
- अपने बर्तनों से आवाज न करें।
- अपनी प्लेट में भोजन का ढेर न लगा लें।

- अन्यों के भोजन समाप्ति तक प्रतीक्षा करें।
- यदि कुछ नीचे गिर जाये तो इसे छोड़ दे, यदि आपको इसके बदले में कुछ और चाहिये तो पहले क्षमा मांगे।
- न डकार लें और न ही दांतों को खुरचें।
- अपने मोबाईल को साइलैंट मोड पर रखें।

धैर्य रखें

- आप बुजुर्ग हो गये हैं, इसलिये आपको पहले सुना जायेगा, आपकी बात की ही वेल्यु होगी, यह वहम अपने दिल से निकाल दें। समाज में बुजुर्गों को अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का इच्छा अथवा अनिच्छा से सामना करना पड़ता है। धैर्यवान और विवेक शील व्यक्ति न तो अनुकूल परिस्थितियों मे हर्षोन्मत होते हैं और न ही प्रतिकूल परिस्थितियों से सिर धुनते हैं। अनुकूलता और प्रतिकूलता की अवधि निश्चित नहीं होती है। हानि-लाभ, सुख-दुःख, यश-अपयश आदि सम और विषम परिस्थितियों के प्रति एक जैसे व्यवहार के लिये मन को अशांत, उद्विग्न और असंतुलित होने से बचायें रखा जाये। साथ ही इस तरह के हर समय मन को शांत और शीतल रखा जाये। इसके लिये बुजुर्ग व्यक्ति को धैर्य का आश्रय लेना होगा, क्योंकि प्रतिकूल परिस्थितियों में अधीर होने की अपेक्षा धैर्यवान होना कहीं सरल है।

आज के समय में किसी भी समाज में अथवा सामाजिक बैठकों में कुर्सी का बोल बाला है। हर आदमी अपनी अपनी चलानी जानता है। बुजुर्गों से राय जरूर ली जाती हैं, आपकी राय मानी जाये या मानी जाये उस समय बुजुर्ग व्यक्ति अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने मन को चट्टान की तरह दृढ़ बनायें रखें और विचार करें कि परिस्थितियां केवल क्षणिक हैं जो स्थिर पानी में कंकड फेंकने से उत्पन्न लहरों के समान ही होती हैं। इन लहरों के लिये चट्टान अटल-अडिग होती है उसी प्रकार व्यक्ति की धीरता और साहसिकता भी अडिग होती है। संकट में, कष्ट में, दुःख में अथवा भय में जो बुजुग व्यक्ति धैर्य पूर्वक विचार करते हुये ठहरों और देखों सिद्धांत के आधार पर धैर्यपूवक प्रतीक्षा करते हैं वह सदैव सफल होते हैं।

धैर्यवान बुजुर्ग व्यक्ति सभी संकल्पित कार्यों को बिना किसी कठिनाइ के पूर्ण कर लेते हैं । व्यग्रता या अधीरता के साथ कार्य करने से व्यक्ति कभी सफल नहीं होता। अपमान से आहत व्यक्ति उन्माद और प्रतिशोधजन्य व्यवहार को भी अपने धैर्य के ईश्वरीय गुण के प्रभाव से मृदुल बना लेता है। वस्तुतः धैर्य सुखी सामाजिक जीवन का मूलमंत्र है।

फेरम फास, स्वस्थ्य चलें हर सांस

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

इसे फैरम फास्फोरिकम, फैरौसी-फैरिक फास्फेट, फास्फेट ऑफ आयरन के नाम भी जानते हैं , जिसका रासायनिक तत्व सूत्र (Fe3(P04) है जिसे सोडियम फास्फेट और सल्फेट ऑफ आयरन को विशेष अनुपात में मिलाकर बनाया जाता है। इसका शरीर में प्रमुख 12 तत्वों में विशेष स्थान है। संभवतः यही वह फास्फोरस है जो नीला आभा लिये होता है। यह शरीर में हिमोग्लोबिन रक्त लाल कर्णकाओं में पाया जाता है, मानव शरीर का प्रत्येक कोष (Cells) एल्बूमेन से बनता है जो लोहे के आधार पर है इलिये प्रत्येक कोषाणु में लोह कण मौजूद रहते हैं। शरीर मे लोहे की मात्रा शरीर के कुल वजन का करीब 0.004% यानी औसतन स्वस्थ वयस्क व्यक्ति में करीब लोहे की मात्रा 3 ग्राम तक पाई जाती है

कार्य- 1. फेरमफा मे लोहे (Fe) आयरन का धर्म है ऑक्सीजन को आकर्षण करना है जो श्वास से खीचे ऑक्सीजन को ग्रहण करके शरीर के सभी कोषाणु में ऑक्सीजन ले जाते हैं व इसके दहन प्रक्रिया से प्राप्त ऊर्जा से शरीर की समत क्रियायें सुचारू रूप से चलती हैं।

2. यह रक्त संचार को सुचारू बनाती है व होमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ाती है।

3. यह शरीर में एंटीऑक्सीडेन्ट (Antiosident) के रूप में कार्य करता है स्वतंत्र रेडीकल को निष्क्रिय करके कोशिकाओं को नुकसानी से बचाती है

कमी-

1. इसका शरीर में सामंजस्य गड़बड़ाजाने या नष्ट हो जाने से पेशीतन्तु ढीले पड़ जाते हैं जिससे रक्तनलियों में इसकी श्रृंखला नष्ट होने पर धमनी और शिराओं के फैल जाने से सभी स्थानों में खून का दबाब बढ़ जाने से धमनी और शिराओं से खून निकलने लगता है। जिसके शरीर में खून की कमी एनीमिया रोग, हरित रोग, ल्यूकिमिया होना, जिससे दर्द सूजन नाड़ी की गति तेज चलना, दस्त लगना, कब्ज होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

2. शरीर में आयरन की कमी से सांस चढ़ने के लक्षण, थकावट, चिडचिडापन, कमजोरी, अनिद्रा, आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं।

उपयोग-

1. जुकाम, सूजन, हर प्रकार प्रदाह की प्रथम अवस्था, रक्त स्राव जो रक्त संचित

होने के कारण होवें व ज्वर, ब्रांकईटि दस्तों की प्रथम अवस्था में लाभदायक है।

2. शरीर में हिमोग्लोबिन बढ़ाने, खून में ब्लड प्लेटलेटस की संख्या बढ़ाने।

3. मस्तिष्क में रक्त संचार बढ़ने के कारण अनिद्रा रोग।

4. बच्चों में दांत निकलने के दिनों में दर्द, बुखार, अकड़न, मसूडे, लाल गर्म सूजे हो व दांत का दर्द जो गर्मी से बढ़े किंतु ठंडे पेय से घटे उपयोगी है।

5. बच्चों में दुर्बलता व भूख लगना, शारीरिक विकास, मंद बुद्धि हो उपयोगी है।

6. पसलियों में सुई चुभने जैसे दर्द की प्रमुख दवा है।

7. आँखे लाल जलन होने के साथ ही ऐसा प्रतीत होवे कि आँख के भीतर रेत के कण चुभ रहे हैं। रक्त स्राव शरीर के किसी अंग में हो पर रक्त की रंगत चमकदार लाल हो

8. खाँसी आने पर पेशाब निकल जाना, अनजाने में पेशाब निकलना।

9. किसी यांत्रिक चोट लगने, ताजे घाव, मोच आने पर सूजन होने पर लाभदायक है।

10. बूढ़े व्यक्तियों के गठियावात रोग जब पेशियों कड़ी व कमजोर हो जिनमें दर्द व ऐठन हो।

11. सांस लेने में कष्ट, फेफड़ों में खून का अधिक संचित होना, कंठ नली प्रदाह, खूनी बबासीर में उपयोगी है।

विशेष-

1. रोग कोई भी होवे जब उसकी प्राथमिक अवस्था गर्मी हो।

2. इसके सभी दर्द हरकते जोश से ओर गर्मी से बढ़ते हैं ठंडक और चलह कदमी से घटते हैं। बूढ़ों व्यक्तियों में शानदार कार्य करती है।

3. रक्त संचार चालू न होवे तो उसकी उत्तम औषधि है।

उपलब्धता-

प्राकृतिक रूप में हरी सब्जियों पालक, मैंथी, चुकन्दर, खजूर, गुड, फलों में अनार, अंगूर व विटामिन सी युक्त फलों नींबू, संतरा आदि व भोजन घर में लोहे की कड़ाई तवा के उपयोग प्राप्त होता है।

फेरम फास में उपलब्ध आयरन फेफड़ों के माध्यम से ऑक्सीजन प्राप्त करने जिसकी दहन प्रक्रिया से प्राप्त ऊर्जा से शरीर की समस्त क्रियायें स्वाभाविक रूप से चलती हुई स्वस्थ सांसों की सरगम जीवन में संपूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास करके सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त होती है।

हास्य तरंग

1. सेठ जीवनलाल अपनी बच्ची के लिये लड़का देखने गये, वे लड़के से पूंछते है क्या आप बीडी, सिगरेट पीते हो ? लड़का जी नहीं, पुनः पान, तम्बाकू, गुटका आदि खाते हो ? लड़का जी नहीं । जीवन लाल जी ने मन में सोचते हैं कितना होनहार लड़का है । अंत में पूंछते है आप में कोइ बुरी आदत हे ? लड़का जी हाँ, झूठ बोलने की।

2. एक रोगी ने डॉक्टर को रिपोर्ट दिखाई डॉक्टर आपको गले का कैंसर है । रोग क्या ठीक होने की संभावना है, डॉ. हाँ एक मात्र उपाय है आप अधिक से पिक्चर थ्येटर में देखने जाइये । रोगी क्या पिक्चर देखने से कैंसर में राहत केसे मिलेगी । डॉ आपको अधिक सिगरेट पीने से कैंसर हुआ है, थ्येटर में सिगरेट पीना मना है।

3. एक मोटी लड़की ऐयर हॉस्टेस बनने के लिये ट्रेनिंग पर गई वहाँ पर संचालक ने पूछा आपको इसकी प्रेरणा किससे मिली। लड़की मेरी स्कूल टीचर से कैसे ? वह कहती थी तुम इस धरती पर अभिशाप हो।

4. बडकुल जी सुबह-सुबह रसोई घर में जाकर शक्कर का डिब्बा खोलकर देखते और वापिस बंद कर देते थे । एक दिन उनकी पत्नी देखते हुये पूंछा यह क्या करते हो ? बड़कुल जी डॉक्टर ने मुझे सुगर चैक करने का कहा था।

5. भावित दादा जी को लेकर डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने जांच करने एक कागज पर लिखते हुये इनके दो टेस्ट होंगे। भावित जोर-जोर से हंसने लगा बोला मेरे दादा जी तो अनपढ़ हैं।

संकलनः जिनेन्द्रकुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

रागी केक

सामग्री- 1 कटोरी रागी आटा
1 बड़ी चम्मच मैदा
डेढ़ चम्मच खारक (छुहारा पाउडर)
1/2 कटोरी मलाई
1/2 कटोरी मिल्क पाउडर
1/4 चम्मच ईनो या नींबू रस
1/2 चम्मच बेकिंग पाउडर या बेकिंग सोड़ा
1/2 कटोरी दूध
1 कटोरी चीनी पिसी (शक्कर)
यदि खारक नहीं डाले तो चीनी पाउडर डाल लीजिये।

विधिः सबसे पहले पिसी चीनी (शक्कर) व मलाई मिक्सी में चलाये फिर रागी आटा, मैदा खारक डालकर मिक्सी में चला ले फिर मिल्क पाउडर व दूध भी डालकर चला लें।

यदि मिश्रण पतला लगे तो रागी आटा और मिला लें। अब इसमें बेकिंग पाउडर डालें फिर मिक्सी में चला लें फिर इनो भी डाले व चला लें व फिर मोल्ड में घी लगाकर कुकर माईक्रोवेव में रखें फिर 180 डिग्री पर ओ.टी.जी में बेक करें घर पर बना इनो।

इनो=सोड़ा + नींबू रस

रागी बहुत फायदा कराती हड्डियों को मजबूती में जिन्हें घुटने में दर्द रहता है वे रागी का प्रयोग करें यह चौके में भी चलती है।

बाल कहानी

हत्यारा बेटा

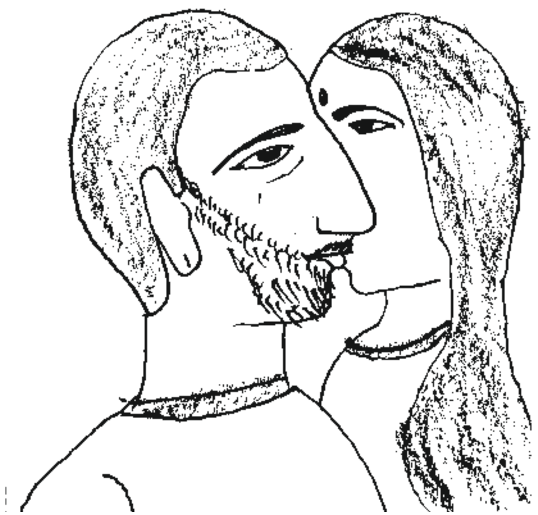

अकोला नगर में एक शांत वातावरण में पुराने शहर थाने के पास मानव शोरुम के पीछे बहुत सारे खाली खेत पड़े थे। झाड़ू बनाने वाले अनेक परिवार अपने तम्बू लगाकर यही पर रहते थे। खेत के मालिक को भी अच्छा लगता था वह प्रायः अपनी पड़ती भूमि हर वर्ष लोगों को छोड़ देता था बस इनको एक ही शुल्क देय रहता था कि शांति पूर्वक रहकर दिन में एक बार प्रार्थना करें । दाता हम सबको क्रूरता अज्ञान से दूर रखें।

एक दिन की बात राघव शरण देशमुख ने दिखा कि उसके खेत की तरफ पुलिस की गाड़ियाँ दौड़ रही हैं उसे आशंका हुई कि निश्चित तौर पर उसके खेत में रहने वाले झोपड़ पट्टी वालों ने कुछ न कुछ अपराध अवश्य किया है राघव शरण अपनी खेत की ओर चल पड़ा।

राघव शरण को जानकारी मिली एक सुनील शिकारी की हत्या हो चुकी परंतु यह किसी और ने नहीं उसके बेटे ने ही की है। राघव की जिज्ञासा और बढ़ गई वह झोपड़ी के पास गया, कान लगाकर सुनने लगा और अपने खेत में जाकर खड़ा हो गया ताकी कोई उसे भगा न के।

थानेदार सेवा नंद बानखेडे सुनील के बेटे से पूँछ रहे थे कि तूँने अपने बाप को क्यों मारा सुनील शिकारी बेटे की आँखों से पछतावा के आँसू बह रहे थे वह रोते रोते कह रहा था मेरे पापा आये दिन मेरी मम्मी को बड़ी बेरहमी से शराब पीकर पीटते थे आज रात को भी वो मम्मी को पीटते जा रहे थे मैं बचाने गया तो मुझे भी पीटने लगे आखिर मेरे सहने ही हद खत्म हो गई और मैंने झाड़ू बनाने वाला चाकू उठाया और प्रहार कर दिया मेरे पापा की मौत का जिम्मेदार मैं नहीं वो खुद है। आप मुझे नहीं पापा को ही दंड दीजिये वो क्यों मम्मी को मारते थे ?

संस्कार गीत

हिन्दी देश अखंड बनाये

नीले गगन के तले स्वभाव का प्यार पले
हिन्दी भाषा में सबकी समृद्धि
सबका विकास चले

1

सबके संपर्क की भाषा
हिन्दी देश अखंड बनाये
भारत की सब भाषाओं का
हिन्दी ही तो विकल्प बना
हिन्दी तो प्यारी मधुरिम है
इससे सब कष्ट टले।

2

करूणा प्रेम सिखाये हिन्दी
भारत की ममतामय भाषा
स्नेहित समता की भाषा
समरसता की है परिभाषा
जाति पंथ का तमस मिटे
सब जब हिन्दी की दीप जले

बाल कविता

सफल सफल कह जाती है

चींटी कतार में चलती है
धीरे-धीरे शैल शिखर पर चढ़ती है
पुनः पुनः वह गिरती है
ऊपर चढ़ती इठलाती है
वह चुनाव करती राशन का
पाठ पढ़ाती अनुशासन का
सतत साधना
त्याग वासना
थक न जाती सफलता पाती
हर मनुआ को समझाती
जीवन गीत सुनाती
चींटी बोल न पाती
फिर भी सफल सफल कह जाती

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

भिण्ड- मुनि श्री विनयसागर महाराज के करकमलों से श्रीमति हंसा देवी जैन भिण्ड की आर्यिका दीक्षा 14 नवम्बर 2024 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर भिण्ड में सम्पन्न हुई। जिनका नाम आर्यिका विनेयश्री माताजी रखा गया।

बंडा- आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के करकमलों से साधिका जंयती जैन सागर की क्षुल्लिका दीक्षा 21 नवम्बर 2024 को हुई । जिनका नाम क्षुल्लिका यत्नश्री माताजी रखा गया।

समाधिमरण

भिण्ड- आर्यिका श्री विनेयश्री माताजी का समाधिमरण मुनि श्री विनयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 19 नवम्बर 2024 को हुआ।

बंडा- आर्यिका श्री सूत्रमति माताजी ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका यत्नश्री माता जी का समाधिमरण 24 नवम्बर 2024 को मंगलधाम बंडा में हुआ।

जबलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य क्षुल्लक श्री शिवसागर महाराज जी का समाधिमरण आर्यिका श्री आदर्शमति माताजी ससंघ सान्निध्य में 24 नवम्बर 2024 को दयोदय तीर्थ प्रतिभास्थली जबलपुर में हुआ।

पंचबालयति मंदिर का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न

इंदौर- मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागरजी महाराज, मुनि श्री संधानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर का वार्षिक महामस्तकाभिषेक 17 नवम्बर 2024 को हुआ । जिसमें प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य मूलनायक पार्श्वनाथ प्रतिमा - श्री आजाद जी मोदी इंदौर तथा अशोक कुमार जी पाटनी (आर.के. मार्बल किशनगढ़), महावीर भगवान- विजय जी सरावगी कोलकाता, आदिनाथ भगवान- अतुल शीतल लदानी, वासुपूज्य भगवान- जगदीश शरद जी जैन दिल्ली, मल्लिनाथ भगवान- विवेक राजेन्द्र जैन इंदौर, नेमिनाथ भगवान-मोहित कैलाश जी श्रीमति निर्मला, प्रियंका, मंत्र कत्थावाला परिवार कानपुर, श्री प्रेमचंद पद्मकुमार पारस, ब्र.सुनीता दीदी बांसा, हर्ष तृप्ति जैन इंदौर, नरेन्द्र धमेन्द्र जैन जयपुर, भरत जैन शांतिनिकेतन, डॉ. सनतकुमार जैन इंदौर, मोहनलाल अभिषेक अजमेरा, श्री प्रेमचंद संध्या उपकार एजेंसी सागर, श्री पारस भारती, सौरभ स्वाती, दिव्या निव्या कोटा परिवार, सुदेश जी जैन इंदौर, अनुराग श्वेता राजेश अर्चना ग्वालियर, अभिषेक पूनम वैशाखिय गढ़कोटा, प्रदीप गंगवाल धूलियान, आस्तिक्य अर्चना बैनाड़ा कोलकाता, विजय पुष्पा देवी गंगवाल गुवाहटी, प्रेमचंद प्रेमी परिवार कटनी, सुभाष सुनील राजीव डालटनगंज, अखिलेश अपूर्व सतभैया, वीरेन्द्र जैन टीकमगढ़, संजय बजाज टीकमगढ़, संदीप जैन सतना, कमल चौधरी राहतगढ़, नीलकुमार जैन राहतगढ़, कोमलचंद जैन देवास, अमित जैन सुखलिया इंदौर, सुरेश जैन मारौरा इंदौर, अभय आकाश जैन, नरेन्द्र सेठ इंदौर, ज्ञानचंद जैन कुटांश, जितेन्द्र जैन, विवेक जैन, राजकुमार जैन पुष्प, हेमंत सेठी, आशीष जैन बीना, विनोद जैन पथरिया, गौरव सचि जैन, सनत जैन सुखलिया, प्रदीप यश संयम अनुरागनगर इंदौर आदि ने सौभाग्य प्राप्त किया। **छत्र चढ़ाने का सौभाग्य-** राजकुमार जैन जड़ी बूटी शिवपुरी।

आगामी पंचकल्याणक

इंदौर- मुनि श्री प्रमाणसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में गोकुलनगर मंदिर का पंचकल्याणक वैभवनगर मंदिर प्रांगण के सामने दिनांक 02 दिसम्बर से 07 दिसम्बर 2024 तक ब्र. अभय भैया, ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

देपालपुर- मुनि श्री विनम्रसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर देपालपुर का पंचकल्याणक दिनांक 02 दिसम्बर से 06 दिसम्बर 2024 तक ब्र. अशोक भैया, ब्र. तरूण भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

इंदौर में हुआ ऐतिहासिक रथावर्तन महामहोत्सव

इंदौर- संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य गुणायतन भावना योग शंका समाधान के प्रणेता मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज, मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज, मुनि श्री संधानसागर महाराज के सान्निध्य में 15 नवम्बर को प्रातः काल 108 रथ जिसमें स्वर्ण चांदी तथा काष्ट गजराज पर मंगल विहार हुआ, मंगल गीतों की धुन पर श्रद्धालु प्रभु और गुरु की भक्ती में लीन होकर नृत्य कर रहे थे। प्रवक्ता अविनाश जैन ने बताया इस अवसर पर पर्यावरण एवं लोक संस्कृति की कई झांकियां निकाली गई एवं अखाडा भी शामिल हुये, उन्होंने अपने पेट पर भारी भरकम पत्थर रखकर उसको धन की चोट देकर टुकड़े-टुकड़े करना शामिल है। विभिन्न झांकियों में लोकनृत्य का प्रदर्शन करते हुये तथा चारों ओर मंगलमय नजारा था जिसमें भारत ही नहीं बल्कि अमेरिका, न्यूजीलैंड से आयें श्रद्धालु भी नजर आये, लगभग साठ हजार श्रद्धालुओं ने यह अद्‌भुत नजारा अपनी आंखां से देखा। उपरोक्त कार्यक्रम से हुआ रथावर्तन महोत्सव की शुरुआत मध्यप्रदेश शासन के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल एवं जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट तथा जैन समाज के भामाशाह अशोक पाटनी एवं श्रीमति सुशीला पाटनी के नेतृत्व में प्रातः 8 बजे रथयात्रा की शुरुआत विजयनगर चौराहा पर बने सिद्धचक्र महामंडल विधान के लिये बने आचार्य विद्यासागर सभा मंडल से शुरुआत हुई। इस अवसर पर संघस्थ क्षुल्लक आदरसागर, क्षुल्लक समादरसागर, क्षुल्लक चिद्रूपसागर, क्षुल्लक स्वरूपसागर, क्षुल्लक सुभगसागर महाराज के साथ इंदौर शहर के सभी गणमान्य नागरिक चल रहे थे। इस समारोह में आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के संघस्थ सभी मुनिराजों के चित्र के साथ एक वृहद झांकी आचार्य श्री के जीवन चरित्र तथा भावना योग पर निकली गयी जिसमें मुनि श्री स्वास्थ्य लाभ एवं सम्बोधित नारे लिखे थे। जुलूस का संचालन बाल ब्र. अशोक भैया जी एवं बाल ब्र. अभय भैया, ब्र. सुरेश मलेया, ब्र. जिनेश मलैया के निर्देशन में 108 रथों का चल समारोह प्रातः 8 बजे से शुरु हुआ जो कि एल.आई. जी चौराहा, पाटनीपुरा, भमोरी चौराहा दोपहर एक बजे कार्यक्रम स्थल पहुंचा इस अवसर पर मुनि श्री ने सम्बोधित करते हुये प्रशासनिक अधिकारियों को आशीर्वाद देते हुये कहा कि आज के दिन जो कुछ भी घटित हुआ है वह महज एकघटना नहीं, अपितु स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने वाला इतिहास है मुनि श्री ने कहा कि हर वर्ष विधान होते है विधान के बाद रथयात्रायें होती है, लेकिन 108 मंडलीय सिद्धचक्र विधान होना पूरे भारत के इतिहास में श्री सम्मेद शिखर के बाद यह दूसरी बार इंदौर में 108 रथयात्रा से

हुआ जिसने अपना नाम वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज करा दिया यह आप सभी का पुण्य योग था आज की रथयात्रा ही नहीं थी बल्कि चारों और आनंद और उल्लास से भरा जन सेलाब था मुनि श्री नेकहा कि ये जो अंदर की भावना है यह बहुत दुर्लभ होती है। मुनि श्री ने कहा आप लोगों ने वह सब कुछ प्रदर्शित किया आपकी भावना आपकी प्रभावना का प्रमाण बन गयी उन्होंने कहा कि इंदौर के इस चातुर्मास में परम पूज्य गुरुदेव के प्रत्यक्ष आशीर्वाद के अभाव में भी उनका आशीर्वाद बना रहा उन्होंने रहस्य की बात बताते हुये कहा कि रात स्वप्न में पूज्य गुरुदेव आये उन्होंने कहा 108 रथों की यात्रा निकाल दी कितनी बजे है तो मैंने कहा 8 बजे और मेरी नींद खुल गयी, फिर में नहीं सोया रथयात्रा में विलम्ब हो रहा था लेकिन आठ बजे ही उपरोक्त रथयात्रा का शुभारंभ हो गया मुनि श्री ने कहा कि मैं यह महसुस करता हूं कि पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद हर पल मेरे साथ है उनका आशीर्वाद ही हमारी शक्ति हे, यह जो कुछ भी है निमित्त हम लोग मै काम सब गुरुदेव का ही है। मुनि श्री ने कहा कि इंदौर में जिस दिन मेरा प्रवेश हुआ था आप लोगों का उत्साह देखकर मेरे मन में 108 मंडलीय विधान के साथ 108 रथयात्रा निकालने का आया था जो मैंने सोचा उसे विजयनगर की जैन समाज और उसमें सभी वर्ग के लोग सम्मिलित हुये वह अविस्तरणीय है। उन्होंने धर्मप्रभावना समिति के कार्याध्यक्ष धर्मेन्द्र जैन सिनकेम, रमेश निर्माणा, और उनकी टीम के सभी सदस्य तथा सभी नवरत्न तथा विजयनगर के सभी कार्यकत्ताओं ने अपना धंध छोड़ा और पूरी टीम लगी रही उन्होंने विजयनगर की संपूर्ण युवा टीम को दस में से दस नम्बर देते हुये आशीर्वाद दिया इसके साथ ही अशोक भैया, अभय भैया, ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया, अमित जी तथा उनके पुण्य से सभी अनुकूल संयोग अपने आप जुढ़ते जाते है, उन्होंने देश के भामाशाह अशोक पाटनी एवं श्रीमति सुशीला पाटनी आर.के. मार्बल का विशेष उल्लेख करते हुये कहा कि उनके विशेष पुण्ये से यह निमित्त बना। मुनि श्री ने अशोक डोसी, नवीन आनंद गोधा, योगेन्द्र सेठी, अमरीस सेठी, मुकेश पाटोदी, विजय, संजय पाटोदी, रमेश निर्वाणा, दिलीप बोवरा, सुरेन्द्र प्रीती तथा मुख्य पुर्ण्याजक भरत कुसुम मोदी, आकाश कोयला, सुनील बिलाला, महामंत्री हर्ष जैन तथा एस.के. जैन दिलीप गोधा के साथ आयोजन में भोजन व्यवस्था के लिये श्रीमति माया गजेन्द्र जैन गिन्नी ग्रुप परिवार जो कि इस आयोजन में रीड़ की हड्डी बनकर सभी के लिये सुस्वादु भोजन एवं त्यागीव्रती प्रतिमाधारियों को शुद्ध भोजन कराने में ब्र. जिनेश मलैया एवं ब्र. सुरेश मलैया ने जो मेहनत की वह सराहनीय है। प्रचार प्रसार के लिये प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं राहुल जैन स्पोट्स को भी विशेष आशीर्वाद प्रदान करते हुये कहा कि मंच से भी का नाम तो उल्लेखित नहीं कर पा रहा हूं सभी कार्यकताओं के सहयोग से ही कार्य संपन्न हुआ है जिसमें जैनेश झांझरी, पवन सिंघई और उनकी टीम ने दिन रात मेहनत की उन्होंने धर्म प्रभावना के सभी पदाधिकारियों के साथ ब्र. अशोक भैया, ब्र. अभय भैया, ब्र. जिनेश मलैया एंव ब्र. सुरेश मलैया सहित सभी नौ रत्न परिवार कोआशीर्वाद प्रदान किया। तथा मोहता भवन के शरद डोसी एवं विनय छजलानी का उल्लेख करते हुये चल समारोह में भाग लेने वाले मुंगावली और गंजबासौदा के दिव्यघोष बालों को आशीर्वाद दिया।

वर्ग पहेली 302

1	2		3	4	5	■	6	
7		■	8			■		■
	■	9			■	10		11
12			■	13	14		■	
	■		■	■		■	15	
	■	16		■		18	■	
19		■	20				21	■
■	22			■	■	23		24
25		■	■	26		■	■	

ऊपर से नीचे

1. पुरुषार्थ सिद्धयुपारा के रचनाकार -5
2. वोट, राय, विचार -2
3. चूड़ी, बंगड़ी -3
4. टालना -4
5. थोड़ा, अल्य -2
6. ऐनक -3
9. अधिक माल -4
11. रसीला रस युक्त -4
14. तोडना -4
18. केवल व्यंजन -3
21. लीन, तल्लीन गगन -2
24. आर्द्र गीला -2

बाये से दाये

1. देव, मृत्यु से ऊपर मरण सहित -6
6. एक दलहन -2
7. मरा हुआ, बेजान -2
8. ऊषण -3
9. मोती, माला का मोती -3
10. रोगी -3
12. अस्थिर -3
13. नृत्य करना -3
15 खोवा खोया दूध सेवन -2
16. सताया हुआ -2
17. कार्य काज -2
19. परम्परा रिवाज -2
20. लेखक, कवि, सृजन हारा -5
22. मिथ्या काल्पनिक -3
23. जवाहर -3
25. शिर, वाण -2
26. कहानी, कथावस्तु -2

वर्ग पहेली 301 का हल

1 सा	2 मा	यि	3 क	■	4 प्र	5 ति	मा	6 न
7 र	मा	■	ल	■	8 मा	र	■	प
ना	■	9 पा	म	10 र	■	11 ना	12 गि	न
13 थ	14 क	ना	■	15 क्ष	त	■	र	■
■	रू	■	16 आ	■	17 प	सी	ना	■
18 मा	ण	■	19 न	20 दी	■	■	21 र	22 ति
त	■	23 लं	द	न	■	24 वि	■	ल
25 म	26 ह	क	■	■	27 व	स	■	वा
■	ज	■	28 का	यो	त्स	र्ग	■	रा

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

ये अवसर बार बार नहीं आये

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/11/2024, पोस्टिंग दिनांक : 03/12/2024